हमारी शाश्वत सम्पदा

संकलन कर्त्ता :
राजन स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
जिला सहारनपुर, (उ. प्र.)

प्रकाशकः
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
सरसावा, जिला सहारनपुर (उ. प्र.)

प्रकाशकः
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट
सरसावा, जिला-सहारनपुर (उ. प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 91-7088120381
वेबसाइट : www.spjin.org
ई-मेल : shriprannathgyanpeeth@gmail.com

सर्वाधिकार :

© प्रकाशकाधीनः इस पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री सत्वाधिकारी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा के पास सुरक्षित है। अतः किसी भी व्यक्ति व संस्था के द्वारा इस पुस्तक का नाम, फोटो, कवर डिजाइन एवं प्रकाशित सामग्री इत्यादि को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र या वेबसाइट में प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक की अनुमति लेना अनिवार्य है, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे-खर्चे के जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमे के लिए न्याय क्षेत्र सरसावा, जिला-सहारनपुर ही होगा।

द्वितीय संस्करण
बुद्धजी शाका ३४७
विक्रम सम्वत् २०८२
ईस्वी सन् २०२५
ISBN : 978-93-85094-13-2

न्यौछावर : रु. 50.00

मुद्रक :
ज्ञानपीठ मुद्रणालय
सरसावा, जिला-सहारनपुर

प्राक्कथन

श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी ने नख से शिख तक अपनी शोभा का वर्णन किया है जो सागर एवं शृंगार ग्रन्थ में दृष्टिगोचर होता है। इस सम्बन्ध में बीतक में कहा गया है कि-

जो प्रदक्षिना निजधाम की, सातों सरूप श्री राज ।
सो सारे परना मिने, वास्ते सैंयन के सुख काज ।।

प्र. १७ चौ. ६६

सातों सरूप स्याम के, बरनन करत श्री राज।
साथ को सुख उपजावहीं, पूरें मनोरथ काज।।

प्र. ६६ चौ. ६४

उपरोक्त कथन में सातों स्वरूप श्री राज का तात्पर्य कुछ सुन्दरसाथ पन्ना जी में अवतरित तारतम वाणी के सात ग्रन्थों खुलासा, खिल्वत, परिक्रमा, सागर, शृंगार, सिन्धी तथा मारिफत सागर से लेते हैं तो कुछ परमधाम की लीला के पांच शृंगारों (तीसरी भूमिका के दो शृंगार, वनों में जाते समय राज जी का एक शृंगार तथा वन के दो शृंगार) तथा रास के दो शृंगारों को मानते हैं। वास्तविकता यह है कि रास ग्रन्थ का अवतरण हब्शे में हुआ है, जबकि यहां पन्ना जी में अवतरित शृंगारों का वर्णन किया गया है।

यथार्थता यह है कि सागर ग्रन्थ में श्री राज जी का शृंगार तीन बार एवं शृंगार ग्रन्थ में चार बार बृहद रूप से वर्णित किया गया है। इसे ही सात शृंगार या

सात स्वरूप मानना उचित है। सात ग्रन्थों को यहां सात स्वरूप इसलिये नहीं माना जा सकता क्योंकि उपरोक्त चौपाई के प्रथम चरण में ही परमधाम की सात परिक्रमाओं का वर्णन करने वाले परिक्रमा ग्रन्थ का वर्णन हो चुका है।

प्रश्न यह होता है कि जब चितवनी विरह प्रेम के ही धरातल पर होती है तो सागर-शृंगार की इतनी चौपाईयों के चिन्तन-मनन की क्या आवश्यक्ता है ? क्या श्री राज श्यामा जी की मूर्ति या चित्र बनाकर चितवनी नहीं की जा सकती है? इसके समाधान में यही कहा जा सकता है कि चित्र या मूर्ति जड़ है। जड़ को आधार मानकर धारणा-ध्यान करने से जड़त्व का दोष भी अन्तःकरण में आने लगता है। युगल स्वरूप का यथार्थ चित्रांकन इस सृष्टि में कोई कर भी नहीं सकता है, जबकि सागर शृंगार में वही वर्णन है जो स्वयं श्री महामति जी ने देखा है।

वस्तुतः प्रेम का आधार ज्ञान ही है। सागर शृंगार की चौपाइयों का माधूर्य भाव में चिन्तन करने से चित्त में विरह की रस धारा बहने लगती है जो प्रेम रूपी महल का निर्माण करती है और हमारी आत्मिक दृष्टि को युगल स्वरूप के समक्ष उपस्थित कर देती है। मुझे आशा है कि सुन्दरसाथ को यह (हमारी शाश्वत सम्पदा) नामक ग्रन्थ अत्यन्त प्रिय लगेगा और उनकी आत्म-जागृति में सहायक बनेगा। इसमें होने वाली त्रुटियों के सुधार के लिये आपके विचारों का स्वागत है।

आपकी चरण रज

राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
	प्राक्कथन	i - ii
प्रथम रश्मि	मूल मिलावा	01—05
द्वितीय रश्मि	श्री राज जी का श्रृंगार	05—153
तृतीय रश्मि	श्री श्यामा जी का श्रृंगार	153—180
चतुर्थ रश्मि	सुन्दरसाथ का श्रृंगार	180—185

मूल मिलावा

चौसठ थंभ चौक खिलवत का बेवरा

इन विध साथ जी जागिए, बताए देऊं रे जीवन।
स्याम स्यामा जी साथ जी, जित बैठे चौक वतन।।१।।
याद करो सोई साइत, जो हँसने मांग्या खेल।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि।।२।।
सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहें।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जाहें।।३।।
चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत।।४।।
कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गिरदवाए।
सोले थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए।।५।।
चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर।।६।।
कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग।।७।।
चारों तरफों एक एक रंग के, तैसी तरफों चार।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार।।८।।
ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर।।९।।
और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पांने हीरे पुखराज।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज।।१०।।

नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल।
और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल।।११।।
चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन।
पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन।।१२।।
और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग।
द्वार नीलवी संग दोए पाच के, करें साम सामी जंग।।१३।।
दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास।
दोए थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास।।१४।।
थंभ बारे भए इन बिध, साम सामी एक एक।
यों बारे बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक।।१५।।
हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल।।१६।।
पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए।
गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए।।१७।।
ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के।
सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए ।।१८।।
चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच।
जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच।।१९।।
माहें बिरिख बेली कई कटाव, कई फूल पात नकस।
देख जवेर जुगत कई चंद्रवा, जानों के अति सरस।।२०।।

इन चौक बिछाई गिलम, ता पर सिघांसन।
चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन।।२१।।

झलकत सुन्दर गिलम, अति सोभित सिंघासन।
यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन।।२२।।

लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर।।२३।।

जेता एक कठेड़ा, सब में सुन्दर तकिए।
तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले।।२४।।

जिन बिध बैठियां बीच में, याही बिध गिरदवाए।
तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैठा साथ भराए।।२५।।

किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत।
कई तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत।।२६।।

पाइए इन तखत के, उत्तम रंग कंचन।
छे डांडे छे पाइयों पर, अति सुन्दर सिंघासन।।२७।।

दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसो दिस देखत ए।।२८।।

एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग।
यों दसो दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कई तरंग।।२९।।

तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन।
कई रंग बिरिख बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन।।३०।।

चारों किनारे चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार।
चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार।।३१।।
तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए।
माहें कई दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए।।३२।।
दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन।।३३।।
नकस फूल कटाव कई, कई तेज जोत जुगत।
देख देख के देखिए, नैनां क्योंए न होए तृपित।।३४।।
चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार।
बैठे सुन्दर सरूप दोऊ, देख देख जाऊं बलिहार।।३५।।
जरे जिमी की रोसनीं, भराए रही आसमान।
क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान।।३६।।
बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम।
ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना भाजे न हाम।।३७।।
ए जवेर कई भांत के, सोभित भांत रूप कई।
सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मई।।३८।।
गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर।
जोतें जोत सब मिल रहीं, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर।।३९।।
ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत।
पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत।।४०।।

जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए परआतम।
सो परआतम लेय के, विलसिए संग खसम।।४१।।

महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन।।४२।।

।।सागर।।प्रकरण।।७।।

श्री राज जी का पहला शृंगार

मंगलाचरण

चौदे तबक की दुनी में, किन कह्या न बका हरफ।
ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ।।१।।

आया इलम लदुन्नी, कहे साहेदी एक खुदाए।
तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राह।।२।।

अर्स देख्या रूहअल्ला, हक सूरत किसोर सुन्दर।
कही वाहेदत की मारफत, जो अर्स के अंदर।।३।।

नदी ताल बाग जानवर, जो अर्स की हकीकत।
रूहअल्ला दई साहेदी, हक हादी खास उमत।।४।।

महंमद पोहोंचे अर्स में, देखी हक सूरत।
हौज जोए बाग जानवर, कही सब हक मारफत।।५।।

देखी अमरद जुल्फें हक की, और बोहोत करी मजकूर।
कही बातें जाहेर बातून, पोहोंच के हक हजूर।।६।।

ए साहेदी आई इन विध की, कहे खुदा एक महंमद बरहक।
सो क्यों सुध परे बिना इलम, हक इलमें करी बेसक।।७।।

महंमद की फुरमान में, कही तीन सूरत।
बसरी मलकी और हकी, एक अव्वल दो आखिरत।।८।।
मेरी रूह जो बरनन करत है, करी हादियों मेहेरबानगी।
ना तो अव्वल से आज लगे, कहूं जाहेर न बका की।।९।।
आतम चाहे बरनन करूं, जुगल किसोर विध दोए।
ए दोए बरनन कैसे करूं, दोऊ एक कहावत सोए।।१०।।
बरनन होए इलम से, जो इलम हक का होए।
एक देखाऊं बातून में, जाहेर बरनवूं दोए।।११।।
रूह चाहे बका सरूप की, बरनन करूं जिमी इन।
इलम लदुन्नी खुदाई से, जो कबहूं न सुनिया किन।।१२।।
जिन जानो ए बरनन, करत आदमी का।
ए सबथें न्यारा सुभान जो, अर्स अजीम में बका।।१३।।
मलकूत ऊपर हवा सुन्य, तिन पर नूर अछर।
नूर पार नूरतजल्ला, ए जो अछरातीत सब पर।।१४।।
अर्स ठौर हमेसगी, हमेसा हक सूरत।
सिनगार सबे हमेसगी, ना चल विचल इत।।१५।।
जित जैसा रूह चाहत, तहां तैसा बनत सिनगार।
नित नए वाहेदत में, सोभा अखंड अपार।।१६।।
या वस्तर या भूखन, जो दिल रूह चहे।
सो उन अंगों सोभा लिए, जानों आगूं ही बन रहे।।१७।।

हाथ न लगे भूखन को, जो दीजे हाथ ऊपर।
चित्त चाह्या अंगों सब लग रह्या, जुदा होए न अग्या बिगर।।१८।।
जिन खिन चित्त जो चाहे, सो आगूंही बनि आवे।
इन विध सिनगार सब समें, नित नए रूप देखावे।।१९।।
ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या नित सुख।
वाहेदत हमेसा ए सुख, हक सींचल सनमुख।।२०।।
सब्द न लगे सोभा असलें, पर रूह मेरी सेवा चाहे।
तो बरनन करूं इनका, जानों रूहों भी दिल समाए।।२१।।
इन जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आसमान।
तो ए बरनन क्यों होवहीं, अर्स साहेब सुभान।।२२।।
आसिक क्यों बरनन करे, इस्क लिए रेहेमान।
एक अंग को देखन लगी, सो तित हीं भई गलतान।।२३।।
सोभा जुगल किसोर की, सुख सागर चौथा ए।
आवें लेहेरें नेहेरें अति बड़ी, झीलें अरवाहें जो इन के।।२४।।
खूबी जुगल किसोर की, प्रेम वचन इन रीत।
आसिक इन मासूक की, भर भर प्याले पीत।।२५।।
मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन।।२६।।

।।मंगलाचरण सम्पूर्ण।।

सिर पाग बांधी चतुराई सों, हकें पेच हाथ में ले।
भाव दिल में लेय के, सुख क्यों कहूं विध ए।।२७।।

केस चुए में भीगल, लिए जुगतें पेच फिराए।
पेच दिए ता पर बहु बिध,बांधी सारंगी बनाए।।२८।।
उज्जल हस्त कमल सों, कोमल नरम अतंत।
बांधी हिरदे विचार के, दोऊ क्यों कर करूं सिफत।।२९।।
रंग लाल जरी माहें बेल कई, कई फूल पात नकस कटाव।
कई रंग नंग जवेर झलकें, बलि जाऊं बांधी जिन भाव।।३०।।
आसिक एही विचार हीं, तब याही में रहे लपटाए।
अंदर हक पेचन से, क्यों कर निकस्यो जाए।।३१।।
ऊपर कलंगी लटकत, झलकत है अति जोत।
याको नूर आसमान में, भराए रह्यो उद्दोत।।३२।।
ऊपर सारंगी दुगदुगी, करे जो झलझलाट।
ए देखे अंतर आंखें खुलें, ए जो हैड़े के कपाट।।३३।।
इन परन का नूर क्यों कहूं, देख देख रूह अटकत।
और न्यारी जोत नंगन की, ए जो दुगदुगी लटकत।।३४।।
ऊपर दुगदुगी जो मानिक, आसमान भर्‌यो ताके तेज।
आसमान जिमी के बीच में, जोत पोहोंची रेजा रेज।।३५।।
सुन्दरता इन मुख की, सब्द न पोहोंचे कोए।
नूर को नूर जो नूर है, किन मुख कहूं रंग सोए।।३६।।
ए उज्जल रंग अंग अर्स का, माहें गेहेरी लालक ले।
मुख चौक छबि इनकी, किन विध कहूं मैं ए।।३७।।
तिलक सोभित रंग कंचन, असल बन्यो सुन्दर।
चारों तरफों करकरी, सोहे लाल बिंदी अंदर।।३८।।

लवने केस कानों पर, तिन केसों का जो नूर।
आसमान जिमी के बीच में, जोत भराए रही जहूर।।३९।।
नैनन की मैं क्यों कहूं, नूर रंग भरे तारे।
सेत माहें लालक लिए, सोहें टेढ़े अनियारे।।४०।।
रूह के नैनों से देखिए, अति मीठे लगें प्यारे।
कई रंग रस छबि इनमें, निमख न होंए न्यारे।।४१।।
नासिका की मैं क्यों कहूं, कोई इनका निमूना नाहें।
जिन देख्या सो जानहीं, वाके चुभ रहे हैड़े माहें।।४२।।
कानन मोती लटकत, उज्जल जोत प्रकास।
बीच लाल की लालक, जोत मावत नहीं आकास।।४३।।
लाल बाला अर्स धात का, करड़े बने चार चार।
इन मोती और लाल की, रूह देख देख होए करार।।४४।।
गौर रंग अति गालों के, माहें गेहेरी लालक लिए।
दोऊ भ्रकुटी बीच नासिका, ऊपर सुन्दर तिलक दिए।।४५।।
गौर हरवटी अति सुन्दर, बीच लांक ऊपर अधूर।
बल बल जाऊं मीठे मुख की, मिल दोऊ करें मजकूर।।४६।।
कटि कोमल अति पेट पांसली, पीठ गौर सोभे सरस।
गरदन केस पेच पाग के, छबि क्यों कहूं अंग अर्स।।४७।।
कोमल अंग कंठ हैड़ा, खभे मछे गौर लाल।
कोनी कांड़े कोमल देखत, आसिक बदलत हाल।।४८।।
लीकें सोभित हथेलियां, रंग उज्जल कहूं के गुलाल।
रूह थें पलक न छूटहीं, अंग कोमल नूरजमाल।।४९।।

नरम अंगुरियां पतली, पोहोंचे सलूकी जुदे भाए।
रंग सलूकी पोहोंचे हथेलियां, किन मुख कहूं चित्त ल्याए।।५०।।
नैन श्रवन मुख नासिका, मुख छबि अति सुन्दर।
ए देखत हीं आसिक अंगों, चुभ रहत हैड़े अन्दर।।५१।।
बीड़ी सोभित मुख मोरत, लेत तम्बोल रंग लाल।
ए बरनन रूह तोलों करे, जोलों लगे न हैड़े भाल।।५२।।
जानों के जोवन नौतन, अजूं चढ़ता है रंग रस।
ऐसा कायम हमेसा, इन विध अंग अर्स।।५३।।
सेत जामा अंग लग रह्या, मिहीं चूड़ी बनी दोऊ बांहें।
दावन क्यों बरनन करूँ, इन अंग की जुबांए।।५४।।
बेल नकस दोऊ बगलों, चीन झलकत मोहोरी जड़ाव।
नकस बेल गिरबान बन्ध, पीछे अतंत बन्यो कटाव।।५५।।
ए देत देखाई रंग जवेर, नकस कटाव बेली जर।
लगत नाहीं हाथ को, रंग नंग धागा बराबर।।५६।।
इजार रंग जो केसरी, झांई जामें में लेत।
दावन जड़ाव अति जगमगे, रंग सोभे केसरी पर सेत।।५७।।
नीले पीले के बीच में, झांई लेत रंग दोए।
सो पटुका कमर बन्या, रंग कह्या सुन्दरबाई सोए।।५८।।
जरी पटुका कटाव कई, कई नकस बेल किनार।
पाच पांने हीरे पोखरे, कई रंग नंग झलकार।।५९।।

मनी मानिक लसनियां नीलवी, अतंत उद्दोतकार।
फूल पात बेल नकस, ए जोत न छेड़ों सुमार।।६०।।
हेम वस्तर नंग नूर में, नरमाई अतंत।
जो कोई चीज अर्स की, खुसबोए अति बेहेकत।।६१।।
एक हार मोती एक नीलवी, और हार हीरों का एक।
एक हार लाल मानिक का, एक लसनियां विसेक।।६२।।
इन हारों बीच दुगदुगी, नूर नंग कह्यो न जाए।
जोत अम्बर लों उठ के, अवकास रह्यो भराए।।६३।।
इन पांचों हार के फुमक, तिन फुमक पांचों रंग।
रंग पांचों सोभें जुदे जुदे, जरी सोभित धागे संग।।६४।।
ए पांच रंग एक कंचन, ताके बने जो बाजूबन्ध।
इन जुबां सोभा क्यों कहूं, झूलें फुन्दन भली सनन्ध।।६५।।
दोए पोहोंची दोए जिनस की, मनी मानिक मोती पुखराज।
हेम हीरा लसनियां नीलवी, दोऊ पोहोंची रही बिराज।।६६।।
एक पोहोंची एक दुगदुगी, और सात सात दूजी को।
सो सातों जिनस जुदी जुदी, आवत ना अकल मों।।६७।।
पाच पांने हीरे पोखरे, मुंदरी अंगुरियों सात।
नीलवी मोती लसनियां, साज सोभित हेम धात।।६८।।
एक अंगूठी आठमी, सो सोभा लेत सब पर।
सो ए एक मानिक की, जुड़ बैठी अंगूठे भर।।६९।।
इन मुख नख जोत क्यों कहूं, कई कोट सूरज ढ़ंपाए।
ए सुखकारी तेज सीतल, ए सिफत न कही जाए।।७०।।

अजब रंग आसमानी का, जुड़ी जामें मिहीं चादर।
ए भूखन बेल कटाव जामें, सब आवत माहें नजर।।७१।।
लाल नीले पीले रंग कई, सोभें छेड़ों बीच किनार।
जामें चादर मिल रही, लेहेरी आवत किरनें अपार।।७२।।
गेहेरा रंग जो केसरी, लेत दावन झांईं इजार।
सेत केसर दोऊ रंग के, सोभा होत सुखकार।।७३।।
नेफे मोहोरी चीन के, बेल बनी मोती नंग।
लाल नीली पीली चूनियां, सोभित कंचन संग।।७४।।
कई रंग इजार बंध में, अनेक विध के नंग।
सारी उमर बरनन करूं, तो होए ना सुपन के अंग।।७५।।
एक एक नंग नाम लेत हों, रंग रंग में रंग अनेक।
एकै इजार बंध में, क्यों कहूं रंग नंग विवेक।।७६।।
याकी रंग सलूकी क्यों कहूं, बका धनी के चरन।
लांक तली रंग सोभित, ग्रहूं रूह के अन्तस्करन।।७७।।
देखूं रंग चरन अंगूठे, और सलूकी कहूं क्यों कर।
नख उतरते छोटे छोटे, सोभा लेत अंगुरियों पर।।७८।।
पोहोंचे सोभित रंग सुन्दर, टांकन घूंटी काड़े कोमल।
लांक एड़ी पीड़ी पकड़, बेर बेर जाऊँ बल बल।।७९।।
ए चरन नख अति सोभित, जानो तेज पुंज भर पूर।
लेहेरें लगें आकास को, नेहेरें चलत तेज नूर।।८०।।

अब जो भूखन चरन के, हेम झांझर घूंघर कड़ी।
अनेक रंग नंग झलकें, जानों के जवेर जड़ी।।८१।।

जड़ी न घड़ी समारी किने, ए तो कायम सदा असल।
नई न पुरानी अर्स में, इत होत न चल विचल।।८२।।

जरी जवेर रंग रेसम, नकस बेल फूल पात।
ए सिनगार सोभा कही इन जुबां, पर सब्द न इत समात।।८३।।

अब जो वस्तर भूखन की, क्यों कर होए बरनन।
इत अकल ना पोहोंचत, और ठौर नहीं बोलन।।८४।।

ए भूखन अर्स जवेर के, हक सूरत के अंग।
कहा कहे रूह इन जुबां, रंग रेसम सोब्रन नंग।।८५।।

आसिक इन चरन की, अर्स मेला रूहन।
ए खिलवत खाना गैब का, जिन इत किया रोसन।।८६।।

चरन तली ना छूटत, रंग लाल लिए उज्जल।
ताए क्यों कहिए आसिक, जो इतथें जाए चल।।८७।।

पांउं तले पड़ी रहे, याको इतहीं खान पान।
एही दीदार दोस्ती कायम, जो होए अरवा अर्स सुभान।।८८।।

इतहीं जगात इत जारत, इत बंदगी परहेजी जान।
और आसिक न रखे या बिना, इतहीं होवे कुरबान।।८९।।

खाना दीदार इनका, या सों जीवे लेवे स्वांस।
दोस्ती इन सरूप की, तिनसे मिटत प्यास।।९०।।

हक खिलवत जाहेर करी, इत सिजदा हैयात।
इतहीं इमाम इमामत, इतहीं महंमद सिफात।।९१।।
कोई खाली न गया इन खिलवतें, कछू लिया हक का भेद।
सो कहूं जाए ना सके, पड्या इस्क के कैद।।९२।।
आसिक पकड़े जो दावन, तो छूटे नहीं क्योंए कर।
देखत देखत चीन लगे, तोलों जात निकस उमर।।९३।।
बोहोत अटकाव है आसिक, कछू सेवा भी किया चाहे।
ए तो बरनन सिनगार, सेवा उमंग रही भराए।।९४।।
जो कदी कमर अटकी, तो आसिक न छोड़े ए।
ए लांक पटुका छोड़ के, जाए न सके उर ले।।९५।।
जो दिल हक का देखिए, तो पूरा इस्क का पुन्ज।
क्यों छोड़े आसिक इनको, हक दिल इस्क गन्ज।।९६।।
मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स हक का घर।
इस्क प्याले हक फूल के, देत भर भर अपनी नजर।।९७।।
इस्क सुराही लेय के, आए बैठे दिल पर।
इस्क प्याले आसिकों, हक देत आप भर भर।।९८।।
जो कदी आवे मस्ती में ,तो एक प्याला देवे गिराए।
सराब तहूरा ऐसा चढ़े, दिल तबहीं देवे फिराए।।९९।।
जाए हक सराब पिलावत, आस बांधत है सोए ।
वाको अर्स सराब की, आवत है खुसबोए।।१००।।

आई जो कदी खुसबोए, ए जो अर्स की सराब।
इन मद के चढ़ाव से, देवे तबहीं उड़ाए ख्वाब।।१०१।।
आज लगे ढांप्या रह्या, हकें मोहोर करी तिन पर।
सो अछूत प्याला फूल का, हकें खोल दिया मेहेर कर।।१०२।।
एकों पिया एक पीवत हैं, एक प्याले पीवेंगें।
खोल्या दरवाजा अर्स का, वास्ते अर्स अरवाहों के।।१०३।।
अंग आसिक उपले देख के, इतहीं रहे ललचाए।
जो कदी पैठे गंज में, तो क्यों कर निकस्यो जाए।।१०४।।
हस्त कमल को देखिए, तो अति खूबी कोमल।
ए छोड़ आगे जाए ना सके, जो कोई आसिक दिल।।१०५।।
नख अंगुरियां निरखते, मुंदरियां अति झलकत।
ए रंग रेखा क्यों छूटहीं, आसिक चित्त गलित।।१०६।।
पोहोंची बांहें बाजू बन्ध, दोऊ निरखत नीके कर।
एक नंग और फुन्दन, चुभ रहत हैड़े अन्दर।।१०७।।
हिरदे कमल अति कोमल, देख इन सरूप के अंग।
जो आसिक कहावे आपको, क्यों छोड़े इनको संग।।१०८।।
हार कण्ठ गिरवान जो, अति सुन्दर सुखदाए।
लाल लटकत मोती पर, ए सोभा छोड़ी न जाए।।१०९।।
मुख सरूप अति सुन्दर, क्यों कहूं सोभा मुख इन।
एक अंग जो निरखिए, तो तितहीं थके बरनन।।११०।।

छबि सरूप मुख छोड़ के, देख सकों न लांक अधूर।
ए लाल की लालक क्यों कहूं, जो अमृत अर्स मधूर।।१११।।

ए मुख अधुर लांक छोड़ के, क्यों कर दन्त लग जाए।
देत नाम निमूना इत का, सों इन सरूपें क्यों सोभाए।।११२।।

सो दन्त अधुर लांक छोड़ के, जाए न सकों लग गाल।
सो गाल लाल मुख छोड़ के, आगूं नजर न सके चाल।।११३।।

मुख नासिका देखत आसिक, सुन्दर सोभा अतंत।
नेत्र बीच निलाट तिलक, आसिक याही सों जीवत।।११४।।

भृकुटी तिलक सोभा छोड़ के, जाए न सकों लग कान।
सो कान कोमल अति सुन्दर, सुख पाइए हिरदे आन।।११५।।

और भी खूबी कानन की, दिल दरदां देवे भान।
जाको केहे लेऊं पड़ उत्तर, कोई न सुख इन समान।।११६।।

कहें सुनें बातें करें, ए जो अर्स मेहेरबान।
सो खिलवत सुख छोड़ के, लग जवाए नहीं नैन बान।।११७।।

ए नैन बान सुभान के, क्यों छोड़ें रूह मोमिन।
ए नैन रस छोड़ आगे चले, रूहें नाम धरत हैं तिन।।११८।।

नैन अनियारे अति तीखे, पल देत तारे चंचल।
स्याम उज्जल लालक लिए, ए क्यों कहूं सुपन अकल।।११९।।

नैन रसीले रंग भरे, खैंचत बंके मरोर।
सो आसिक रूह जाए ना सके, जाए लगें बान ए जोर।।१२०।।

ए नेत्र रसीले निरखते, उपजत है सुख चैन।
ए क्यों न्यारे होए नैन रूह के, सामी छोड़ नैन की सैन।।१२१।।

जो चल जाए सारी उमर, तो क्यों छोड़िए सुख नैनन।
इन सुख से क्यों अघाइए, आसिक अंतस्करन।।१२२।।
निलवट सुन्दर सुभान के, सोभा मीठी मुखारबिंद।
ए छबि कही न जाए एक अंग की, ए तो सोभा सागर खावंद।।१२३।।
हँसत सोभित हरवटी, दंत अधुर मुख लाल।
आसिक से क्यों छूटहीं, सब अंग रंग रसाल।।१२४।।
अति कोमल अंग किसोर, कायम अंग उनमद।
ए छबि अंग अर्स के, पोहोंचत नहीं सब्द।।१२५।।
मुख नासिका नेत्र भौंह, तिलक निलाट और कान।
हाथ पांउ अंग हैड़ा, सब मुसकत केहेत मुख बान।।१२६।।
जो आसिक इन मासूक की, सो अटक रहे एकै अंग।
और अंग लग जाए ना सके, अंग एकै लग जाए रंग।।१२७।।
देख बीड़ी मुख मोरत, रूह अंग उपजत सुख।
पीऊं सराब लेऊं मस्ती, ज्यों बल बल जाऊं इन मुख।।१२८।।
ए छबि छोड़ के आसिक, क्यों कर आगे जाए।
मोहि लेत मुख मासूक, सो चित्त रह्यो चुभाए।।१२९।।
नैनों निलवट निरखते, देखी बनी सारंगी पाग।
दुगदुगी कलंगी ए जोत, छबि रूह हिरदे रही लाग।।१३०।।
होए बरनन चतुराई से, आसिक धरे ताको नाम।
एक अंग छोड़ जाए और लगे, सो नाहीं आसिक को काम।।१३१।।

आसिक कहिए हक की, जो लग रहे एकै ठौर।
आसिक ऐसी चाहिए, जो ले न सके अंग और।।१३२।।
इन आसिक की नजरों, दिल एकै हुआ सागर।
सो झीले याही सुख में, निकसे नहीं क्योंए कर।।१३३।।
तो सोभा सारे सरूप की, क्यों कहे जुबां इन।
लेहेरें नेहेरें पोहोंचे आकास लों, और ठौर न कोई मोमिन।।१३४।।
आसिक न लेवे दानाई, पर ए दानाई हक।
इस्क आपे पीवहीं, और पिलावें बेसक।।१३५।।
ए चतुराई हक की, और हकै का इलम।
ए सुख इन सरूप के, देवें एही खसम।।१३६।।
इन सरूप को बरनन, सो याही की चतुराए।
याको आसिक जानिए, जो इतहीं रहे लपटाए।।१३७।।
ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम।
जोलों इस्क न आवहीं, तोलों इलम एही विश्राम।।१३८।।
इस्क को सुख और है, और सुख इलम।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम।।१३९।।
ए इलम ए इस्क, दोऊ इन हक को चाहें।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवे सिर चढ़ाए।।१४०।।
महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अर्स।
सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस।।१४१।।
।।सागर।।प्रकरण।।५।।चौपाई।।३४९।।

श्री राज जी का दूसरा श्रृंगार

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रूच रूच के, एही तुमारा विश्राम।।१।।

अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात।
निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात।।२।।

इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम।
अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम।।३।।

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम।
रूहें त्रिखावंती हक की, सो चाहें धनी प्रेम काम।।४।।

फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम।
दई तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अव्वल से धाम।।५।।

खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम।।६।।

तुम लिख्या फुरमान में, हक अर्स मोमिन कलूब।
सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब।।७।।

और भी लिख्या समनून को, हक दोस्ती में पातसाह।
सो कौल पालो अपना, मैं देखूं मेहेबूब की राह।।८।।

कहूं अबलों जाहेर ना हुई, अर्स बका हक सूरत।
हिरदे आओ तो कहूं, इत बैठो बीच तखत।।९।।

ए वजूद न खूबी ख्वाब की, ए कदम हक बका के।
ढूंढ़्या बुजरकों इप्तदाए से, इत जाहेर न हुए कबूं ए।।१०।।

उज्जल लाल तली पांउं की, रंग रस भरे कदम।
छब सलूकी अंग अर्स की, रूह से छूटे क्यों दम।।११।।
मिहीं लीकें चरनों तली, रूह के हिरदे से छूटत नाहें।
ए निसबत भई अर्स की, लिखी रूह के ताले माहें।।१२।।
नख अंगूठे अंगुरियां, सिफत न पोहोंचे सुकन।
आसमान जिमी के बीच में, रूह याही में देखे रोसन।।१३।।
एक छोटे नख की रोसनी, ऐसा तिन का नूर।
आसमान जिमी के बीच में, जिमी जरे जरा भई सब सूर।।१४।।
देख सलूकी अंगूठों, और अंगुरियों सलूकी।
उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छबि फबी।।१५।।
लाल नरम उज्जल अंगुरी, फना टांकन घूंटी काड़ों ।
आठों जाम रस बका, पोहोंचे रूह के तालू मों ।।१६।।
लाल लांकें लाल एड़ियां, पांउं तली अति उज्जल ।
ए पांउं बसत जिन हैयड़े, सोई आसिक दिल ।।१७।।
बसत सुखाले नरमाई में, आसमान लग रोसन ।
ए पांउं प्यारे मासूक के, जो कोई आसिक मोमिन ।।१८।।
आसिक बसत अर्स तले, या बसे अर्स के माहें।
ए खुसबोए मस्ती अर्स की, निसदिन पीवे ताहें।।१९।।
सुन्दर सलूकी छब सोभित, रंग रस प्यार भरे।
सोई मोमिन अर्स दिल, जित इन हकें कदम धरे।।२०।।

ए सुख देत अर्स के, कोई नाहीं निमूना इन।
ए सुख जानें अरवा अर्स की, निसबत हकसों जिन।।२१।।

रूहें इस्क मांगें धनी पे, पकड़ धनी के कदम।
जो छोड़े इन कदम को, सो क्यों कहिए आसिक खसम।।२२।।

नरम तली लाल उज्जल, आसिक एही जीवन।
धनी जिन छोड़ाइयो कदम, जाहेर या बातन।।२३।।

प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर।
सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिल को अर्स कर।।२४।।

तखत धरया हकें दिल में, राखूं दिल के बीच नैनन।
तिन नैनों बीच नैना रूह के, राखों तिन नैनों बीच तारन।।२५।।

तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पुतलियों के नैनों माहें।
राखूं तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूं जाने न देऊँ क्याहें।।२६।।

जाथें चरन जुदे होंए, सो आसिक खोले क्यों नैन।
ए नैन कायम नूरजमाल के, जासों आसिक पावे सुख चैन।।२७।।

एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए।
ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए।।२८।।

एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए।
मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोड़े पकड़े अंग सोए।।२९।।

जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए।
एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए।।३०।।

दूजा अंग आया नहीं, तो लों एक अंग क्यों छूटत।
यों और अंग ले ना सके, एकै अंग में गलित।।३१।।

जो आसिक भूखन पकड़े, सो भी छूटे न आसिक सें।
देख भूखन हक अंग के, आसिक सुख पावे यामें।।३२।।

हकके अंग के सुख जो, सो जड़ भी छोड़े नाहें।
तो क्यों छोड़े अरवा अर्स की, हक अंग आया हिरदे माहें।।३३।।

हेम नंग सब चेतन, अर्स जिमी जड़ ना कोए।
दिल चाह्या होत सब चीज का, चीज एकै से सब होए।।३४।।

सब रंग गुन एक चीज में, नरम जोत खुसबोए।
सब गुन रखे हक वास्ते, सुख लेवें हक का सोए।।३५।।

आसिक एक अंग अटके, तिनको एह कारन।
दोऊ अंग मासूक के, किन छोड़े लेवें किन।।३६।।

नूर बिना अंग कोई ना देख्या, और सब अंगों बरसत नूर।
अंबर में न समाए सके, इन अंगों का जहूर।।३७।।

एक अंग मासूक के कई रंग, तिन रंग रंग कई तरंग।
एक लेहेर पोहोंचावे उमर लग, यों छूटे न आसिक से अंग।।३८।।

जो कदी मेहेर करें मासूक, तो दूजा अंग देवें दिल आन।
तो सुख लेवे सब अंग को, जो सब सुख देवे सुभान।।३९।।

जो कदी आसिक खोले नैन को, पेहेले हाथों पकड़े दोऊ पाए।
ए नैन अंग नूरजमाल के, सो इन आसिक से क्यों जाए।।४० ।।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस।
नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूं नंग जरी अर्स।।४१ ।।

काड़ों पर पीड़ी तले, मिहीं चूड़ी सोभित इजार।
जोत करे माहें दावन, झांई उठे झलकार।।४२ ।।

इजार बंध नंग कई रंग, और कई कांगरी बेल माहें।
फूल पात कई नकस, सब्द न पोहोंचे ताहें।।४३ ।।

कई रंग नंग माहें रेसम, रंग नंग धागा न सूझत।
हाथ को कछू लगे नहीं, नरम जोत अतंत।।४४ ।।

अतंत नाड़ी फुन्दन, जोत को नाहीं पार।
एही जानों भूल अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार।।४५ ।।

रंग नीला कह्या इजार का, कई रंग नंग इन मों।
तेज जोत जो झलकत, और कछू लगे ना हाथ कों।।४६ ।।

सब अंग पीछे कहूंगी, पेहेले कहूं पाग बांधी जे।
सिफत न पोहोचें अंग को, तो भी कह्या चाहे रूह ए।।४७ ।।

हाथों पाग बांधी तो कहिए, जो हुकमें न होवे ए।
कई कोट पाग बनें पल में, जिन समें दिल चाहे जे।।४८ ।।

पर हकें बांधी पाग रुच के, नरम हाथों पेच फिराए।
आसिक देखे बांधते, अतंत रूह सुख पाए।।४९।।

इन विध सब सिनगार, कहियत इन जुबांए।
तो कह्या फना का सब्द, बका को पोहोंचत नाहें।।५०।।

चुप किए भी ना बने, जाको ए ताम दिया खसम।
ताथें ज्यों त्यों कह्या चाहिए, सो कहावत हक हुकम।।५१।।

बांधी पाग समार के, हाथ नरम उज्जल लाल।
इन पाग की सोभा क्यों कहूं, मेरा साहेब नूरजमाल।।५२।।

लाल पाग बांधी लटकती, कछू ए छबि कही न जाए।
पेच दिए कई विध के, हिरदे सों चित्त ल्याए।।५३।।

पाग बनाई कोई भांत की, बीच में कटाव फूल।
बीच बेली बीच कांगरी, रूह देख देख होए सनकूल।।५४।।

जो आधा फूल एक पेच में, आवे दूजे पेच का मिल।
यों बनी बेल फूल पाग की, देख देख जाऊं बल बल।।५५।।

कई रंग नंग फूल पात में, ए जिनस न आवे जुबांए।
न आवे मुख केहेनी मिने, जो रूह देखे हिरदे माहें।।५६।।

पाग बांधी कोई तरह की, जो तरह हक दिल में ल्याए।
बल बल जाऊं मैं तिन पर, जिन दिल पेच फिराए।।५७।।

पाग ऊपर जो दुगदुगी, ए जो बनी सब पर।
जोत हीरा पोहोंचे आकास लों, पीछे पाच रहे क्यों कर।।५८।।

मानिक तहां मिलत है, पोहोंचत तित पुखराज।
नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचों रहे बिराज।।५९।।

कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पाग में पेच बनाए।
गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए।।६०।।

कण्ठ खभे दोऊ बांहोंड़ी, पेट पांसली बीच हैड़ा।
रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भस्या।।६१।।

मच्छे दोऊ बाजूअ के, सलूकी अति सोभित।
रंग छब कोमल दिल की, आसिक हैड़े बसत।।६२।।

हस्त कमल की क्यों कहूं, पोहोंचे हथेली कई रंग।
लाल उज्जल रंग केहेत हों, इन रंग में कई तरंग।।६३।।

कोनी काड़े कलाइयां, रंग नरमाई सलूक।
ऐसा सखत मेरा जीवरा, और होवे तो होए टूक टूक।।६४।।

ना तेहेकीक होवे रंग की, ना छबि होए तेहेकीक।
क्यों कहूं बीसों अंगुरियां, और मिंहीं हथेलियां लीक।।६५।।

नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ वालत।
ए कोमलता क्यों कहूं, जिन छबि अंगुरी खोलत।।६६।।

क्यों देऊं निमूना नख का, इन अंगों नख का नूर।
देत न देखाई कछुए, जो होवे कोटक सूर।।६७।।

अब देखो पेट पांसली, और लांक चलत लेहेकत।
ए सोभा सलूकी लेऊं रूह में, तो भी उड़े न जीवरा सखत।।६८।।

देख हरवटी अति सुन्दर, और लाल गाल गौर।
लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर।।६९।।

गाल सोभा अति देत हैं, क्यों कहूं इन मुख छब।
उज्जल लाल रंग सुन्दर, क्यों कहूं सलूकी फब।।७०।।

कानन की किन विध कहूं, जो सुने आसिक के बैन।
सो सुन देवें पड़उत्तर, ज्यों आसिक पावे सुख चैन।।७१।।

मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख बान।
खैंच लेत अरवाह को, ए जो बानी अर्स सुभान।।७२।।

नैन अनियारे बंकी छब, चंचल चपल रसाल।
बान बंके मारत खैंच के, छाती छेद निकसत भाल।।७३।।

लाल तिलक निलवट दिए, अति सुन्दर सुखदाए।
असल बन्या ऐसा ही, कई नई नई जोत देखाए।।७४।।

नैन कान मुख नासिका, रंग रस भरे जोवन।
हाथ पांउं कण्ठ हैयडा, सब चढ़ते देखे रोसन।।७५।।

नख सिख बन्ध बन्ध सब अंग, मानों सब चढ़ते चंचल।
छब फब सोभा सुन्दर, तेज जोत अंग सब बल।।७६।।

सुन्दर ललित कोमल, देख देख सब अंग।
तेज जोत नूर सब चढ़ते, सब देखत रस भरे रंग।।७७।।

कटि कोमल दिल हैयड़ा, अति उज्जल छाती सुन्दर।
चढ़ते इस्क अंग अधिक, ऐसा चुभ्या रूह के अन्दर।।७८।।

इतथें रूह क्यों निकसे, जो इन मासूक की आसिक।
छोड़ छाती आगे जाए ना सके, मार डारत मुतलक।।७९।।

जिन बिध की ए इजार, तापर लग बैठा दावन।
सेत रंग दावन देखिए, आगूं इजार रंग रोसन।।८०।।

गौर रंग जामा उज्जल, जुड़ बैठा अंग ऊपर।
अति बिराजत इन विध, ए खूबी कहूं क्यों कर।।८१।।

ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहुं ओर।
बाहें चोली और दावन, सोभा देत सब ठौर।।८२।।

पीछे कटाव जो कोतकी, रंग नंग जरी झलकत।
चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुन्दर जोत अतन्त।।८३।।

बेल नकस दोऊ बगलों, और बेल गिरवान बन्ध।
चूड़ी समारी बाहन की, क्यों कहूं सोभा सनन्ध।।८४।।

छोटी बड़ी न जाड़ी पतली, सबे बनी एक रास।
उतरती मिहीं मिहीं से, जुबां क्या कहे खूबी खास।।८५।।

पीला पटुका कमरें, रंग नंग छेडे किनार।
बेल पात फूल नकस, होत आकास उद्दोत कार।।८६।।

लाल नीले सेत स्याम रंग, किनार बेल कटाव।
सात रंग छेडों मिने, क्यों कहूं जुगत जड़ाव।।८७।।

पाच पाने मोती नीलवी, हीरे पोखरे मानिक नंग।
बेल कटाव कई नकस, कहूं गरभित केते रंग।।८८।।

जामें में झांई झलकत, हरे रंग इजार।
लाल बन्ध और फुन्दन, कई रंग नंग अपार।।८९।।

कहूं अंगों का बेवरा, जुदे जुदे भूखन।
ए जो जवेर अर्स के, कहूं पेहेले भूखन चरन।।९०।।

चारों जोड़े चरन के, नरमाई सुगन्ध सुखकार।
बानी मधुरी बोलत, सोभा और झलकार।।९१।।

भूखन मेरे धनी के, किन विध कहूं जो ए।
के कहूं खूबी नरमाई की, के कहूं अम्बार तेज के।।९२।।

एक नंग के कई रंग, सोभे झन बाजे झांझर।
पांच नंग रंग एक के, अति मीठी बोले घूंघर।।९३।।

नाके वाले जवेर के, माहें नरम जोत गुन दोए।
तीसरी बानी माधुरी, चौथा गुन खुसबोए।।९४।।

सोई पांच रंग एक नंग में, तिनकी बनी जो कड़ी।
देत देखाई रंग नंग जुदे, जानों किन घड़ के जड़ी।।९५।।

कांबी एक जवेर की, तामें झीने रंग नंग दस।
दिल चाहे भूखन सब बने, सो हक भूखन ए अर्स।।९६।।

मैं देखे जवेर अर्स के, ज्यों हेम भूखन होत इत।
कई रंग नंग मिलाए के, बहु बिध भूखन जड़ित।।९७।।

किन जड़े घड़े ना समारे, भूखन आवत दिल चाहे।
अर्स जवेर कंचन ज्यों, जानों असल ऐसे ही बनाए।।९८।।

दस रंग के जवेर की, माहें कई नकस मुंदरी।
दोए अंगूठी अंगूठों, आठों जिनस आठ अंगुरी।।९९।।

ए नरम अंगुरियां अतन्त, नख सोभित तेज अपार।
ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहें सुमार।।१००।।

पोहोंचे और हथेलियां, केहे न सकों सलूकी ए।
छबि देख रंग हाथन की, बल बल जाऊं इनके।।१०१।।

कड़ियां दोऊ काड़ो सोहे, सोभा तेज धरत।
लाल नंग नीले आसमानी, जोत अवकास भरत।।१०२।।

पोहोंची पांचों नंग की, जुबां केहे न सके जिनस।
पाच पांने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस।।१०३।।

बाजूबंध की क्यों कहूं, जो बिराजे बाजू पर।
कई मिहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अम्बर।।१०४।।

एक नंग एक रंग का, एक रंगे नंग अनेक।
इन बिध के अर्स भूखन, सो कहां लो कहूं विवेक।।१०५।।

पांच रंग जरी फुन्दन, सोभा लेत अतंत।
पांच रंग जवेर झलके, फुन्दन सोहे लटकत।।१०६।।

नरम जोत खुसबोए, दिल चाही सोभाए।
कई विध सुख लेवे हक के, सुख भूखन कहे न जाए।।१०७।।

बीच हार मानिक का, और हीरों हार उज्जल।
पाच मोती और नीलवी, लसनियां अति निरमल।।१०८।।

और निरमल माहें दुगदुगी, तामें नंग करत अति बल।
बीच हीरा छे गिरदवाए, जोत आकास किया उज्जल।।१०९।।

गौर गलस्थल धनी के, उज्जल लाल सुरंग।
झांई उठे इन नूर में, करन फूल के नंग।।११०।।

निरख नासिका धनी की, लटके मोती पर लाल।
लेत अमी रस अधुर पर, रस अमृत रंग गुलाल।।१११।।

करन फूल की क्यों कहूं, उठत किरन कई रंग।
तिन नंग रंग कई भासत, रंग रंग में कई तरंग।।११२।।

करत मानिक माहें लालक, हीरे मोती सेत उजास।
और पाच करत है नीलक, लेत लेहेरी जोत आकास।।११३।।

तेज भी मानिक तित मिले, पोहोंचत तित पुखराज।
नीलवी तो तेज आसमानी, रहे रंग नंग पांचों बिराज।।११४।।

पाँच फूल कलंगी पर, उपरा ऊपर लटकत।
कोई ऐसी कुदरत नूर की, लेहेरी आकास में झलकत।।११५।।

एता इन कलंगी मिने, एकै हीरे का नूर।
आसमान जिमी के बीच में, मानों कोटक ऊगे बका सूर।।११६।।

जंग जवेर करत है, आसमान देखिए जब।
लरत बीच आकास में, नजरों आवत है तब।।११७।।

कहे महामत अरवा अर्स से, जो कोई आई होए उतर।
सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर।।११८।।

।।सागर।।प्रकरण।।८।।

श्री राज जी का तीसरा श्रृंगार

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित।
मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत।।१।।

चाहिए निसदिन हक अर्स में, और इत हक खिलवत।
होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अर्स न्यामत।।२।।

बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर।
एही अर्स दिल रूह के, बैठे सिनगार कर।।३।।

अब निस दिन रूह को चाहिए, फेर सब अंग देखे नजर।
सूरत छबि सलूकी, देखों भूखन अंग वस्तर।।४।।

सिनगार किया सब दुलहे, वस्तर या भूखन।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन।।५।।

सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार।
काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊं बलिहार।।६।।

रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन।
देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए वस्तर भूखन।।७।।

कलंगी दुगदुगी पगड़ी, देख नीके फेर कर।
बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर।।८।।

पेहेले देख पाग सलूकी, माहें कई बिध फूल कटाव।
जोत करी है किन बिध, जानों के नकस नंग जड़ाव।।९।।

देख कलंगी जोत सलूकी, जेता अर्स अवकास।
सो सारा ही तेज में, पूरन भया प्रकास।।१०।।

और खूबी इन कलंगी, और दुगदुगी सलूक।
और पाग छबि रूह देख के, होए जात नहीं भूक भूक।।११।।

देख सुन्दर सरूप धनीय को, ले हिरदे कर हेत।
देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोको देत।।१२।।

नैन रसीले रंग भरे, भौं भृकुटी बंकी अति जोर।
भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खैंच मरोर।।१३।।

हँसत सोभित हरवटी, अंग भूखन कई विवेक।
मुख बीड़ी सोभित पान की, क्यों बरनों रसना एक।।१४।।

लाल रंग मुख अधुर, तंबोल अति सोभाए।
ए लालक हक के मुख की, मेरे मुख कही न जाए।।१५।।

गौर मुख अति उज्जल, और जोत अतंत।
ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत।।१६।।

अति उज्जल मुख निलवट, सुन्दर तिलक दिए।
अति सोभित है नासिका, सब अंग प्रेम पिए।।१७।।

निलवट चौक चारों तरफों, रंग सोभित जोत अपार।
निरख निरख नेत्र रूह के, सब अंग होए करार।।१८।।

देख निलवट तिलक, मुख भौं भासत अति सुन्दर।
सब अंग दृढ़ करके, ले रूह के नैनों अन्दर।।१९।।

नैन निलवट बंकी छबि, अति चंचल तेज तारे।
रंग भीने अति रस भरे, बका निसबत रूह प्यारे।।२०।।

ए रस भरे नैन मासूक के, आसिक छोड़े क्यों कर।
कई कोट गुन कटाख्य में, रूह छोड़ी न जाए नजर।।२१।।

जो देवें पल आड़ी मासूक, तो जानों बीच पड़्यो ब्रह्मांड।
रूह अन्तराए सहे ना सरूप की, ए जो दुलहा अर्स अखंड।।२२।।

नैन सुख देत जो अलेखे, मीठे मासूक के प्यारे।
मेहेर भरे सुख सागर, रूह तर न सके तारे।।२३।।

मीठे लगें मरोरते, मीठी पांपण लेत चपल।
फिरत अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल।।२४।।

बीड़ी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी।
लेत अंगुरियां छबिसों, बलि जाऊं सबे अंगुरी।।२५।।

बीड़ी मुख आरोगते, अधुर देखत अति लाल।
हँसत हरवटी सोभा सुन्दर, नेत्र मुख मछराल।।२६।।

अधबीच आरोगते, वचन केहेत रसाल।
नैन बान चलावत सेहेजे, छाती छेद निकसत भाल।।२७।।

मोरत पान रंग तंबोल, मानों झलके माहें गाल।
जो नैनों भर देखिए, रूह तबहीं बदले हाल।।२८।।

मरकलड़े मुख बोलत, गौर हरवटी हँसत।
नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत।।२९।।

जोत धरत चित्त चाहती, चित्त चाही नरम लगत।
कई रंग करें चित्त चाहती, खुसबोए करत अतंत।।३०।।

चित्त चाहे सुख देत हैं, लाल मोती कानन।
देख देख जाऊं वारने, ए जो भूखन चेतन।।३१।।

सुपन सरूप जिन बिध के, पेहेनत हैं भूखन।
सो तो अर्स में है नहीं, जो सिनगार करें बिध इन।।३२।।

नए सिनगार जो कीजिए, उतारिए पुरातन।
नया पुराना पेहेन उतारना, होत सुपन के तन।।३३।।

ए बारीक बातें अर्स की, सो जानें अरवा अरसै के।
नया पुराना घट बढ़, सो कबूं न अर्स में ए।।३४।।

अर्स में सदा एक रस, करें पल में कोट सिनगार।
चित्त चाहे अंगों सब देखत, नया पेहेन्या न जूना उतार।।३५।।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, करें कोट रंग चित्त चाहे।
अर्स जूना न कबूं कोई रंग, देखत पल में नित नए।।३६।।

देत खुसबोए खुसाली, श्रवनों अति सुन्दर।
बात सुनत मेरी रीझत, सुख पावत रूह अन्दर।।३७।।

जो अटकों इन अंग में, तो जाए न सकों छोड़ कित।
गुझ गुन कई श्रवन के, रूह इतहीं होवे गलित।।३८।।

जामा अंग जवेर का, भूखन नंग कई रंग।
जोत पोहोंचे आकास में, जाए करत मिनो मिने जंग।।३९।।

याही विध जामा पटुका, याही विध पाग वस्तर।
करें चित्त चाहे अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर।।४०।।

जामा पटुका चोली बाहेंकी, चीन मोहोरी बन्ध बगल।
ए आसिक अंग देख के, आगूं नजर न सके चल।।४१।।

चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत।
तले हार बीच दुगदुगी, नेहेरे लेहेरें जोत चलत।।४२।।

बगलों बेली फूल खभे, गिरवान बेली जर।
पीछे कटाव जो कोतकी, रूह छोड़ न सके क्योंए कर।।४३।।

कहें हार हम हैड़े पर, अति बिराजे अंग लाग।
सुख देत हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग।।४४।।

कण्ठ हार नंग सब चेतन, देख सोभा सब चढ़ती देत।
ए सुख रूह सो जानहीं, जो सामी हक इसारत लेत।।४५।।

ए जंग रूह देख्या चाहे, मिल जोतें जोत लरत।
कई नंग रंग अवकास में, मिनों मिने जंग करत।।४६।।

जोत अति जवेरन की, बांहों पर बाजू बन्ध।
जात चली जोत चीर के, कई विध ऐसी सनन्ध।।४७।।

हाथ काड़ों कड़ी पोहोंचिया, जानों ए जोत इनथें अतन्त।
जोत सागर आकास में, कोई सके ना इत अटकत।।४८।।

बाजू बन्ध पोहोंची कड़ी, ए भूखन सोभा अपार।
नरम हाथ लीकें हथेलियां, क्यों आवे सोभा सुमार।।४९।।

जुदे जुदे रंगों जोत चले, ए जो नंग हाथ मुंदरी।
ए तेज लेहेरें कई उठत हैं, ज्यों ज्यों चलवन करें अंगुरी।।५०।।

क्यों कहूं जोत नखन की, ए सबथें अति जोर।
जानों तेज सागर अवकास में, सबको निकसे फोर।।५१।।

रंग देखूं के सलूकी, छबि देखूं के नरम उज्जल।
जो होए कछुए इस्क, तो इतथें न निकसे दिल।।५२।।

कैसी नरम अंगुरियां पतली, देख सलूकी तेज।
आसमान रोसनी पोहोंचाए के, मानों सूर जिमी भरी रेजा रेज।।५३।।

जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाए।
जो रूह नैनों में न समावहीं, सो जुबां कह्यो क्यों जाए।।५४।।

यों वस्तर भूखन अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब।
केहे सब का लेऊं पड़-उत्तर, ए नहीं रूह मिने ख्वाब।।५५।।

रद बदल भूखन सों, और करे वस्तरों सों।
और अंग लग जाए ना सके, फारग न होए इनमों।।५६।।

ए वस्तर भूखन हक के, सो सारे ही चेतन।
सब जवाब लिया चाहिए, आसिक एही लछन।।५७।।

आसिक रूह जित अटकी, अंग भूखन या वस्तर।
यासों लगी गुफ्तगोए में, सो छूटे नहीं क्योंए कर।।५८।।

इस्क बसे सब अंग में, सब बिध देत हैं सुख।
कई सुख हर एक अंग में, सो कह्यो न जाए या मुख।।५९।।

प्रेम लिए सोभा गुन, सब सुख देत पूरन।
या वस्तर या भूखन, सुख जाहेर या बातन।।६०।।

सुख इस्क हक जात के, तिनसे अंग सुखदाए।
बाहेर सुख सब अंग में, ए सुख जुबां कह्यो न जाए।।६१।।

अंग वस्तर या भूखन, सब सुख दिया चाहे।
कई सुख जाहेर कई बातन, सब मिल प्रेम पिलाए।।६२।।

इस्क देवें लेवें इस्क, और ऊपर देखावें इस्क।
अर्स इस्क जरे जरा, ए जो सूरत इस्क अंग हक।।६३।।

एक अंग जिन देख्या होए, सो पल रहे न देखे बिगर।
हुई बेसकी इन सरूप की, रूह अंग न्यारी रहे क्यों कर।।६४।।

सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत।
हाए हाए रूह रेहेत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत।।६५।।

चारों जोड़े चरन के, ए जो अर्स भूखन।
ए लिए हिरदे मिने, आवत सरूप पूरन।।६६।।

जो सोभावत इन चरन को, ए भूखन सब चेतन।
अनेक गुन याके जाहेर, और अलेखे बातन।।६७।।

नंग नरम जोत अतंत, और अतंत खुसबोए।
ए भूखन चरनों सोभित, बानी चित्त चाही बोलत सोए।।६८।।

गौर चरन अति सोभित, और सिनगार भूखन सोभित।
ए अंग संग न्यारे न कबहूं, अति बारीक समझन इत।।६९।।

एही ठौर आसिकन की, अर्स की जो अरवाहें।
सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहें तले पाए।।७०।।

अर्स रूहें आसिक इनकी, जिन पायो पूरन दाव।
ठौर ना और रूहन को, जाको लगे कलेजे घाव।।७१।।

कई रंग नंग वस्तर भूखन, चढ़ी आकास जोत लेहेर।
जो जोत नख चरन की, मानों चीर निकसी नेहेर।।७२।।

केहेती हों इन जुबांन सों, और सुपन श्रवन नजर।
जो नजरों सूरज ख्वाब के, सो सिफत पोहोंचे क्यों कर।।७३।।

कट चीन झलके दावन, बैठ गई अंग पर।
कई रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर।।७४।।

और भूखन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत।
नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उद्दोत।।७५।।

पांउं तली नरम उज्जल, लीकें एड़ी लांक लाल।
ए रूह आसिक से क्यों छूटहीं, ए कदम नूर जमाल।।७६।।

तली हथेली हाथ पांउं की, लाल अति उज्जल।
और बीसों अंगुरियां नरम पतली, नख नरम निरमल।।७७।।

काड़े कोमल हाथ पांउं के, फने पीड़ी अंग माफक।
उज्जल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक।।७८।।

रंग रस इंद्री नौतन, चढ़ता अंग नौतन।
तेज जोत सोभा नौतन, नौतन चढ़ता जोवन।।७९।।

छब फब मुख सनकूल, चढ़ती कला देखाए।
कायम अंग अर्स के, सब चढ़ता नजरों आए।।८०।।

ए अंग सब अर्स के, अर्स वस्तर भूखन।
अर्स जरे जवेर को, सिफत न पोहोंचे सुकन।।८१।।

सब अंग इस्क के, गुन अंग इन्द्री इस्क।
सब्द न पोहोंचे सिफत, इन बिध सूरत हक।।८२।।

केहे केहे दिल जो केहेत है, ताथें अधिक अधिक अधिक।
सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक।।८३।।

अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए।
पैदास भूखन इन विध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे।।८४।।

एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ़ होए।
सो तो अर्स में है नहीं, वाहेदत में नहीं दोए।।८५।।

घड़े जड़े न समारे, ना सांध मिलाई किन।
दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन।।८६।।

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत।।८७।।

जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत।।८८।।

।।सागर।।प्रकरण।।१०।।

श्री राज जी का चौथा शृंगार

आतम फरामोसी से जागे का प्रकरण

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए।।१।।

हक सूरत वस्तर भूखन, बीच बका अर्स के।
तिनको निरने इन जुबां, क्यों कर केहेवे ए।।२।।

जिन दृढ़ करी हक सूरत, हक हुकमें जोस ले।
अर्स चीज कही सो मेहेर से, पर बल इन अंग अकल के।।३।।

जो वचन जुबां केहेत है, हिस्सा कोटमा ना पोहोंचत।
पोहोंचे ना जिमी जरे को, तो क्या करे जात सिफत।।४।।

किया हुकमें बरनन अर्स का, पर दृष्ट मसाला इत का।
एक हरफ लुगा पोहोंचे नहीं, लग अर्स चीज बका।।५।।

जिन देखी सूरत हक की, इन वजूद के सनमंध।
जोस हुकम मेहेर देखावहीं, मोमिन जानें एह सनंध।।६।।

सबों सिफत करी जोस अकलें, इन अंग छूटे ना दृष्ट फना।
कोई बल करो हक हुकमें, पर अर्स क्यों पोहोंचे सुपना।।७।।

नींद उड़े रहे न सुपना, और सुपने में देखना हक।
मेहेर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक।।८।।

पर जेता हिस्सा नींद का, रूह तेती फरामोस।
जो मेहेर कर हुकम देखावहीं, तब देखे बिना जोस।।९।।

हक जानें सो करें, अनहोनी सो भी होए।
हिसाब किए सुपन में, मुतलक न देखे कोए।।१०।।

ए बात तो कारज कारन, हक जानत त्यों करत।
असल रूह तन मिलावा, निसबत है वाहेदत।।११।।

ए हक बातन की बारीकियां, सो हक के दिए आवत।
ना सीखे सिखाए ना सोहोबतें, हक मेहेरें पावत।।१२।।

अपनी रूहों वास्ते, कई कोट काम किए।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जिन नाम निसान लिए।।१३।।

ए जो अर्स बारीकियां, अर्स सहूरें रूह जानत।
जिन पट खुल्या सो न जानहीं, बिना हक सिफत।।१४।।

जिन जो देख्या जागते, सो देखे माहें सुपन।
कानों सुन्या सोभी देखत, याके साथ तो हक इजन।।१५।।

रखे वजूद को हुकम, जेते दिन रख्या चाहे।
रूहों खेल देखावने, कई विध जुगत बनाए।।१६।।

आतम तो फरामोस में, भई आड़ी नींद हुकम।
सो फेर खड़ी तब होवहीं, रूह दिल याद आवे खसम।।१७।।

सो साख मोमिन एही देवहीं, यों बूझ में भी आवत।
अनुभव भी कछू केहेत है, और हुकम भी कहावत।।१८।।

मोमिन केहेवें हुकमें, बूझ अनुभव पर हुकम।
हुकम केहेवे सो भी हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम।।१९।।

रूह तेती जागी जानियो, जेता दिल में चुभे हक अंग।
जो अंग हिरदे न आइया, रूह के तेती फरामोसी संग।।२०।।

ताथें जो रूह अर्स अजीम की, सों क्यों ना करे उपाए।
ले हक सरूप हिरदे मिने, और देवे सब उड़ाए।।२१।।

इस्क बिना रूह के दिल, चुभे ना सूरत हक।
मेहेर जोस निसबतें, हक हुकमें चुभे मुतलक।।२२।।

मोहे दिल में हुकमें यों कह्या, जो दिल में आवे हक मुख।
तो खड़ा होए मुख रूह का, हक सों होए सनमुख।।२३।।

अधुर हरवटी नासिका, दंत जुबां और गाल।
जो अंग आया हक का दिल में, उठे रूह अंग उसी मिसाल।।२४।।

जो तूं ग्रहे हक नैन को, तो नजर खुले रूह नैन।
तब आसिक और मासूक के, होए नैन नैन से सैन।।२५।।

जो हक निलाट आवे दिल में, और दिल में आवे श्रवन।
दोऊ अंग खड़े होएं रूह के, जो होवें रूह मोमिन।।२६।।

भौं भृकुटी पल नासिका, सुन्दर तिलक हमेस।
गौर सोभा मुख चौक की, क्यों कहूं जोत नूर केस।।२७।।

ए अंग जेते मैं कहे, आवें रूह के हिरदे हक।
तेते अंग रूह के, उठ खड़े होंए बेसक।।२८।।

पाग बनी सिर सारंगी, इन जुबां कही न जाए।
ए जुगत जोत क्यों कहूं, जो हकें बांधी दिल ल्याए।।२९।।

अतंत सोभा सुन्दर, चढ़ती चढ़ती तरफ चार।
जित देखूं तित अधिक, सोभा न आवे माहें सुमार।।३०।।

हक हैड़ा हिरदे ग्रहिए, दिल में रहे दायम।
सो हैड़ा अंग रूह का, उठ खड़ा हुआ कायम।।३१।।

जो हक अंग दिल में नहीं, सो अंग रूह का फरामोस।
जब हक अंग आया दिल में, सो रूह अंग आया माहें होस।।३२।।

कटि पेट पांसे हक के, पीठ खभे कांध केस।
ए दिलमें जब दृढ़ हुए, तब रूह आया देखो आवेस।।३३।।

बाजू मच्छे कोनियां, कांड़े कलाइयां हाथ।
हक के अंग हिरदे आए, तब रूह खड़ी हुई हक साथ।।३४।।

पोहोंचे हथेली अंगुरी नख, लीकें रंग सलूक।
हक अंग मिहीं हिरदे बैठे, अब निमख न होए रूह चूक।।३५।।

नख अंगूठे अंगुरियां, नीके ग्रहिए हक कदम।
सोई नख अंगुरियां पांउं रूह के, खड़े होत माहें दम।।३६।।

जब हक चरन दिल दृढ़ धरे, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक अंग सब हिरदे आए, तब रूह जागे अंग परवान।।३७।।

मोहोरी चूड़ी इजार की, और नेफा इजार बंध।
हरे रंग बूटी कई नकस, हकें सोभित भली सनंध।।३८।।

क्यो कहूं जुगत जामें की, हरे पर उज्जल दावन।
निपट सोभित मिहीं बेलियां, झांईं उठत अति रोसन।।३९।।

एक सेत रंग जामा कह्या, माहें जवेर जुगत कई रंग।
इन जुबां रोसनी क्यों कहूं, जो झलकत अर्स के नंग।।४०।।

बीच पटुका कस्या कमरें, रंग कई बिध छेड़े किनार।
बेली नकस फूल केते कहूं, अवकास भरयो झलकार।।४१।।

एक झलकार मुख केहेत हों, माहें कई सलूकी सुखदाए।
सो गुन गरभित इन जुबां, रंग रोसन क्यों कहे जाए।।४२।।

जामा जुड़ बैठा अंग पर, कोई अचरज खूबी लेत।
सोभा सलूकी सुख क्यों कहूं, अंग गौर पर जामा सेत।।४३।।

बगलों नकस केवड़े, कंठ बेली दोऊ गिरवान।
ए जुगत जुबां तो कहे, जो कछू होए इन मान।।४४।।

कटाव कोतकी कांध पीछे, ऊपर फुंदन हारों के।
रूह जो जाग्रत अर्स की, सुख लेसी बका इत ए।।४५।।

बांहें चूड़ी और मोहोरियां, चूड़ी अचरज जुगत।
निपट मिहीं मोहोरीय से, चढ़ती चढ़ती सोभित।।४६।।

आए वस्तर हिरदे हक के, रूह अपने पेहेने बनाए।
तेती खड़ी रूह होत है, जेता दिल में हक अंग आए।।४७।।

पांच नंग माहें कलंगी, तामें तीन नंग ऊपर।
एक मध्य एक लगता, पांच रंग जोत बराबर।।४८।।

ए जो कलंगी सिर पर, लटक रही सुखदाए।
जो भूखन रूह नजर भरे, तो जानों अरवा देवे उड़ाए।।४९।।

सात नंग माहें दुगदुगी, सो सातों जुदे जुदे रंग।
चढ़ती जोत आकास में, करत माहों माहें जंग।।५०।।

जो रस कलंगी दुगदुगी, सोई पाग को रस।
अंग रंग जोत बराबर, ए नंग रस नूर अर्स।।५१।।

ए जो हिरदे आए हक भूखन, जाहेर स्यामाजी के जान।
कलंगी दुगदुगी राखड़ी, होत दोऊ परवान।।५२।।

दोऊ मुक्ताफल कान के, करड़े कंचन बीच लाल।
साड़ी किनार सेंथे पर, श्रवन पानड़ी झाल।।५३।।

हक अंग तो मुतलक मारत, पर भूखन लगें ज्यों भाल।
चितवन जुगल किसोर की, देत कदम नूरजमाल।।५४।।

मुख बीड़ी आरोगें पान की, लाल सोभे अधुर तंबोल।
ए रूह दृश्टें जब देखिए, पट हिरदे देत सब खोल।।५५।।

कहूं केते भूखन कंठ के, तेज तेज में तेज।
आसमान जिमी के बीच में, हो गई रोसन रेजा-रेज।।५६।।

हार कई जवेरन के, कहूं केते तिनके रंग।
कई लेहेरें माहें उठत, ए तो अर्स अजीम के नंग।।५७।।

एक एक नंगमें कई रंग, रंग रंग में तरंग अपार।
तरंग तरंग किरने कई, हर किरने रंग न सुमार।।५८।।

जामें चादर जुड़ रही, ढांपत नहीं झलकार।
गिनती जोत क्यों कर होए, नंग तेज ना रंग पार।।५९।।

ए रंग जोत किन विध कहूं, जो ले देखो अर्स सहूर।
सोभा रंग सलूकी सुख, देखो रूह की आंखों जहूर।।६०।।

भूखन हक श्रवन के, और हक कण्ठ कई हार।
सोई कण्ठ श्रवन रूह के, साज खड़े सिनगार।।६१।।

सोभा जुगल किसोर की, दोऊ होत बराबर।
जो हिरदे सो बाहेर, दोऊ खड़े होत सरभर।।६२।।

बाजूबंध और पोहोंचियां, कड़े जवेर कंचन।
नंग रंग नाम केते कहूं, कही जाए न जरा रोसन।।६३।।

मुंदरियां दसों अंगुरियों, एक छोटी की न केहेवाए जोत।
अर्स जिमी आकास में, हो जात सबे उद्दोत।।६४।।

हक के भूखन की क्यों कहूं, रंग नंग जोत सलूक।
आतम उठ खड़ी तब होवहीं, पेहेले जीव होए भूक भूक।।६५।।

रूह भूखन हाथ के, हक भेले होत तैयार।
ए सोभा जुगल किसोर की, जुबां केहे न सके सुमार।।६६।।

चारों जोड़े चरन भूखन, रंग चारों में उठें हजार।
ए बरनन जुबां तो करे, जो कछुए होए निरवार।।६७।।

वस्तर भूखन हक के, आए हिरदे ज्यों कर।
त्यों सोभा सहित आतमा, उठ खड़ी हुई बराबर।।६८।।

सुपने सूरत पूरन, रूह हिरदे आई सुभान।
तब निज सूरत रूह की, उठ बैठी परवान।।६९।।

जब पूरन सरूप हक का, आए बैठा माहें दिल।
तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल।।७०।।

वस्तर भूखन सब अंगों, कण्ठ श्रवन हाथ पाए।
नख सिख सिनगार साज के, बैठे अर्स दिल में आए।।७१।।

जब बैठे हक दिल में, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक आए दिल अर्स में, रूह जागे के एही निसान।।७२।।

हक के दिल का इस्क, रूह पैठ देखे दिल माहें।
तो हक इस्क सागर से, रूह निकस न सके क्याहें।।७३।।

जो हक करें मेहेरबानगी, तो इन बिध होए हुकम।
एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम।।७४।।

महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए।
रूह जागे का एह उद्दम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए।।७५।।

।।सिनगार।।प्रकरण।।४।।

चरन को अंग तिनमें नख अंग

सखीरी तेज भर्यो आकास लों, नख जोत निकसी चीर।
ज्यों सागर छेद के आवत, नेहेर निरमल का नीर।।१।।

रंग केते कहूं चरन के, आवें न माहें सुमार।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार।।२।।

प्यारे पाऊं मेरे पिउ के, देख नख अंगूठे अंगुरियों।
सो बैठे बीच दिल तखत के, तो अर्स कह्या मेरे दिल को।।३।।

दो अंगूठे आठ अंगुरी, नख सोभित तिन पर।
नख लगते सिर अंगुरी, ए जोत कहूं क्यों कर।।४।।

चरन अंगूठे पतले, और पतली अंगुरियां।
लाल रंग माहें सोभित, अतंत उज्जलियां।।५।।

देखूं एक एक अंगुरी, आठों अंगुरी दोऊ पाए।
कोमल सलूकी मिल रही, ए छब फब कही न जाए।।६।।

दोऊ पांउं बड़ी दो अंगुरी, अंगूठों बराबर।
तिन थें तीन उतरती, लगती कोमल सुन्दर।।७।।

झलकत नूर बराबर, ऊपर अंगुरियों नख।
सोभा सलूकी नख जोत की, जुबां केहे न सके इन मुख।।८।।

अतंत जोत नखन की, ताको क्यों कर कहूं प्रकास।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत पोहोंची जाए आकास।।९।।

जो सुंदरता अंगुरियों, और सुंदरता नख जोत।
ए सोभा न आवे सब्द में, केहे केहे कहूं उद्दोत।।१०।।

तेज जोत कछू और है, सोभा सुन्दरता कछू और।
पर ए अंग नूरजमाल के, याको नहीं निमूना ठौर।।११।।

जोत में एकै रोसनी, सोभा सुन्दर गुन अनेक।
सोभा रंग रोसन नरमाई, रस मीठे कई विवेक।।१२।।

सोभा माहें सलूकियां, और खुसबोई सुखदाए।
सुख प्रेम कई खुसालियां, इन जुबां कही न जाए।।१३।।

अर्स बातें सुख बारीक, सुपन बानी न आवे सोए।
कछुक जाने रूह अर्स की, जो बेसक जागी होए।।१४।।

महामत कहे हक हुकमें, ऐसा सुख ना दूजा कोए।
पांउं मासूक के आसिक, पिए रस धोए धोए।।१५।।

।।सिनगार।।प्रकरण।।५।।

चरन हक मासूक के उपली सोभा

श्री राज जी के चरणों की बाहरी शोभा

फेर फेर चरन को निरखिए, रूह को एही लागी रट।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट।।१।।
गुन केते कहूं इन चरन के, आवें न माहें सुमार।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार।।२।।
बरनन करत हों चरन की, अर्स सूरत हक जात।
ए नेक कहूं हक हुकमें, सोभा सब्द न इत समात।।३।।
कदम तली अति उज्जल, निपट नरम रंग लाल।
रूहें आसिक इन मासूक की, ए कदम छोड़ें ना नूरजमाल।।४।।
कही सुछम सूरत अमरद की, ए कदम भी तिन माफक।
रस रंग सोभा सलूकी, देख अर्स सहूरें हक।।५।।
लांक सलूकी दोऊ कदम की, लाल एड़ी निपट नरम।
गौर रंग रस भरे, जुबां क्या कहे सिफत कदम।।६।।
सलूकी कदम तलीय की, ऊपर सलूकी और।
छब हक कदम की क्यों कहूं, ए जो जुबां इन ठौर।।७।।
हक हादी रूहें निसबत, ए अर्स की वाहेदत।
जो रूह होवे अर्स की, सो क्यों छोड़ें ए न्यामत।।८।।
ए कदम ताले मोमिन के, लिखी जो निसबत।
तो आठों जाम रूह अटकी, बीच अर्स खिलवत।।९।।
लग रहे हक कदम को, सोई रूह अर्स की।
ए रस अमृत अर्स का, कोई और न सके पी।।१०।।

जो कोई अरवा अर्स की, हक कदम तिन जीवन।
सो जीव जीवन बिना क्यों रहे, जाके असल अर्स में तन।।११।।
हकें अर्स कह्या अपना, जो अर्स दिल मोमिन।
सो मोमिन उतरे अर्स से, है असल निसबत तिन।।१२।।
ए जो मोमिन उतरे अर्स से, अर्स कह्या दिल जिन।
हक कदम हमेसा अर्स में, ए कदम छोड़े ना मोमिन।।१३।।
हकें तो कह्या अर्स दिल को, जो इनों असल अर्स में तन।
हक कदम छूटे दिल से, ताए क्यों कहिए मोमिन।।१४।।
हक कदम मोमिन दिल में, और कदम रूह हिरदे।
ए कदम नैन पुतली मिने, और रूह फिरत सिर पर ले।।१५।।
हकें बैठक कही अपनी, दिल मोमिन का जे।
जिन दिल हक आए नहीं, सो दिल मोमिन कहिए क्यों ए।।१६।।
आसमान जिमी के लोक का, सब्द छोड़े ना सुरिया को।
बिन मोमिन सब दुनियां, खात गोते फना मों।।१७।।
सुरिया पर ला मकान है, तिन पर नूर अर्स।
अर्स पर अर्स अजीम, पोहोंचें मोमिन इत सरस।।१८।।
अर्स दिल मोमिन तो कह्या, अर्स बका सुध मोमिनों में।
चौदे तबकों गम नहीं, मोमिन आए हक कदमों से।।१९।।
सोई कहिए मोमिन, जिन दिल हक अर्स।
सो ना मोमिन जिन ना पिया, हक सुराही का रस।।२०।।
हकें दिल को अर्स तो कह्या, करने मोमिन पेहेचान।
कहे मोमिन उतरे अर्स से, तन अर्स एही निसान।।२१।।

रूहें उतरी अपने तनसे, और कह्या उतरे अर्स से।
तन दिल अर्स एक किए, हकें कदम धरे दिलमें।।२२।।
ए निसबत असल अर्स की, हकें जाहेर तो करी।
दिल मोमिन अर्स तो कह्या, जो रूहें दरगाह से उतरी।।२३।।
ख्वाब वजूद दिल मोमिन, हकें कह्या अर्स सोए।
अर्स तन मोमिन दिल से, ए केहेने को हैं दोए।।२४।।
मोमिन असल तन अर्स में, और दिल ख्वाब देखत।
असल तन इन दिल से, एक जरा न तफावत।।२५।।
तो हक सेहेरग से नजीक, ए विध जानें मोमिन।
अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो निसबत अर्स तन।।२६।।
ए बारीक बातें अर्स की, ए मोमिन जानें सहूर।
तो हक कदम दिल अर्स में, हक सहूर से नाहीं दूर।।२७।।
ए ख्वाब देखे सो झूठ है, सत सोई जो माहें वतन।
सांच बैठी कदम पकड़के, झूठ में न आए आपन।।२८।।
ए विचार देखो मोमिनों, हक देखावें अपने सहूर।
इन दिल को अर्स तो कह्या, जो कदम नहीं आपनसे दूर।।२९।।
जो रूह देखे लांक लीक को, तो रूह तितहीं रहे लाग।
अर्स रूहों को इन लीक बिना, सुख दुनियां लागे आग।।३०।।
एक लीक भी रूहथें न छूटहीं, तो क्यों छूटे तली कोमल।
अर्स रूहें इन लीक बिना, तबहीं जाए जल बल।।३१।।
ए कदम तली की जोत से, आसमान जिमी रोसन।
दिल मोमिन कदम बिना, अंग हो जाए सब अगिन।।३२।।

चकलाई इन कदम की, कदम तली ऊपर सलूक।
ए फिराक मोमिन ना सहें, सुनते होंए टूक टूक।।३३।।
सोभा कदम तलीय की, और सोभा सलूकी नखन।
सोभा अंगुरी अंगूठे, क्यों छोड़ें आसिक तन।।३४।।
फना टांकन की सलूकी, और छब घूंटी काड़ों।
अर्स रूहें जुदागी ना सहें, जाके असल तन अर्स मों।।३५।।
पीड़ी घूंटन पांउं माफक, सोभा अति सुन्दर।
ए कदम सुध तिने परे, जो रूह बेधी होए अन्दर।।३६।।
विचार तो भी याही को, रूह नजर तो भी ए।
जो रूह इन कदम की, रहे तले कदमै के।।३७।।
हाथों कदम न छोड़हीं, रूह हिरदे माहें लेत।
हक कदम खैंचें रूह को, सब अंगों समेत।।३८।।
जेते अंग आसिक के, सो सब कदमों लगत।
ए गत सोई जानहीं, जिन अंग रूह खैंचत।।३९।।
कई गुन हक कदम में, सब गुन खैंचें रूह को।
मासूक गुझ सोई जानहीं, आए लगी जिनसों।।40।।
पांउं पीड़ी घूंटन की, जो चकलाई सोभाए।
जेते अंग आसिक के, तिन सब अंगों देत घाए।।४१।।
क्यों कहूं पीड़ीय की, सलूकी सुख जोर।
ए सुख सब रगन को, और देत कलेजा तोर।।४२।।
घाव लगत टूटत रगां, इन विध रेहेत जो याद।
मासूक मारत आसिक को, अर्स अंग चरन स्वाद।।४३।।

ए कदम देखे रूह फेर फेर, तली लांक या ऊपर।
दिल मोमिन अर्स कह्या, सो या कदमों की खातिर।।४४।।
हक कदम अर्स दिल में, सो दिल मोमिन हुआ जल।
अरवा मोमिन जीव जल के, सो रूह जल बिन रहे न पल।।४५।।
ए बेली फूल रूह मोमिन, सो बेल भई हक चरन।
बेल जुदागी फूल क्यों सहे, यों कदम बिना रहें ना मोमिन।।४६।।
जब देखूं कदम रंग को, जानों एही सुख सागर।
जब देखूं याकी सलूकी, आड़ी निमख न आवे नजर।।४७।।
जो आड़ी आवे पलक, तो जानों बीच पड्यो ब्रह्माण्ड।
ए निसबत हक वाहेदत, जो अर्स दिल अखंड।।४८।।
ए कदम ताले मोमिन के, सो मोमिन हक चरन।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो रूहें असल अर्स में तन।।४९।।
सुन्दरता इन कदम की, सो चुभ रही रूह के दिल।
अरस-परस ऐसी हुई, एक निमख न सके निकल।।५०।।
चकलाई इन कदम की, सुख सलूकी देत।
हिरदे जो रूह के चुभत, रूह सोई जाने जो लेत।।५१।।
अति मीठे रसीले रंग भरे, जाको ए चरन मेहेर करत।
सुख सोई जाने रूह अर्स की, जिन दिल दोऊ पांउं धरत।।५२।।
सो पल पल ए रस पीवत, फेर फेर प्याले लेत।
ए अमल क्यों उतरे, जाको हक बका सुख देत।।५३।।
ए सुख कायम हक के, जिन दिल एह कदम।
सोई रूह जाने ए जिन लिया, या जानत है खसम।।५४।।

कई विध के सुख कदम में, मेहेर कर देत मेहेरबान।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, इन पर कहा कहे सुभान।।५५।।
हकें दिल किया अर्स अपना, इन पर बड़ाई न कोए।
ए सुख लें मोमिन दुनी में, जो अर्स अजीम की होए।।५६।।
ए सुख क्या जानें खेल कबूतर, कह्या हक का अर्स दिल।
ए जाहेर हुए सुख जानसी, मोमिन मिलावा मिल।।५७।।
कदम मेहेबूब के मोमिन, क्यों सहें जुदागी खिन।
तो हकें कह्या अर्स दिल को, कर बैठे अपना वतन।।५८।।
दिया मोमिनों बड़ा मरातबा, जेती हक बिसात।
ले बैठे मोमिन दिल में, सब मता हक जात।।५९।।
हक सूरत किन पाई नहीं, ना अर्स पाया किन।
तरफ भी किन पाई नहीं, माहें त्रैलोकी त्रैगुन।।६०।।
कह्या चौदे तबक जरा नहीं, तो बका सुध होसी किन।
हक सूरत अर्स कायम, सब दिल बीच कह्या मोमिन।।६१।।
हक अंग नूर हादी कह्या, मोमिन हादी अंग नूर।
ए सब हक वाहेदत, ज्यों हक नूर जहूर।।६२।।
ए गुझ थीं अर्स बारीकियां, कोई न जाने बका बात।
सो रूहें आए दुनी में प्रगटीं, अर्स बका हक जात।।६३।।
कहे हुकम नूरजमाल का, मोहे प्यारे अति मोमिन।
महामत कहे दोनों ठौर, हमको किए धंन धंन।।६४।।
।।सिनगार।।प्रकरण।।६।।

श्री राजजी की इजार

असल इजार एक पाचकी, एकै रस सब ए।
कई बेल पात फूल बूटियां, रंग केते कहूं इनके।।१।।
बेल मोहोरी इजार की, जानों एही भूखन सुन्दर।
अतंत सोभा सबसे, एही है खूबतर।।२।।
इजार बंध नंग कई रंग, कई बूटी कई नकस।
निरमान न होए इन जुबां, ए वस्तर अजीम अर्स।।३।।
अति सोभा अति नरमाई, नंग सोभित नरम पसम।
अर्स चीज न आवे सब्दमें, ए नेक केहेत हुकम।।४।।
बेल पात फूल कई विधके, कई विध कांगरी इत।
जोत न नरमाई सुमार, जुबां क्या कहे सिफत।।५।।
नेफा रंग कसूंबका, अति खूबी अतलस।
बेल भरी मोती कांगरी, जानों ए भूखन से सरस।।६।।
ताना बाना रंग रेसम, जवेर का सब सोए।
बेल फूल बूटी तो कहूं, जो मिलाए समारे होए।।७।।
।।सिनगार।।प्रकरण।।१०।।

खुले अंग सिनगार छबि छाती

रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत, तोको हकें कही अर्स की।
अर्स किया तेरे दिल को, तोहे ऐसी बड़ाई हकें दई।।१।।
जो कदी तैं आई नहीं, तोमें हक का है हुकम।
हुज्जत दई तोको अर्सकी, दिया बेसक अपना इलम।।२।।

बिन जामें देखों अंगको, आसिक सब सुख चाहे।
बागा पेहेने हमेसा देखिए, कछू ए छबि और देखाए।।३।।
आसिक इन मासूक की, नए सुख चाहे अनेक।
निरखे नए नए सिनगार, जानें एक से दूजा विसेक।।४।।
जुदे जुदे सुख ले हक के, रूह आसिक क्योंए न अघाए।
ताथें जुदा जुदा बरनन, सुख आसिक ले दिल चाहे।।५।।
खाना पीना खिन खिन लिया, प्यार अर्स रूहन।
पल पल मासूक देखना, एही आहार आसिकन।।६।।
हक बैठे अपने अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल।
तो अनेक खूबी खुसालियां, हम क्यों न लेवें मिल।।७।।
ए जो हक वस्तरकी खूबियां, सो हक अंग परदा जहूर।
बारीक ए सुख जानें रूहें, जिनपे अर्स सहूर।।८।।
वस्तर भूखन सब पूरन, सुख बिन जामें और जिनस।
देख देख देखे जो आसिक, जो देखे सोई सरस।।९।।
कटि कोमल अति पतली, सुन्दर छाती गौर।
देख देख सुख पाइए, जो होवे अर्स सहूर।।१०।।
कटि कोमल कही जो पतली, कछु ए सलूकी और।
ए जुबां सोभा तो कहे, जो कहूं देखी होए और ठौर।।११।।
और पेट पांसली हककी, ए कौन भांत कहूं रंग।
रूह देखे सहूर अर्स के, और कौन केहेवे हक अंग।।१२।।
पांसे पांखड़ी बगलें, सोभित बंधो बंध।
अंग रंग खूबी खुसालियां, पार ना सुख सनंध।।१३।।

ज्यों बरनन सुपन सरूपकी, ए भी होत विध इन।
ए चारों चीज उत हैं नहीं, ना अर्स में ख्वाब चेतन।।१४।।
ए बरनन अर्स अंग होत है, ले मसाला इतका।
ताथें किन बिध रूह कहे, ना जुबां पोहोंचे सब्द बका।।१५।।
जो अरवा होए अर्सकी, सो कीजो इलम सहूर।
इलम सहूर जो हकें दिया, लीजो इनसे रूहें जहूर।।१६।।
हकको जेता रूह देखहीं, सुध तेती ना बुध मन।
तो सुपन जुबां क्या केहेसी, अंग हक बका बरनन।।१७।।
नरम नाजुक पेट पांसली, क्यों कहूं खूब रस रंग।
देत आराम आठों जाम, हक बका अर्स अंग।।१८।।
छाती निरखों हककी, गौर अति उज्जल।
देख हैड़ा खूब खुसाली, तो मोमिन कह्या अर्स दिल।।१९।।
जिन देख्या हक हैड़ा, क्यों नजर फेरे तरफ और।
वाको उसी सूरत बिना, आग लगे सब ठौर।।२०।।
जो हक अंग देख्या होए, हक जमाल न छोड़े तिन।
जाके अर्स की एक रंचक, त्रैलोकी उड़ावे त्रैगुन।।२१।।
वह देख्या अंग क्यों छूटहीं, हक परीछा एही मोमिन।
ए होए अर्स अरवाहों सों, जिनके अर्स अजीम में तन।।२२।।
हक जात अर्स उन तनसे, बीच रेहेत मोमिन के दिल।
अर्स मोमिन दिल तो कह्या, यों हिल मिल रहे असल।।२३।।
दिल हक का और हादी का, ए दोऊ दिल हैं एक।
एकै मता दोऊ दिलमें, ए अर्स रूहें जानें विवेक।।२४।।

जो गंज हक के दिलमें, सो पूरन इस्क सागर।
कोई ए रस और न ले सके, बिना मोमिन कोई न कादर।।२५।।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो इन दिलमें हक बैठक।
तो इत जुदागी कहां रही, जहां हकै आए मुतलक।।२६।।
ए क्यों होए बिना निसबतें, इतहीं हुई वाहेदत।
निसबत वाहेदत एकै, तो क्यों जुदी कहिए खिलवत।।२७।।
इतहीं हक मेहेरबानगी, इतहीं हुकम इलम।
तो इत जोस इस्क क्यों न आवहीं, जो हकें दिल में धरे कदम।।२८।।
सोई सहूर अर्स का, जो कह्या हक इलम।
सोई मोमिन पे बेसकी, यों अर्स रूहें जुदे ना खसम।।२९।।
जुबां क्या कहे बड़ाई हक की, पर रूहें भूल गई लाड़ लज्जत।
एक दम न जुदे रहे सकें, जो याद आवे हक निसबत।।३०।।
हक हैड़े के अंदर, मता अनेक अलेखे।
उपली नजरों न आवहीं, जो लों रूह अंदर ना देखे।।३१।।
क्यों छूटे हक हैयड़ा, मोमिन के दिलसें।
अर्स मता जो मोमिन का, सब हक हैड़े में।।३२।।
सब अंग देखत रस भरे, प्रेम के सुख पूरन।
रूह सोई जाने जो देखहीं, ले हिरदे रस मोमिन।।३३।।
ए जो बातून गुन हक दिलमें, सो क्यों आवे मिने हिसाब।
ए दृष्ट मन जुबां क्या कहे, ए जो मसाला ख्वाब।।३४।।
छाती मेरे खसम की, जिन का नाम सुभान।
जो नेक देखूं गुन अन्दर, तो तबहीं निकसे प्रान।।३५।।

जो निध हक हैड़े मिने, सो कई अलेखे अनेक।
सो सुख लेसी अर्स में, जिन बेवरा लिया इत देख।।३६।।
हक हैड़े में जो हेत है, रूहों सों प्रेम प्रीत।
जिन मेहेर होसी निसबत, सोई ल्यावसी परतीत।।३७।।
हक हैड़े में इस्क, सब अंगों सनेह।
रूह देखसी हक मेहेर से, निसबती होसी जेह।।३८।।
हक हैड़े में एही बसे, मैं लाड़ पालों रूहों के।
ए हक हुज्जत आवे तिनों, तन असल अर्स में जे।।३९।।
हक हैड़े में निस दिन, सुख देऊं रूहों अपार।
जिन रूह लगी होए अन्दर, सो जानेगी जाननहार।।४०।।
एक नुकता इलम हक दिल से, आया मेरे दिल माहें।
इन नूर नुकते की सिफत, केहे न सके कोई क्यांहें।।४१।।
ले नूर नुकते की रोसनी, मैं ढूंढ़े चौदे भवन।
इनमें कहूं न पाइया, माहें त्रैलोकी त्रैगुन।।४२।।
इन इलम नुकते की रोसनी, नहीं कोट ब्रह्मांडों कित।
सो दिया मोहे सुपने दिल में, जो नहीं नूर अछर जाग्रत।।४३।।
खाक पानी आग वाएको, ए चौदे तबक हैं जे।
सो मेरे दिल कायम किए, बरकत नुकते इलम के।।४४।।
एक बूंद आया हक दिल से, तिन कायम किए थिर चर।
इन बूंद की सिफत देखियो, ऐसे हक दिल में कई सागर।।४५।।
एक बूंद ने बका किए, तो होसी सागरों कैसा बल।
तो काहूं न पाई तरफ किने, कई चौदे तबक गए चल।।४६।।

ऐसे कई सुख हक हैड़े मिने, सो ए जुबां कहें क्योंकर ।
हैड़े बल तो नेक कह्या, जो इत बूंद आई उतर ।।४७।।
कोट ब्रह्मांड का केहेना क्या, जिमी झूठी पानी आग वाए।
ए चौदे तबक जो मुरदे, नुकते इलमें दिए जिवाए।।४८।।
क्यों कहिए सोभा हककी, ना कछू झूठ में आए हम।
लेहेजे हुकमें झूठे बैराटको, सांचे किए नुकते इलम।।४९।।
कही न जाए झूठमें, हक हैड़े की सिफत।
हक सोभा छल में तो होए, जो सांच जरा होए इत।।५०।।
तो कह्या वेद कतेबमें, ए ब्रह्मांड नहीं रंचक।
तो क्यों कहिए आगे इनके, ए जो सिफत दिल हक।।५१।।
कहूं सुन्दर सोभा सलूकी, कहूं केते गुन उपले।
ए सुख न आवे हिसाब में, ए जो गिरो देखत है जे ।।५२।।
हक छाती सलूकी सुनके, रूह छाती न लगे घाए।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, हाए हाए ओ नहीं अर्स अरवाए।।५३।।
हक छाती नरम कोमल, रूह सदा रहे सूर धीर।
पाए बिछुरे पिउ परदेस में, हाए हाए सो रही ना कछू तासीर।।५४।।
छाती मेरे खसम की, देखी जोर सलूक।
न्यारे होत निमख में, हाए हाए जीवरा न होत टूक टूक।।५५।।
छाती मेरे मासूक की, चुभी मेरी छाती माहें।
जो रूह अर्स अजीम की, तिनसे छूटत नाहें।।५६।।
बिछुरे पाए परदेस में, देखी पिउ अंग छाती।
अब पलक पड़े जो बिछोहा, हाए हाए उड़े ना करे आप घाती।।५७।।

मासूक छाती रूह थें ना छूटहीं, अति मीठी रंग भरी रस।
ए क्यों कर छोड़े मोमिन, जो होए अरवा अर्स।।५८।।
ए अंग मेरे मासूक के, मीठे अति मुतलक।
ए लज्जत असल याद कर, ए लें अरवा आसिक।।५९।।
मुख न फेरें मोमिन, छाती इन सुभान।
ए करते याद अनुभव, क्यों न आवे असल ईमान।।६०।।
मासूक छाती निरखते, क्यों याद न आवे अर्स।
विचार किए आवे अनुभव, जाको दिल कह्यो अरस-परस।।६१।।
हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में मता हक सब।
अजूं हक आड़े पट रहे, ए देख्या बड़ा तअजुब।।६२।।
पट एही अपने दिलको, हकें सोई दिल अर्स कह्या।
हक पट अर्स सब दिलमें, अब अंतर कहां रह्या।।६३।।
जो विचार विचार विचारिए, तो हक छाती न दिल अंतर।
ए पट आड़ा क्यों रहे, जब हुकमें बांधी कमर।।६४।।
ए क्यों रहे पट अर्समें, पूछ देखो हक इलम।
ओ उड़ाए देसी पट बीच का, जब रूह हुकमें आई कदम।।६५।।
एही पट फरामोस का, दिलमें रही अंतर।
जब हुकमें बंधाई हिम्मत, तब होस में न आवे क्यों कर।।६६।।
दिल अर्स कह्या याही वास्ते, परदा कह्या जहूर।
दोऊ दिलके बीचमें, जो दिल देखे कर सहूर।।६७।।
हक छाती निपट नजीक है, सेहेरग से नजीक कही।
हक सहूर किए बिना, आड़ी अंतर तो रही।।६८।।

हक भी कहे दिलमें, अर्स भी कह्या दिल।
परदा भी कह्या दिलको, आया सहूरें बेवरा निकल।।६९।।
जो पीठ दीजे ब्रह्माण्ड को, हुआ निस दिन हक सहूर।
तब परदा उड़्या फरामोस का, बका अर्स हक हजूर।।७०।।
मेहेबूब छाती की लज्जत, देत नहीं फरामोस।
फरामोस उड़े आवे लज्जत, सो लज्जत हाथ प्रेम जोस।।७१।।
इस्क जोस और इलम, ए हक हुकम के हाथ।
तब हक हैड़ा ना छूटहीं, ए सब सुख हैड़े साथ।।७२।।
ए मेहेर करें जो मासूक, तो रूह हुकमें बाधें कमर।
तब फरामोसी दूर दिलसे, हक हैड़े चुभी नजर।।७३।।
ए होए हक निसबतें, रूहों हुकम देवे हिंमत।
तब फरामोसी रेहे ना सके, दे हक छाती लाड़ लज्जत।।७४।।
इन विध छाती न छूटहीं, रूहों सों निस दिन।
असल सुख हक हैड़े के, ए लज्जत लगे अर्स तन।।७५।।
जोस इस्क सुख अर्स के, ए लगें रूह मोमिन।
जब ए सबे मदत हुए, तब क्यों रहे पट रूहन।।७६।।
असल नींद सो फरामोसी, फरामोसी सोई अंतर।
जो अर्स लज्जत आवहीं, तो इलमें तबहीं जुड़े नजर।।७७।।
इलम सहूर मेहेर हुकम, ए चारों चीजें होंए एक ठौर।
तिन खैंच लिया मता अर्स का, पट नहीं कोई और।।७८।।
अर्स तन दिल में ए दिल, दिल अन्तर पट कछू नाहें।
सुख लज्जत अर्स तन खैंचहीं, तब क्यों रहे अन्तर माहें।।७९।।

सुपन होत दिल भीतर, रूह कहूं ना निकसत।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ए तो दिल में बड़ा देखत।।८०।।

हक छाती रूहथें न छूटहीं, नजर न सके फेर।
जो कोई रूह अर्स की, ताए हक बिना सब अन्धेर।।८१।।

हक छाती में लाड़ लज्जत, और छाती में असल आराम।
ए सब सुख को रस पूरन, तो रूह लग रही आठों जाम।।८२।।

रूहों हक छाती चुभ रही, सो देवे लज्जत अरवाहों को।
असल सुख सागर भयो, देखें अर्स आराम सबमों।।८३।।

ए जो हक हैड़े की खूबियां, सो क्या केहेसी बुध माफक।
पर ए कहे हक हुकम, और हक इलम बेसक।।८४।।

रूह खड़ी करे हुकम, और बेसक लदुन्नी इलम।
ना तो रूह कहे क्यों नींद में, हक हैड़ा बका खसम।।८५।।

महामत कहे बोलूं हुकमें, अर्स मसाला ले।
दरगाही रूहन को, सुख असल देने के।।८६।।

।।सिनगार।।प्रकरण।।११।।

खभे कण्ठ मुखारविंद सोभा समूह
मंगलाचरण

मुख मेरे मेहेबूब का, रंग अति उज्जल गुलाल।
क्यों कहूं सलूकी नाजुकी, नूर तजल्ली नूरजमाल।।१।।

बाहें मेरे मासूक की, प्यारी लगें मेरी रूह।
हक हुकम यों कहावत, सो वाही जाने हकहू।।२।।

अंग रंग सलूकी सुभान की, चकलाई उज्जल गौर।
नाम सुनत इन अंग के, जीवरा न होत चूर चूर।।३।।
ए छबि अंग अर्स के, जोत अंग हक मूरत।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत।।४।।
खभे देत दोऊ खूबियां, रूह देख देख होए खुसाल।
जो नेक आवे अर्स की लज्जत, तो रोम रोम लगे रूह भाल।।५।।
खभे मच्छे कोनिया, और कलाइयां काड़न।
पोहोंचे हथेली अंगुरी, नूर क्यों कर कहूं नखन।।६।।
जोत नखन की क्यों कहूं, अवकास रह्यो भराए।
तामें जोत नखन की, नेहेरें चलियां जाए।।७।।
ज्यों ज्यों हाथ की अंगुरी, होत है चलवन।
त्यों त्यों नख जोत आकास में, नेहेरें चीर चली रोसन।।८।।
एक अंग जो निरखिए, तो निकस जाए उमर।
एक अंग बरनन ना होवहीं, तो होए सरूप बरनन क्यों कर।।९।।
अति गौर हस्त कमल, अति नरम अति सलूक।
ए हस्त चकलाई देखके, जीवरा होत नहीं टूक टूक।।१०।।
काड़े कलाई कोनियां, इन अंग रंग सलूक।
फेर मच्छे खभे लग देखिए, रूह क्यों न होए भूक भूक।।११।।
ए अंग सारे रस भरे, सब संधों संध इस्क।
सहूर किए जीवरा उड़े, अर्स अंग वाहेदत हक।।१२।।
जीवरा न समझे अर्स को, ना सहूर करे वाहेदत।
रूहें भूल गई लाड़ लज्जत, ना सुध रही निसबत।।१३।।

।। मंगलाचरन तमाम।।

अब कहूं कण्ठ सोभा मुख की, और इस्क सबों अंग।
आसिक दिल छबि चुभ रही, मासूक रूप रस रंग।।१४।।
ए जो कोमलता कण्ठ की, क्यों कहूं चकलाई गौर।
नेक कह्या जात ख्वाब में, जो हकें दिया सहूर।।१५।।
गौर केहेती हों मुखसे, सो देख के अंग इतका।
ए जुबां दृष्ट इत फना की, सोभा क्यों कहे कण्ठ बका।।१६।।
कण्ठ गौर कई सुख देवहीं, जो कछू खोले रूह नजर।
सो होत हक के हुकमें, जिनने करी नजीक फजर।।१७।।
ए जो लज्जत लाड़ की, सोभी हुई हाथ इजन।
जिन निसबतें बेसक करी, ताए क्यों न आवे लज्जत तन।।१८।।
ना तो बेसक जब निसबत, तब रूह क्यों करे फरामोस।
ए देह जो सुपन की, खिन में उड़ावे हक जोस।।१९।।
ए जो देखो सहूर करके, भई आड़ी हक आमर।
ना तो बल करते धनी बेसक, ए देह ख्वाब रहे क्यों कर।।२०।।
प्रीत रीत इस्क की, इस्कै सहज सनेह।
निस दिन बरसत इस्क, नख सिख भीगे सब देह।।२१।।
भौं भृकुटी पल पापण, मुसकत लवने निलवट।
इन विध जब मुख निरखिए, तब खुलें हिरदे के पट।।२२।।
छब फब नई एक भांत की, श्रवन गाल मुसकत।
लाल अधुर मुख नासिका, जानों गौर हरवटी हंसत।।२३।।
हाथ पांउं पेट हैयड़ा, कण्ठ हार भूखन वस्तर।
ए सब अंग हक के मुसकत, और नाचत हैं मिलकर।।२४।।

बल बल जांउं मुख हकके, सोभा अति सुन्दर।
ए छबि हिरदे तो आवहीं, जो रूह हुकमें जागे अंदर।।२५।।
हक मुख छब हिरदे मिने, जो आवे अंतस्करन।
तिन भेली लज्जत लाड़ की, आवे अर्स के अंग वतन।।२६।।
गौर मुख लाल अधुर, ए जो सलूकी सोभित।
एह जुबां तो केहे सके, जो कोई होए निमूना इत।।२७।।
कहे जाएं न गौर गलस्थल, और अधुर लालक।
मुख चकलाई हक की, सब रस भरे नूर इस्क।।२८।।
लाल जुबां दंत अधुर, हरवटी गौर हंसत।
जब बातून नजरों देखिए, तब रूह सुख पावत।।२९।।
अधुर हरवटी बीच में, क्यों कहूं लांक सलूक।
एही अचरज मोहे होत है, दिल देख न होत भूक भूक।।३०।।
दोऊ छेद्र चकलाई नासिका, गौर रंग उज्जल।
तिलक निलाट कई रंगों, नए नए देखत माहें पल।।३१।।
नैन रस भरे रंगीले, चंचल चपल भरे सरम।
ए अरवाहें जानें अर्स की, जो मेहेरम बका हरम।।३२।।
नेत्र अनियां अति तीखियां, रस इस्क भरे पूरन।
ए खैंचें जिन रूह ऊपर, ताए सालत हैं निस दिन।।३३।।
स्याम सेत भौंह लवने, नेत्र गौर गिरदवाए।
स्याह पुतली बीच सुपेतमें, जंग जोर करत सदाए।।३४।।
सोभा धरत अति श्रवनों, मोती उज्जल बीच लाल।
ए मुख रूह जब देखहीं, बल बल जाऊं तिन हाल।।३५।।

प्यारी बातें करे जब आसिक, हेतें सुनत हक कान।
क्यों कहूं सुख तिन रूह के, जो प्यार कर सुनें सुभान।।३६।।
रूह बात करे एक हक सों, हक देत पड़उत्तर चार।
कुरबान जाऊं हक हादीकी, जासों हक करें यों प्यार।।३७।।
ए छबि अंग अर्स के, जो अंग हक मूरत।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत।।३८।।
कांध केस पेच पगरी, पीठ लीक रूप रंग।
हाए हाए जीवरा ना उड़े, केहेते अर्स रेहेमानी अंग।।३९।।
पाग सोभित सिर हक के, बनी हक दिल चाहेल।
सो इन जुबां क्यों केहे सके, जाकी दृष्ट अंग इन खेल।।४०।।
दुगदुगी सोभा तो कहूं, जो पगड़ी सोभा होए और।
जोत करे हक दिल चाही, कोई तरफ बनी इन ठौर।।४१।।
ए क्यों आवे जुगत जुबां मिने, क्यों कहूं एह सलूक।
जो ए तरह आवे रूह दिल में, तो तबहीं होवे टूक टूक।।४२।।
इन पागै में है दुगदुगी, बनी पागै में कलंगी।
ए जंग करे जोत जोत सों, ए बनायल हक दिल की।।४३।।
कई जिनसें कई जुगतें, कई तरह भांत सलूकी ए।
कई रंग नंग तेज रोसनी, नूर छायो अंबर जिमी जे।।४४।।
जित चाहिए ठौर दुगदुगी, सब बनी पाग पर तित।
ठौर कलंगी के कलंगी, सिफत न जुबां पोहोंचत।।४५।।
कई सुख सलूकी इन पाग में, मैं तो कहूं बिध एक।
दिल चाही रूह देखत, एक खिन में रूप अनेक।।४६।।

ना कछू खोली ना फेर बांधी, इन पागै में कई गुन।
पल पल में सुख दिल चाहे, नए नए देत रूहन।।४७।।
या विध के सुख देत हैं, वस्तर या भूखन।
सुख हक सरूप सिनगार के, किन विध कहूं मुख इन।।४८।।
तिलक नासिका नेत्र की, केस लवने कांन गाल।
मुख चौक देख नैन रूह के, रोम रोम छेदे ज्यों भाल।।४९।।
मुख सुन्दरता क्यों कहूं, नूरजमाल सूरत।
ए बयान दुनी में क्यों करूं, ए जो आई अर्स न्यामत।।५०।।
ए मुख देख सुख पाइए, उपजत है अति प्यार।
देख देख जो देखिए, तो रूह पावे करार।।५१।।
जो देखूं मुख सलूकी, तो चुभ रहे रूह माहें।
ए सुख मुख अर्स का, केहे ना सके जुबांए।।५२।।
गौर निलवट रंग उज्जल, जाऊं बल बल मुखारबिंद।
ए रस रंग छबि देखिए, काढ़त विरहा निकन्द।।५३।।
जो मुख सोभा देखिए, तो उपजत रूह आराम।
आठों पोहोर आसिक, एही मांगत है ताम।।५४।।
जो गौर रंग देखिए, जुबां कहा कहे हक मान।
और कछू न देवे देखाई, आगूं अर्स सुभान।।५५।।
हंसत सोभित मुख हरवटी, अति सुन्दर सुखदाए।
हाए हाए रूह नजर यासों बांध के, क्यों टूक टूक होए न जाए।।५६।।
अति गौर सुन्दर हरवटी, और अतंत सोभा सलूक।
बड़ा अचरज ए देखिया, जीवरा सुनत न होए टूक टूक।।५७।।

हरवटी अधुर बीच लांक जो, मुख अधुर दोऊ लाल।
ए लाली मुख देखे पीछे, हाए हाए लगत न हैड़े भाल।।५८।।
सोभित हंसत हरवटी, बड़ी अचरज सलूकी मुख।
रूह देखे अन्तर आंखां खोलके, तो उपजे अर्स सुख।।५९।।
क्यों कहूं गौर गालन की, सोभित अति सुन्दर।
जो देखूं नैना भरके, तो सुख उपजे रूह अन्दर।।६०।।
क्यों कहूं गाल की सलूकी, क्यों कहूं गाल का रंग।
अनेक गुन गालन में, ज्यों जोत किरन रंग तरंग।।६१।।
बारीक सुख सरूप के, कोई जाने रूह मोमिन।
इस्क इलम जोस याही को, जाके होसी अर्स में तन।।६२।।
ए मुख अचरज अदभुत, गुन केते कहूं गालन।
ए रूहें जाने सुख बारीक, हर गुन अनेक रोसन।।६३।।
रूह के नैना खोल के, देखूं दोऊ गाल।
आसिक को मासूक का, कोई भेद गया रंग लाल।।६४।।
गाल रंग अति उज्जल, गेहेरा अति कसूंबाए।
मेहेबूब मुख देखे पीछे, रूह खिन न सहे अंतराए।।६५।।
ए अंग अर्स सरूप के, क्यों होए बरनन जिमी इन।
ए अचरज अदभुत हकें किया, वास्ते अरवा अर्स के तन।।६६।।
महामत हुकमें केहेत हैं, हक बरनन किया नेक।
और भी कहूं हक हुकमें, अब होसी सब विवेक।।६७।।
।।सिनगार।।प्रकरण।।१२।।

हक मासूक के श्रवण अंग

श्रवन की किन विध कहूं, लेत आसिक इत आराम।
देख सुन सुख पावहीं, आसिक रूह इन ठाम।।१।।
कानन के गुन अनेक हैं, सुख आसिक बिना हिसाब।
आठों जाम इत पीवहीं, अर्स अरवाहें ए सराब।।२।।
देख कोमलता कान की, नैनों सीतलता होए।
आसिक इन सरूप के, ए सुख जानें सोए।।३।।
मासूक का मुख सोभित, देख लवने केस कान।
पेहेचान वाले सुख पावहीं, देख अर्स अजीम सुभान।।४।।
कानों सुनें आसिक की, दिल दे गुझ मासूक।
कहे आधा सुकन इस्क का, आसिक होए जाए भूक भूक।।५।।
मुख जुबां मासूक की, सो भी कानों के ताबीन।
रूह देखे गुन कानन के, जासों हक जुबां होत आधीन।।६।।
हकें आसिक नाम धराइया, वाको भी अर्थ ए।
मासूक उलट आसिक हुआ, सो भी बल कानन के।।७।।
हक कहे मेरा नाम आसिक, सो भी सुनके गुझ मोमिन।
ए जानें अरवा अर्स की, कहूं केते कानों गुन।।८।।
खावंद अर्स अजीम का, गुझ सुनत रात दिन।
ए जो अरवाहें अर्स की, कई सुख लेवें कानन।।९।।
हक आसिक हुआ याही वास्ते, सो रूहें क्यों न सुनें हक बात।
ए कौन जाने अर्स रूहों बिना, कान गुन अंग अख्यात।।१०।।

बोहोत बड़े गुन कान के, बिना आसिक न जाने कोए।
कई गुझ गुन श्रवन के, और कोई जाने जो दूसरा होए।।११।।
और देखो गुन कानन के, जब हक देत रूहों कान।
वाको ले अपने नजर में, देखें सनकूल दृश्ट सुभान।।१२।।
सब सुख पावे रूह तिनसों, हुए नेत्र भी कानों तालूक।
सीतल दृश्टें देखत, ए जो मासूक मलूक।।१३।।
ए सब बरकत कानों की, सो सुन सुन रूहकी बान।
दिल भी हक तहां देत हैं, मेहेर करत मेहेरबान।।१४।।
ए गुन सब कानन के, कई गुझ सुख रूह परवान।
रूहें कई सुख कानों लेत हैं, रेहेमत इन रेहेमान।।१५।।
हक इस्क जो करत है, सो सब कानों की बरकत।
अनेक सुख हैं इनमें, सो जानें हक निसबत।।१६।।
आसिक जाए कहूं ना सके, छोड़ सुख हक श्रवन।
हिसाब नहीं गुन कानोंके, कोई सके न ए गुन गिन।।१७।।
खोल देखो एक इस्क को, तो कई सुख अर्स अपार।
सो सुख लेसी कर बेवरा, जो होसी निसबती हुसियार।।१८।।
दिल के सुख केते कहूं, जो हक दिल दरिया पूरन।
सब अंग ताबे दिल के, होसी अर्समें हिसाब इन।।१९।।
तो इन जुबां क्यों होवहीं, हक हादी सागर सुख।
ए बारीक सुख बीच अर्स के, होसी मूल मेलेके मुख।।२०।।
जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो सुख जानें एक हक श्रवन।
एक एक के कई अनेक, सो कई गुन मगज लेवें मोमिन।।२१।।

कई अंग ताबे कान के, कान अंग सिरदार।
कोई होसी रूह अर्स की, सो जानेगी जाननहार।।२२।।
इलम भी ताबे कानों के, जो इलम कह्या बेसक।
ए झूठी जिमिएं सेहेरग से नजीक, इन इलमें पाइए इत हक।।२३।।
कई गुन हैं कानन के, जाके ताबे दिल खसम।
क्यों सिफत कहूं इन दिलकी, जिन दिल ताबे हुकम।।२४।।
हुकम इलम ताबे कान के, मेहेर दिल ताबे इस्क के।
क्यों कहूं इनसे आगे वचन, कानों ताबे भाए सागर ए।।२५।।
निकस न सके आसिक, हक के एक अंग से।
तिन अंग ताबे कई सागर, अर्स रूहें पड़ी इनमें।।२६।।
जो सागर कहे ताबे कान के, तिन सागरों ताबे कई सागर।
जो गुन देखूं हक एक अंग, याथें रूह निकसे क्यों कर।।२७।।
जो गुन मैं केहेती हों, हक अंग गुन अपार।
अर्स रूहें गिनें गुन अंग के, सो गुन आवे न कोई सुमार।।२८।।
सुनो मोमिनों एक ए गुन, एक अंग ऊपर के कान।
अंग अपार कहे कई बातून, अजूं जुदे भूखन सुभान।।२९।।
जैसी सोभा देखों साहेब की, तैसे कानों पेहेने भूखन।
आसमान जिमी के बीच में, हो रही सबे रोसन।।३०।।
एक अंगमें कई खूबियां, सो एक खूबी कही न जाए।
तिन खूबी में कई खूबियां, गिनती होए न ताए।।३१।।
सो खूबियां भी अर्स की, जाके कायम सुख अखंड।
सो कायम सुख इत क्यों कहूं, ए जो जुबां इन पिंड।।३२।।

क्यों बरनों अर्स अंग को, एक अंग में अनेक रंग।
जो देखों ताके एक रंग को, तिन रंग रंग कई तरंग।।३३।।
सो एक तरंग ना केहे सकों, एक तरंगे कई किरन।
जो देखूं एक किरन को, तो पार ना पाऊं गुन गिन।।३४।।
एह निमूना देत हों, सो रूहें जानें जो सिफत करत।
जथार्थ सब्द न पोहोंचहीं, तो जुबां पोहोंचे क्यों हक सिफत।।३५।।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो सुन जीव गोते खाए।
दम ख्वाबी बानी वाहेदत की, सुनते ही उड़ जाए।।३६।।
श्रवन गुन गंज क्यों कहूं, जाके ताबे हुए कई गंज।
इन गंजों गुन सुख सो जानहीं, जिन बका हक समझ।।३७।।
गुन एक अंग कह्यो न जावहीं, जो देखों दिल धर।
तो गंज अलेखे अपार के, सुख कहूं क्यों कर।।३८।।
जब देखों गुन श्रवना, जानों कोई न इन सरभर।
सहूर करों एक गुन सुख, तो जाए निकस उमर।।३९।।
ताथें सुख और अंगों के, सो भी लिए दिल चाहे।
ना तो श्रवन ताबे कई गंज हुए, ताको एक गुन दिल न समाए।।४०।।
ए सुख बिना हिसाब के, ए जानें मोमिन दिल अर्स।
ए रस जिन रूहों पिया, सोई जाने दिल अरस-परस।।४१।।
जो देखी सारी कुदरत, सो भी इन श्रवन की बरकत।
जो विचार करों इन तरफ को, तो देखों सबमें एही सिफत।।४२।।
जो सहूर कीजे हक सिफतें, तो ए तो हक बका श्रवन।
ए सुख क्यों आवें सुमार में, कछू लिया अर्स दिल मोमिन।।४३।।

जेता सहूर जो कीजिए, सब सिफतें सिफत बढ़त।
जो कदी आई बोए इस्क, तो मुख ना हरफ कढ़त।।४४।।
कहे हुकमें महामत मोमिनों, क्यों कहे जाए गुन कानन।
जाके ताबे कई गंज सागर, ए सुख सेहे सकें अर्स के तन।।४५।।
।। सिनगार।। प्रकरण।।१३।।

हक मासूक के नेत्र अंग

देखों नैना नूरजमाल, जो रूहों पर सनकूल।
अरवा होए जो अर्स की, सो जिन जाओ खिन भूल।।१।।
दिल अर्स नाम धराए के, नैना बरनों नूरजमाल।
हाए हाए छेद न पड़े छाती मिने, रोम रोम लगे ना रूह भाल।।२।।
जो अरवा कहावे अर्स की, सुने बेसक हक बयान।
हाए हाए ए झूठी देहको छोड़के, पोहोंचत ना तित प्रान।।३।।
सिफत पाई हक नैन की, हक नैनों में गुन अपार।
सो गुन अखंड अर्स के, ए रंग हमेसा करार।।४।।
गुन नैनों के क्यों कहूं, रस भरे रंगीले।
मीठे लगें मरोरते, अति सुन्दर अलबेले।।५।।
सोभावंत कई सुख लिए, तेजवंत तारे।
बंके नैन मरोरत मासूक, सब अंग भेदत अनियारे।।६।।
मेहेर भरे मासूक के, सोहें नैन सुन्दर।
भृकुटी स्याम सोभा लिए, चुभ रेहेत रूह अंदर।।७।।
जोत धरत कई जुगतें, निहायत मान भरे।
लज्या लिए पल पांपण, आनंद सुख अगरे।।८।।

नैनों की गति क्यों कहूं, गुनवंते गंभीर।
चंचल चपल ऐसे लगें, सालत सकल सरीर।।९।।
नूर भरे नैना निरमल, प्रेम भरे प्यारे।
रस उपजावत रंगसों, मानों अति कामन-गारे।।१०।।
जब खैंचत भर कसीस, तब मुतलक डारत मार।
इन विध भेदत सब अंगों, मूल तन मिटत विकार।।११।।
निपट बंकी छबि नैन की, नूरै के तारे कारे।
सोभें सेत लालक लिए, नूर जोत उजियारे।।१२।।
बड़े लम्बे टेढ़क लिए, अति अनियां सोभे ऊपर।
सीतल करूना अमी झरे, मद रंग भरे सुन्दर।।१३।।
सोहत छैल छबीले, कहा कहूं सलूक।
एह नैन निरखे पीछे, हाए हाए जीव न होत भूक भूक।।१४।।
दयासिंध सुख सागर, इस्क गंज अपार।
सराब पिलावत नैन सों, साकी ए सिरदार।।१५।।
छब फब इन नैनों की, जो रूह देखे खोल नैन।
आठों पोहोर न निकसे, पावे आसिक अंग सुख चैन।।१६।।
प्रेम पुंज गंज गंभीर, नेत्र सदा सुखदाए।
जो रूह मिलावे नैन नैनसों, तो चोट फूट निकसे अंग ताए।।१७।।
सीतल दृश्ट मासूक की, जासों होइए सनकूल।
होए आसिक इन सरूप की, पाव पल न सके भूल।।१८।।
नैन देखें नैन रूह के, तिनसों लेवे रंग रस।
तब आवें दिल में मासूक, सो दिल मोमिन अरस-परस।।१९।।

रूह देखे हक नैन को, नेत्र में गुन अनेक।
सो गुन गिनती में न आवहीं, और केहेने को नैन एक।।२०।।
कई गुन देखे छब फब में, कई गुन माहें सलूक।
गुन गिनते इन नैनों के, हाए हाए अजूं न होए दिल भूक।।२१।।
मेरी रूह नैनकी पुतली, तिन नैन पुतली के नैन।
मासूक राखूं तिन बीचमें, तो पाऊं अर्स सुख चैन।।२२।।
प्रेम प्रीत रस इस्क, सब नैनों में देखाई देत।
ए रस जानें रूहें अर्सकी, जो भर भर प्याले लेत।।२३।।
देख देख जो देखिए, तो अधिक अधिक अधिक।
नैन देखे सुख पाइए, जानों सब अंगों इस्क।।२४।।
ए नैन देख मासूक के, आसिक के सब अंग।
सुख सीतल यों चुभत, सब अंग बढ़त रस रंग।।२५।।
कई गुन बड़े नैनके, और कई गुन नैन टेढ़ाए।
कई गुन तेज तारन में, कई गुन हैं चंचलाए।।२६।।
कई गुन हैं तिरछाई में, कई गुन पांपण पल।
कई गुन सीतल कई मेहेरमें, कई तीखे गुन नेहेचल।।२७।।
कई गुन सोभा सुन्दर, कई गुन प्रेम इस्क।
कई गुन नैन रंग में, कई गुन नैन रस हक।।२८।।
कई गुन नैनों के नूर में, कई गुन नैनों के हेत।
कई गुन तीखे कई सील में, गुन मीठे कई सुख देत।।२९।।
कई गुन केते कहूं, गुन को न आवे पार।
ए भूल देखो अपनी, ए सोभा गुन गिनूं माहें सुमार।।३०।।

कई गुन नेत्र सुभान के, सो क्यों कहूं चतुराई इन।
इत जुबां बल न पोहोंचहीं, हिस्सा कोटमा एक गुन।।३१।।
प्यारे मेरे प्राण के, नैना सुख सागर सलोने।
रेहे ना सकों बिना रंगीले, जो कसूंबड़ी उजलक में।।३२।।
जब देखों सीतल नजरों, सब ठरत आसिक के अंग।
सब सुख उपजे अर्स में, हक मासूक के संग।।३३।।
मैं नैनों देखूं नैन हक के, हुई चारों पुतली तेज पुन्ज।
जब नैन मिलें नैन नैन में, नूरै नूर हुआ एक गन्ज।।३४।।
हक देखें पुतली अपनी, मैं देखूं अपनी पुतलियां।
मैं हक देखूं हक देखें मुझे, यों दोऊ अरस-परस भैयां।।३५।।
हक देखें मेरे नैन में, पुतली जो अपनी।
मैं अपनी देखूं हक नैन में, यों दोऊ जुगलें जुगल बनी।।३६।।
अति गौर पांपण नैन की, पल वालत देखत सरम।
गुन गरभित मेहेरें पाइए, रूह हुकमें देखे ए मरम।।३७।।
स्याम बंके भौंह नैनों पर, रंग गौर जुड़े दोऊ आए।
निपट तीखी अनियां नेत्र की, मारे आसिकों बान फिराए।।३८।।
जब खैंचत नैना जोड़ के, तब दोऊ बान छाती छेदत।
अंग आसिक के फूट के, वार पार निकसत।।३९।।
दमानक ज्यों कहूं कहूं, यों पीछली देत गिराए।
ए चोट आसिक जानहीं, जो होए अर्स अरवाए।।४०।।
भौंह बंके नैन कमान ज्यों, भाल बंकी सामी तीन बल।
बान टेढ़े मारत खैंच मरोर के, छाती छेद न गया निकल।।४१।।

तीर कह्या तीन अंकुड़ा, छाती छेद न गया चल।
रह्या सीने बीच आसिक के, हुआ काढ़ना रूहों मुस्किल।।४२।।

केहेर कह्या तीर त्रगुड़ा, रही सीने बीच भाल।
रोई रात दिन आसिक, रोवते ही बदल्या हाल।।४३।।

अर्स बका तीर त्रगुडा, रह्या अर्स रूहों हिरदे साल।
ना पांच तत्व तीर त्रिगुन, ए नैन बान नूरजमाल।।४४।।

ए बलवान सेहेज के, जो कदी मारें दिलमें ले।
न जानों तिन आसिक का, कौन हाल होवे ए।।४५।।

ए बान टेढ़े अव्वल के, और टेढ़े लिए चढ़ाए।
खैंच टेढ़े मारें मरोर के, सो क्यों न आसिक टेढ़ाए।।४६।।

कहें गुन महामत मोमिनों, नैना रस भरे मासूक के।
अपार गुन गिनती मिने, क्यों कर आवें ए।।४७।।

।।सिनगार।।प्रकरण।। १४।।

हक मेहेबूब की नासिका

गौर निरमल नासिका, सोभा न आवे माहें सुमार।
आसिक जाने मासूक की, जो खुले होंए पट द्वार।।१।।

निपट सोभा है नासिका, सोहे तैसा ही तिलक।
और नहीं इनका निमूना, ए सरूप अर्स हक।।२।।

कई खसबोए अर्स की, लेवत है नासिका।
दोऊ नैनो के बीच में, सोभा क्यों कहूं सुन्दरता।।३।।

रंग उजलाई अर्स की, झांई झलके कंसूब बका।
देत सलूकी कई सुख, रूह नैन को नासिका।।४।।

ए छब फब कोई भांत की, निलाट तिलक बीच नैन।
ए आसिक नासिका देख के, पावत हैं सुख चैन।।५।।
भौंह भासत भली भांतसों, पांपण पलकों पर।
ए नैन सोभा नूर जहूर, ए जाने मोमिन अन्तर।।६।।
अर्स फूल सुगन्ध अनगिनती, हिसाब नहीं कहूं कोए।
रसांग चीज सब अर्स की, कोई जरा न बिना खुसबोए।।७।।
सो खुसबोए सब लेत है, रस प्रेमल सुगन्ध सार।
सब भोग विवेकें लेत है, हक नासिका भोगतार।।८।।
ए को जानें रस सबन के, को जाने भोग सबन।
ए सब भोगी हक नासिका, हक सुख लेत देत रूहन।।९।।
चित्त चाह्या नासिका भूखन, खुसबोए लेत चित्त चाहे।
चित्त चाही जोत सोभा धरे, सुख आसिक अंग न समाए।।१०।।
हक सुख खुसबोए के, कई नए नए भोग लेत।
ले ले हक विवेक सों, नए नए रूहों सुख देत।।११।।
कई कई लाड रूहन के, लेत देत अरस-परस।
नित नए सुख देत सनेह सों, जानों नया दूजा लिया सरस।।१२।।
नित लेत प्रेम सुख अर्स में, जानों आज लिया नया भोग।
यों हक देत जो हम को, नित नए प्रेम संजोग।।१३।।
जिमी जल तेज वाए बन, जो कछू बीच आसमान।
सब खुसबोए नूर में, सुख देत रूहों सुभान।।१४।।
महामत कहे हक नासिका, याकी सोभा न आवे सुमार।
कछू बड़ी रूह मोमिन जानहीं, जाको निस दिन एही विचार।।१५।।
।।सिनगार।।प्रकरण।।१५।।

हक मासूक की जुबान की सिफत

जाको नामै रसना, होसी कैसी मीठी हक।
जिनकी जैसी बुजरकी, जुबां होत है तिन माफक।।१।।
केहेनी में न आवहीं, विचार देखें मोमिन।
होए जाग्रत अरवा अर्स की, कछू सो देखे रसना रोसन।।२।।
अति मीठी जुबां मासूक की, देत आसिक को सुख।
कछू अर्स सहूरें सुख लीजिए, पर कह्यो न जाए या मुख।।३।।
ए याद किए हक रसना, आवत है इस्क।
जिन इस्कें अर्स देखिए,सुख पाइए हक मुतलक।।४।।
और सुख हक दिल में, जाहेर होत रसनाए।
एह सिफत किन बिध कहूं, जो रेहेत हक मुख माहें।।५।।
बोहोत सुख हक तन में, जाहेर करें हक नैन।
सब पूरा सुख तब पाइए, जब कहे रसना मुख बैन ।।६।।
हर अंग सुख दें हक के, ऊपर जाहेर सुख जुबान।
बड़ा सुख रूहों होत है, जब हक मुख करें बयान।।७।।
ए बेवरा पाइए बीच खेल के, कम ज्यादा अर्स में नाहें।
समान अंग सब हक के, ए विचार नहीं अर्स माहें।।८।।
बोहोत बातें सुख अर्स के, सो पाइयत हैं इत।
सुख उमत को अर्स में, ए जानती न थीं निसबत।।९।।
सुख जानें न हक पातसाही, सुख जानें न हक इस्क।
सुख जानें ना रूहें लाड़ के, तो इत इलम दिया बेसक।।१०।।
तो हक अंग सुख खेल में, बेवरा करत हुकम।
अजूं न आवे नजरों सरूप, ना तो क्यों वरनवाए खसम।।११।।

हकें हम रूहों वास्ते, अनेक वचन कहे मुख।
सो रूहें जागे हक इस्क का, आपन लेसी अर्स में सुख।।१२।।
सुख अनेक दिए हक रसनाएं, और सुख अलेखे अनेक।
सो जागे रूहें सब पावहीं, ताथें रसना सुख विसेक।।१३।।
हकें खेल देखाया याही वास्ते, सुख देखावने अपने अंग।
सुख लेसी बड़ा इस्क का, रूहें ले विरहा मिलसी संग।।१४।।
दायम इस्क सबों अपना, रूहें केहेती अपनी जुबान।
याही रसना बल वास्ते, खेल देखाया सुभान।।१५।।
एक हुकम जुबां के सब हुआ, तिन हुकमें चले कई हुकम।
सो जेता सब्द दुनीय में, ए सब हम वास्ते किया खसम।।१६।।
हक जुबान की बुजरकी, किया खेल में बड़ा विस्तार।
सो सुख लेसी हम अर्स में, जिनको नहीं सुमार।।१७।।
जेती चीज जरा कोई खेल में, सो हक हुकमें हलत चलत।
सो सुख दिए हक रसनाएं, हम केती करें सिफत।।१८।।
कलाम अल्ला या हदीसें, सास्त्र पुरान या वेद।
ए सब सुख लेवे मोमिन, हक रसना के भेद।।१९।।
खेल किया याही वास्ते, हकें सुख दिए जुबान।
सो मेरी इन जुबान सों, क्यों कर होए बयान।।२०।।
ए बयान होसी बीच अर्स के, हम रूहें मिल जासी जब।
हक जुबान का बेवरा, हम लेसी अर्स में तब।।२१।।
बड़े बयान बातें कई, जो हक जुबांएं दिए इत।
इत बेवरा कर जाए अर्स में, लेसी लज्जत बीच खिलवत।।२२।।

ए बारीक सुख अर्स के, हक जुबांएं दई न्यामत।
और न कोई पावहीं, बिना हक निसबत।।२३।।
हक रूहों को बुलाए के, नजीक बैठाई ले।
ए जाहेर करत है रसना, ए जो अन्तर का सनेह।।२४।।
मीठी जुबां बोलत मासूक, रूहें प्यारी आसिक सों।
ऐसा मीठा अर्स खावंद, जाके बोल चुभें हिरदे मों।।२५।।
प्यारी रसना सों अनेक, प्यारी बातें करें बनाए।
प्यारे प्यारी रूह बीच में, ए गुन जुबां किने न गिनाए।।२६।।
मीठी जुबां मीठे वचन, मीठा हक मीठा रूहों प्यार।
मीठी रूह पावे मीठे अर्स की, जो मीठा करे विचार।।२७।।
प्यारी खिलवत में प्यारी रसना, होत वचन कदीम।
सो इन जुबां प्यार क्यों कहूं, जो हक हादी रूहें हलीम।।२८।।
सब अंग जिनके इस्क के, तिनकी कैसी होसी जुबान।
अर्स रूहें जानें जाग्रत, जो रहें सदा कदमों सुभान।।२९।।
मेरी रूह देखे सहूर कर, जाके नख सिख लग इस्क।
जुबां कैसी तिन होएसी, और बानी बका अर्स हक।।३०।।
हक रसना बोले जो अर्स में, जिन किन को वचन।
सो सब कारन जानियो, वास्ते सुख रूहन।।३१।।
खेलावत हक बोलाए के, या पंखी या पसुअन।
सो सब रूहों वास्ते, सब को एह कारन।।३२।।
खेलते बोलते नाचते, या देखें खेल लराए।
सो सब वास्ते रूहन के, कई विध खेल कराए।।३३।।

कहूं केती बातें हक रसना, निपट बड़ो विस्तार।
क्यों कहूं जो किए रूहोंसों, हक जुबां के प्यार।।३४।।
हक रसना गुन खेलमें, पाव हरफ को होए न सुमार।
तो जो गुन रसना अर्स में, ताको क्यों कर पाइए पार।।३५।।
ए बेवरा जानें रूहें अर्सकी, जाको हुआ हक दीदार।
जाए सिफायत हुई महंमद की, याको जाने सोई विचार।।३६।।
हक रसना गुन जानें रूहें, जाको निस दिन एही ध्यान।
ए खेल कबूतर क्या जानहीं, हक रसना के बयान।।३७।।
जो कछू बोले हक रसना, सो सब वास्ते रूहन।
और जरा हक दिलमें नहीं, ए जानें दिल अर्स मोमिन।।३८।।
जो कछू बोलें हक जुबांन, सो सब रूहों के हेत।
अर्स बोल खेल या चलन, या जो कछू लेत देत।।३९।।
हुकम कहावे मेरी रूह पे, जो हुई मुझमें बीतक।
सो कहूं अर्स रूहों को, जो दिए सुख रसना हक।।४०।।
हक रसना के सुख जो, आवे ना गिनती माहें।
कई सुख अलेखे अपार, क्यों कहे जाएँ जुबाएँ।।४१।।
मीठी मीठी माहें मीठी मीठी, रस रसीली रसना बान।
सुख सुखके माहें कई सुख, सुख क्यों कहूं रसना सुभान।।४२।।
मोहे इलम दिया आए अपना, तासों प्यार दिया मुझको।
चौदे तबक कायम किए, केहेलाए मेरी रसना सों।।४३।।
एक नुकते इलम अपने, दुनी बका कराई मुझसे।
तो गंज अंबार जो सागर, कैसे होसी हक दिल में।।४४।।
जो कोई सब्द बीच दुनियां, सो उठे हुकम के जोर।
ए गुझ सुख हक रसना, कछू मोमिन जानें मरोर।।४५।।

बका करी जो दुनियां, दिया सब को हक इलम।
सो इलम सिफत करे हमारी, हुकमें किया वास्ते हम।।४६।।
ए जो बका किए हम वास्ते, जाने कायम होए सिफत।
सिफत फना की ना रहे, ए हुकमें हम को दई न्यामत।।४७।।
मेहेर करी हक रसनाएं, सो किन विध कहूं विस्तार।
बका सब्द जो उचरे, सो देने रूहों सुख अपार।।४८।।
सब के हक हमको किए, हक रसनाएं बीच बका।
ए सुख इन मुख क्यों कहूं, जो दिया हादी रूहोंको भिस्तका।।४९।।
अर्स के सुख तो हमेसा, घट बढ़ इत नाहें।
पर ए नया सुख नई साहेबी, कायम कर दिया भिस्त माहें।।५०।।
अर्स सुख और भिस्तका सुख, ए खेल में दिए सुख दोए।
इन दोऊ में दिए सुख खेलके, ए हक रसना बिना क्यों होए।।५१।।
दई भिस्त चौदे तबक को, सबों पूरा इस्क इलम।
सो सब सेवें हम को, सबों बल रसना खसम।।५२।।
पेहेले प्यार दिया मुझे इलम सों, सो मुझपे इलम दिवाए।
सब दुनियां को आरिफ कर, मुझ आगे सबपे कथाए।।५३।।
ए सब हक रसनाएं किया, इलम प्यारा लग्या सबन।
सो इलमें आरिफ पूजें मोहे, असल अर्स में हमारे तन।।५४।।
प्यार लग्या मोहे जिनसों, हकें बड़ा किया सोए।
सो सबपे केहेलाए हुकमें, सब विध सुख दिया मोहे।।५५।।
ए सुध नहीं अजूं मोमिनों, जो सुख दिए हक रसनाएं।
हकें सुख दिए आप माफक, सो कह्या जाए न इन जुबाएँ।।५६।।

कर कायम हक रसना रस, सचराचर दिए पोहोंचाए।
यों रसना के रस हम को, सुख कई विध दिए बनाए।।५७।।
सबों इलम पढ़ाए आलम किए, जिनसों था मेरा प्यार।
सो सुख हक रसनाएं दिया, करके बका विस्तार।।५८।।
ए कायम सुख हक तरफके, हक इलम इस्क हुकम।
सुख लाड़ लज्जत हुज्जत के, दिए कायम मेरे खसम।।५९।।
सुध न हुती हक साहेबी, ना सुध इलम वाहेदत।
सुध ना हुज्जत निसबत, सो सुध दई जुबां खिलवत।।६०।।
हक बका सुख कई विध, अर्स में नहीं सुमार।
बिन बूझे सुख हम लेते, हुते न खबरदार।।६१।।
सो आठों भिस्त कायम कर, दिए अर्स पट खोल मारफत।
तिनमें पुजाए सुख दिए, कर जाहेर हक निसबत।।६२।।
हक रसना सुख दिए देत हैं, और सुख देंगे आगूं जे।
सो इतथें सब हम देखत, सुख केते कहूं रसना के।।६३।।
हक रसनाएं ऐसी सुध दई, हुआ है होसी बका माहें।
यों खोली अंतर रूह नजर, ऐसी हुई ना रूहों सों क्यांहें।।६४।।
कहूं केते सुख हक रसना, जैसे आप अलेखे अपार।
सो सब सुख बकामें रूहों, जाको होए न काहूं सुमार।।६५।।
ए नेक कह्या बीच खेल के, हक रसना के गुन।
ए सब बातें मिल करसी, आगूं हक बका वतन।।६६।।
सुनो महामत रसना रस, और सुनाइयो मोमिन।
जो हुकम कहे तोहे हेत कर, हक रसना के गुन।।६७।।

।।सिनगार।।प्रकरण।।१६।।

हक मासूक के वस्त्र

देत निमूना बीच नासूत, जानों क्योंए आवे माहें दिल।
आगूं मेला बड़ा होएसी, लेसी मोमिन ए विध मिल ।।१ ।।
एक देऊं निमूना दुनीका, जो पैदा दुनी में होत ।
धागा होत है रूई का, और जवेरों जोत।।२।।
धागा असल रूई तांतसा, जवेर जैसी जोत नंग ।
हुकमे बनें ताके वस्तर, होए कैसा पेहेनावा अंग।।३।।
पैदा निमूना दुनी का, अर्स जिमिएं नहीं पोहोंचत ।
दुनी निमूना हक को, ए कैसी निसबत।।४।।
जामा कहूं मैं सूत का, के कहूं कपड़ा रेसम।
के कहूं हेम नंग जवेर का, के कहूं अव्वल पसम।।५।।
ए पांचों उत पोहोंचे नहीं, जो कर देखो सहूर ।
क्यों पोहोंचे फना जड़ निमूना, ए हक बका चेतन नूर।।६।।
जो कहूं बका जिमीय के, जवेर या वस्तर।
सो भी रूह के अंग को, सोभा कहिए क्यों कर।।७।।
जो चीज पैदा जिमी की, सो दूसरी कही जात।
चीज दूसरी वाहेदत में, कैसे कर समात।।८।।
हक इलमें चुप कर न सकों, और सब्द में न आवे सिफत।
ताथें हुकम केहेत है, सुनो जामें की जुगत।।९।।
पर कछुक निमूने बिना, नजरों न आवे तफावत।
तो चुप से तो कछू कह्या भला, रूह कछू पावे लज्जत।।१०।।

ए दिल में ले देखिए, अर्स धागा और नंग।
जोत न माए आकास में, जो सोभें पेहेने हक अंग।।११।।
वस्तर नहीं जो पेहेर उतारिए, ए हक अंग नूर रोसन।
दिल चाह्या रंग जोत पोत, अर्स अंग वस्तर भूखन।।१२।।
ए जो कही जुगत जामे की, हक अंग का रोसन।
और भांत सुख आसिकों, पेहेने तन वस्तर भूखन।।१३।।
नीला रंग इजार का, मिहीं चूड़ी घूंटी ऊपर।
तिन पर झलके दावन, हरी झांई आवत नजर।।१४।।
रंग नंग बूटी कछुए, लगत नहीं हाथ को।
ए सुख बारीक अर्स के, इन अंग का नूर अर्स मों।।१५।।
जोत करे दिल चाहती, जैसी नरमाई अंग चाहे।
सोभा धरे दिल चाहती, जुबां खुसबोए कही न जाए।।१६।।
चोली अंग को लग रही, सेत जामा अंग गौर।
चीन से कुसादी दावन, ताको क्योंकर कहूं जहूर।।१७।।
पेहेनावा अर्स अजीम का, क्यों कहिए माहें सुपन।
कंकरी एक अर्स की, उड़ावे चौदे भवन।।१८।।
वस्तरों में कई रंग हैं, सो हाथ को लगत नाहें।
और भी हाथ लगें नहीं, जो जवेर वस्तरों माहें।।१९।।
रंग रेसम जवेर जो देखत, सो सब मसाला नंग।
वस्तर भूखन सब नंगों के, माहें अनेक देखावें रंग।।२०।।
कई बेली किनार में, और कई विध बेली चीन।
बीच बूटी छापे कई नकस, इन जल की जाने जल मीन।।२१।।

रंग कंचन कमर कस्या, पटुका जो पूरन।
केते रंग इनमें कहूं, जानों एही सबे भूखन।।२२।।
सो रंग सारे जवेरन के, कई रंग छेड़े किनार।
हर धागे रंग कई विध, नहीं रंग जोत सुमार।।२३।।
दोऊ बगलों केवड़े, किन विध कहूं रोसन।
कई रंग नंग माहें झलकत, जामा क्यों कहूं अर्स तन।।२४।।
ए सोभा देख सुख उपजे, हक वस्तर या भूखन।
और इनकी मैं क्यों कहूं, जो रेहेत ऊपर इन तन।।२५।।
गिरवान दोऊ देखत, अति सुन्दर अनूपम।
मुख आगे मासूक के, निरखत अंग आतम।।२६।।
बातें करें सलोनियां, मासूक सलोंने मुख।
नैन सलोंने रस भरे, कई देत आसिकों सुख।।२७।।
दोऊ बेल दोऊ बगलों पर, जानों कुन्दन नंग जड़तर।
नीले पीले लाल जवेर, सुख पाऊं देत नजर।।२८।।
दोऊ बांहें चूड़ी अति सुन्दर, मिहीं मिहीं से लग मोहोरी।
कई रंग नंग चूड़ियों, जवेर जवेर बीच जरी।।२९।।
मोहोरी जड़ाव फूल बने, जानों के एही नंग भूखन।
बेल जामें जो जुगतें, सबथें सोभा अति घन।।३०।।
किन विध जामा लग रह्या, ए जो अंग का जहूर।
कई नकस बूटी मिहीं बेलियां, रूह कर देखे अर्स सहूर।।३१।।
पार न जामें सलूकी, ना कछू नरमाई पार।
इन मुख गुन केते कहूं, खूबी तेज न सुगंध सुमार।।३२।।

इन ऊपर जो भूखन, नेक इनकी कहूं विगत।
क्यों नूर कहूं अर्स अंग का, पर तो भी कहूं नेक मत ।।३३ ।।
धागे बराबर नकस, झीने बारीक अतंत।
ए फूल बेल तो आवें नजरों, जो अंग अंग खुलें वाहेदत ।।३४ ।।
ए नकस सो जानहीं, नैनों देखें जो होए निसबत।
ए देखें याद आवहीं, पेहेले बातें हुई खिलवत ।।३५ ।।
हक पाग जो निरखते, होए अचरज माहें सहूर।
ए याद किए क्यों जीव ना उड़े, देख नूरजमाल मुख नूर ।।३६ ।।
हुकमें पाव पल में, पाग कई कोट होत।
रंग नंग फूल कई नकस, दिल चाही धरे जोत ।।३७ ।।
हक पाग बनावें हाथ अपने, अर्स खावंद दिल दे।
ए देखें रूह सुख पावत, जब हाथ गौर पेच ले ।।३८ ।।
आसिक चाहे मैं देखों, हक यों पेच लेत हाथ माहें।
कई विध फेरें पेच को, कोई इन सुख निमूना नाहें ।।३९ ।।
जो रंग चाहिए जिन मिसलें, सो नंग धरत तित जोत।
फूल नकस कटाव कई, ए कछू अचरज पाग उद्दोत ।।४० ।।
मध्य चौक जित चाहिए, ऊपर चाहिए चौकड़ी जित।
बेल पात सब रंग नंग, सोई बनी पाग जुगत ।।४१ ।।
ताथें हक लेत पेच हाथ में, कोमल अंगुरियों।
गौर अंगुरियां पतली, मीठा सोभें मुंदरियों ।।४२ ।।
पोहोंचे देखूं के अंगुरी, नरमाई देखूं के गौर।
मुंदरी देखूं के हथेलियां, लीकें देखूं के नख नूर ।।४३ ।।

चलवन करते हाथ की, नैनों देखत सब सलूक।
यों देखत मासूक को, अजूं होत न आसिक टूक।।४४।।
महामत निमूना ख्वाब का, क्यों दीजे हक वस्तर।
हक नूर न आवे सब्द में, पर रह्या न जाए क्योंए कर।।४५।।
।।सिनगार।।प्रकरण।।१७।।

हक मेहेबूब के भूखन

भूखन सब्दातीत के, क्यों इत बरनन होए।
सोभा अर्स सरूप की, इत कबहूं न बोल्या कोए।।१।।
तो क्यों माने बीच दुनियां, ए जो हक जात भूखन।
रैन अंधेरी क्यों रहे, जब जाहेर हुआ बका दिन।।२।।
अनेक गुन नंग इनमें, रूह दिल चाह्या जब।
जिन जैसा दिल उपजे, सो होत आगूं से सब।।३।।
जेती अरवाहें अर्स में, ताए मन चाह्या सब होए।
दिल चितवन भी पीछे करे, आगे बनि आवे सोए।।४।।
जैसा मीठा लगे मन को, भूखन तैसा ही बोलत।
गरम ठंढा सब अंग को, चित्त चाह्या लगत।।५।।
हक बरनन करत हों, कहूं नया किया सिनगार।
ए सब्द पोहोंचे नहीं, आवत न माहें सुमार।।६।।
वस्तर और भूखन, ए हक अंग का नूर।
सो निमख न जुदा होवहीं, ज्यों सूरज संग जहूर।।७।।

इन जिमी आसिक क्यों रहे, बिना किए अपनों आहार।
खाना पीना एही आसिकों, अर्स रूहों एही आधार।।८।।
सोई कलंगी सोई दुगदुगी, सोभे पाग ऊपर।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत भरी जिमी अंबर।।९।।
कई विध के सुख जोत में, और कई सुख सुन्दरता।
कई सुख तरह सलूकियां, सिफत पोहोंचे न हक बका।।१०।।
मोतिन की जोत क्यों कहूं, इन जुबां के बल।
सोभा लेत दोऊ श्रवनों, अति सुन्दर निरमल।।११।।
मोती जोत अचरज, और अति उत्तम दोऊ लाल।
जो रूह देखे नैन भर, तो अलबत बदले हाल।।१२।।
कहे जुबां जोत आकास लों, जोतें सोभा कई करोर।
सो बोल न सके जुबां बेवरा, इन अकल के जोर।।१३।।
ए तो मोती लाल कुन्दन, वाहेदत खावंद श्रवन।
आकास जिमी भरे जोत सों, तो कहा अचरज है इन।।१४।।
चोली अंग सों लग रही, ज्यों अंग नूर जहूर।
ए लज्जत दिल तो आवहीं, जो होवे अर्स सहूर।।१५।।
एक देख्या हार हीरन का, कई कोट सूरज उजास।
इन उजास तेज बड़ा फरक, ए सुख सीतल जोत मिठास।।१६।।
हार दूजा मानिक का, जानों उनथें अति सोभाए।
जब लालक इनकी देखिए, जानों और सबे ढंपाए।।१७।।
तीसरा हार अंग देखिया, अति उज्जल जोत मोतिन।
जानों सबथें ऊपर, एही है रोसन।।१८।।

जब हार चौथा देखिए, जानों नीलक अति उजास।
जानों के सरस सबन थें, ए देत खुसाली खास।।१९।।
हार लसनियां पांचमा, कछू ए सुख सोभा और।
जानों जोत जिमी आकास में, भराए रही सब ठौर।।२०।।
जब नंग देखूं नीलवी, जानों एही सुख सागर।
जोत मीठी रंग सुन्दर, जानों के सब ऊपर।।२१।।
हारों बीच जो दुगदुगी, माहें नव रतन।
नव जोत नव रंग की, जानों सब ऊपर ए भूखन।।२२।।
ए जोत सब जुदी जुदी, देखिए माहें आसमान।
सब जोत जोत सों लड़त हैं, कोई सके न काहूं भान।।२३।।
भूखन सामी न देखिए, जो देख्या चाहे जंग।
पेहेले देखिए आकास को, तो जुध करें नंग सों नंग।।२४।।
जो कदी पेहेले हार देखिए, तो वाही नजर भरे जोत।
या बिन कछू न देखिए, सबमें एही उद्दोत।।२५।।
नेक कहूं बाजू बन्ध की, जोत न जामें सुमार।
तो जो नंग बाजू बन्ध के, सो क्यों आवें माहें विचार।।२६।।
नंग पटली दस रंग की, माहें कई विध के नकस।
ए सलूकी बेल बूटियां, एक दूजे पे सरस।।२७।।
लटके बाजू बन्ध फुन्दन, झलकत झाबे अपार।
कई नंग रंग एक झाबे में, सो एक एक बाजू चार चार।।२८।।
तामें नंग कहूं केते जरी, तिन फुन्दन में कई रंग।
रंग रंग में कई किरने, किरन किरन कई तरंग।।२९।।

बांहें हलते फुन्दन लटके, हींचे फुन्दन जोत प्रकास।
बांहें हलते ऐसा देखिए, मानों हींचत नूर आकास।।३०।।
जो पटलियां पोहोंची मिने, सात पटली सात नंग।
सो सातों नंग इन भांत के, मानों चढ़ता आकासे रंग।।३१।।
स्याम सेत नीली पीली, जांबू आसमानी लाल।
हाए हाए करते पोहोंची बरनन, अजूं होस लिए खड़ा हाल।।३२।।
जो एक नंग नीके निरखिए, तो रोम रोम छेदत भाल।
जो लों देखों उपली नजरों, तो लों बदलत नाहीं हाल।।३३।।
कड़ियां कांड़ों सोभित, तिनकी और जुगत।
बल ल्याए कई दोरी नंग, रूह निरखें पाइए विगत।।३४।।
ए नजरों नंग तो आवहीं, जो आवे निसबत प्यार।
ना तो भूखन हाथ हक के, दिल करसी कहा विचार।।३५।।
जुदे जुदे जवेरन की, दस विध की मुंदरी।
दोऊ अंगूठों अंगूठिएं, और मुंदरी आठ अंगुरी।।३६।।
मानिक मोती नीलवी, पाच पांने पुखराज।
लसनिएं और मनी, रहे कुंदन माहें बिराज।।३७।।
ए दसे अंगुरियों मुंदरी, नूर नख अंगुरी पतलियां।
पोहोंचे हथेली उज्जल लीकें, प्रेम पूरन रस भरियां।।३८।।
अब चरनो चारों भूखन, चारों में जुदे जुदे रंग।
जानो के रस जवेर के, जैसे जोत अर्स के नंग।।३९।।
दस रंग नंग माहें झांझरी, ए बानी जुदी झनकार।
ए सोभा अति अनूपम, अर्स के अंग सिनगार।।४०।।

यामें बेल पात नकस कई, कई करकरी फूल कांगरी।
बानी सोभा सुख देत है, घाट अचरज ए झांझरी।।४१।।
और बेली कई नकस, मिहीं मिहीं जुगत जिनस।
जब नीके कर देखिए, जानों सब थें एह सरस।।४२।।
जो सोभावत चरन को, सो केते कहूं गुन इन।
कोई घायल अरवा जानहीं, जो होसी अर्स के तन।।४३।।
भूखन अंग अर्स के, जानसी कोई आसिक।
अनेक सुख गुन गरभित, ए अर्स सूरत अंग हक।।४४।।
दोऊ मिल मधुरे बोलत, लेऊं खुसबोए के सुनों बान।
सोभा कहूं के नरमाई, ए भूखन चरन सुभान।।४५।।
बान मधुरी घूंघरी, ए जुदे रूप रंग रस।
पांच रंग नंग इनमें, जानो उनपे एह सरस।।४६।।
कई करड़े कई बूटियां, नकस नाके रंग और।
ए सोभा कहूं मैं किन मुख, जाको इन चरनो है ठौर।।४७।।
मानो लाल कड़ी मानिक की, माहें कई रंग बेल अनेक।
सिर पतलियों लग रहीं, ए सोभा अति विसेक।।४८।।
इन कड़ी के रूप रंग, मिहीं बेली गिनी न जाए।
मानों पुतली वाही की कांगरी, ए जुगत अति सोभाए।।४९।।
अब कहूं रंग कांबीय के, पेहेरी जंजीर ज्यों जुगत।
जुदे जुदे रंग हर कड़ी, नैना देख न होंए तृपित।।५०।।
अनेक कड़ियां जंजीर में, गिनती होए न ताए।
कई रंग नंग एक कड़ीय में, बेल जंजीर गिनी न जाए।।५१।।

ए विचार कीजे जब दिल से, रूह की खोल नजर।
कड़ी कड़ी के रंग देखिए, गिनते होए जाए फजर।।५२।।

ऊपर खजूरा कड़ियन का, और कई बेल कड़ियों माहें।
तिन बेलों रंग वेली कड़ियों, ए खूबी क्यों कर कहे जुबांए।।५३।।

तेज जोत सोभा सलूकी, रूह केताक देखे ए।
सुखबोए नरम स्वर माधुरी, और कई सुख गुझ इनके।।५४।।

पांच रंग नंग हर कड़ी, कई बेल फूल पात।
कई कटाव कई बूटियां, इन जुबां गिने न जात।।५५।।

हर कड़ी कई करकरी, सो देखत ज्यों जड़ाव।
नंग जोत नजरों आवहीं, कई नकस कई कटाव।।५६।।

सखती न देवें चरन को, ना बोझ देवें पाए।
गुन सुख एक भूखन, इन मुख गिने न जाए।।५७।।

ए देखत अचरज भूखन, बैठे अंग को लाग।
ए सोभा कही न जावहीं, कोई देखे जिन सिर भाग।।५८।।

सरूप पुतलियों मोतियों, हैं ऊपर हर जंजीर।
सोभित सनमुख चेतन, क्यों कहूं इन मुख नीर।।५९।।

हक चाही बानी बोलत, हक चाही जोत धरत।
खुसबोए नरमाई हक चाही, हक चाह्या सब करत।।६०।।

जैसे सरूप रूहन के, चरनों लगे गिरदवाए।
त्यों पुतलियां मोतिन की, कदमों रही लपटाए।।६१।।

सब समूह भूखन जब देखिए, अदभुत सोभा लेत।
जुबां खूबी क्यों केहे सके, हक दिल चाही सोभा देत।।६२।।

हाथ दीजे भूखन पर, सो हाथों लगत नाहें।
पेहेने हमेसा देखिए, ऐसे कई गुन हैं इन माहें।।६३।।

अर्स तन हाथ अर्स तने, एक दूजे परस होए।
हाथ वस्तर या भूखन, दूजा अर्स तने लगे न कोए।।६४।।

और हाथ कोई है नहीं, कह्या वास्ते भूखन के।
और वस्तर ना कछू भूखन, जो इत निमूना लगे।।६५।।

है एक हमेसा वाहेदत, दूजा जरा न काहूं कित।
ए देखत सो भी कछुए नहीं, और कछू नजरों भी न आवत।।६६।।

वाहेदत का वाहेदत में, वस्तर भूखन पेहेनत।
ए नूर है इन अंग का, ए सुन्य ज्यों ना नासत।। ६७।।

ए मिहीं बातें अर्स सुखकी, सो जानें अर्स अरवाए।
इन जिमी सो जानहीं, जिन मोमिन कलेजे घाए।।६८।।

इन जिमी आसिक क्यों रहे, वह खिन में डारत मार।
तो लों रहे सहूर में, जो लों रखे रखनहार।।६९।।

एही काम आसिकन के, फेर फेर करे बरनन।
विध विध सुख सरूप के, सुख लेवें सिनगार भिन भिन।।७०।।

एही आहार आसिकन का, एही सोभा सिनगार।
झीलें सागर वाहेदत में, मेहेर सागर अपार।।७१।।

महामत देखे विवेकसों, हक वस्तर और भूखन।
सब अंग सोभा अंगों की, ज्यों दिल रूह होए रोसन।।७२।।

।।सिनगार।।प्रकरण।।१८।।

जोबन जोस मुख बीड़ी छबि

फेर फेर पट खोलें हुकम, निसबत जान रूहन।
हक मुख अंग इस्क के, ले देखिए अर्स अंग तन।।१।।
हक बरनन जिमी सुपने, हुकमें कह्या नेक सोए।
हक इस्क एक तरंग से, रूह निकस न सके कोए।।२।।
सुन्दर मुख मासूक का, और अंग सबे सुन्दर।
सो क्यों छूटे आसिक से, जब चुभे हैड़े अन्दर।।३।।
क्यों कहूं मुख की सलूकी, और क्यों कहूं सुन्दरता।
ए आसिक जाने मासूक की, जिन घट लगे ए घा।।४।।
मुख चौक सलूकी क्यों कहूं, कछू जानें रूह के नैन।
ए सुख सोई जानहीं, जासों हक करें सामी सैन।।५।।
सुख पाइए देखें हरवटी, मुख लांक लाल अधुर।
दन्त जुबां बीच तंबोल, मुख बोलत मीठा मधुर।।६।।
मुख मूंदे अधुर बोलत, बानी प्रेम रसाल।
आसिक को छबि चुभ रही, जानों हैड़े निस दिन भाल।।७।।
सहूर कीजे हक अंग रंग, कई तरंग लाल उज्जल।
देत गौर सुख सलूकी, सोभा क्यों कहूं बिना मिसल।।८।।
हक मुखथें बोलें वचन, स्वर मीठा निकसत।
सो सुनत अर्स रूहों को, दिल उपजे हक लज्जत।।९।।
हक स्वर कैसा होएसी, और कैसी होसी मुख बान।
सुख बातें क्यों कहूं रसना, चाहे दिल सुनने सुभान।।१०।।

हक नेक नैन मरोरत, होत रूहों सुख अपार।
तो बात कहें सुख हक के, सो क्यों कहूं सुख सुमार।।११।।
एक रोम रोम हक अंग के, सब सुखै के अम्बार।
तो सुख सरूप नख सिखलों, रूहें कहा करें दिल विचार।।१२।।
ज्यों रोम सुपन के अंग को, त्यों रोम न अर्स अंग पर।
सब अंग इस्क वास्ते, रोम रोम कहे यों कर।।१३।।
अर्स पसु या जानवर, रोम होत तिन अंग।
रोम न रूहों अंग पर, रूहें अंग जानें अर्स नंग।।१४।।
जवेर पैदा जिमीय से, यों अर्स में पैदा न होत।
ए खूबी हक जहूर की, सो लिए खड़ी सदा जोत।।१५।।
याको नंग निमूना न दीजिए, अर्स रूहें वाहेदत।
इने मिसाल न कोई लागहीं, जाकी हक हादी जात निसबत।।१६।।
जो देऊं निमूना अर्स का, तो रूहों लगत न कोई बात।
रूहें अंग हादीय को, हादी अंग हक जात।।१७।।
तिरछा नेक जो मुसकत, तो मार डारत मुतलक।
जो कदी सनमुख होए यों रूह सों, तो क्यों जीवे रूह आसिक।।१८।।
आसिक अटके सब अंगों, देख देख रूप सलूक।
एक नेक अंग के सुख में, रूह हो जात टूक टूक।।१९।।
सब अंग देखे रस भरे, प्रेम के सुख पूरन।
रूह सोई जाने जो देखहीं, ए पीवत रस मोमिन।।२०।।
गौर गाल मुख उज्जल, माहें गेहेरी लालक ले।
ए जुबां सुख सोभा क्यों कहे, अर्स अंग हक के।।२१।।

रूह आसिक जिन अंग अटकी, छूटत नहीं क्यों ए सोए।
ए किसी बातों आसिक सों, अंग मासूक जुदे न होए।।२२।।
जेते अंग मासूक के, रूह आसिक रहे तिन माहें।
रूह आसिक और कहूं ना टिके, अपने अंग में भी नाहें।।२३।।
करते बातें प्यारी मासूक, हाथ करें चलवन।
नेत्र भी वाही तरह, चूभ रेहेत रूह के तन।।२४।।
सब अंग हक के इस्क भरे, क्यों कर जाने जाएं।
होए रूह जाग्रत अर्स की, ताए हुकम देवे बताए।।२५।।
जब बात करें हक रूह सों, तब अंग सबे उलसत।
करते बातें छिपे नहीं, हक अंगों इस्क सिफत।।२६।।
नेत्र कहे और नासिका, हाथ कहे और मुख।
और अंग सबे याही विध, केहेते बातें दे सब सुख।।२७।।
सब अंग करत इसारतें, हक अंग रूह सों लगन।
ए बारीक बातें अर्स की, कोई जाने जाग्रत मोमिन।।२८।।
हक अंग जोत की क्यों कहूं, जो नूर नूर का नूर।
अंग मीठे प्यारे सुख सलूकी, दे हक हुकम सहूर।।२९।।
कैसी मीठी बानी हक की, कहे प्रेम वचन श्री मुख।
निसबत जान रमूज के, देत रूहों को सुख।।३०।।
हक प्रेम वचन मुख बोलते, जोर आवत है जोस।
ए बानी रूह को विचारते, हाए हाए अजूं उड़े ना फरामोस।।३१।।
जब जोस आवे हक बोलते, प्रेम सों गलित गात।
तिन समें मुख मासूक का, मार डारत निघात।।३२।।

हक अंग सब नाचत, जोस आवत है जब।
करें बातें रूह सों उमंगें, मुख छबि देखी चाहिए तब।।३३।।
जोस हमेसा हक को, रेहेत सदा पूरन।
पर आसिक देखे इन विध, रंग चढ़ता रस जोबन।।३४।।
सरूप मुख नख सिखलों, जोबन जिनस जुगत।
ए आसिक अंग अर्सके, चढ़ती जोत देखत।।३५।।
जोत तेज धात रंग रस, रूह बढ़ता देखे दायम।
अंग अर्स इसी रवेस, यों देखे सूरत कायम।।३६।।
चढ़ता रंग रस तो कहूं, जो होए नहीं पूरन।
पर आसिक जाने मासूक की, नित चढ़ती देखे रोसन।।३७।।
एही लछन आसिक के, सब चढ़ते देखे रंग।
तेज जोत रस धात गुन, और सब पख इंद्री अंग।।३८।।
हक रस रंग जोस जोबन, चढ़ता सदा देखत।
अर्स अरवा रूहन को, हक प्रेमें देत लज्जत।।३९।।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, हक पूरन हमेसा।
हम इस्कें लें यों अर्स में, सब सुख पूरनता।।४०।।
बीड़ी लई जिन हाथ सों, सोभित पतली अंगुरी।
तिन बीच जोत नंगन की, अति झलकत हैं मुंदरी।।४१।।
बीड़ी मुख में मोरत, सुन्दर हरवटी हंसत।
सोभा इन मुख क्यों कहूं, जो बीच में बात करत।।४२।।
एक लालक तंबोल की, क्यों कहूं अधुर दोऊ लाल।
दंत सोभित मुख मोरत, खूबी ना इन मिसाल।।४३।।

लाल उज्जल दोऊ रंग लिए, बीड़ी लेत मुख अंगुरी नरम।
नेक मुख मूंदे बोलत, अति सुन्दर मुख सरम।।४४।।
नेक खोलें अधुर मुख बोलत, करें प्यारी बातें कर प्यार।
सो सुख देत आसिकों, जिनको नहीं सुमार।।४५।।
सुख देत सब अंग मिल, नैन नासिका श्रवन अधुर।
हंसत हरवटी भौं भृकुटी, सब दें सुख बोल मधुर।।४६।।
अदभुत सलूकी इन समें, आसिक पावत आराम।
आठों जाम हिरदे रूह के, जानों नकस चुभ्या चित्राम।।४७।।
फेर फेर ए मुख निरखिए, फेर फेर जाऊं बलिहार।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, इन सुख नाहीं सुमार।।४८।।
अधबीच आरोगते, मेवा काढ़ देत मुख थें।
सरस मेवा केहे देत हैं, आप हाथ मेरे मुख में।।४९।।
रंग रस यों केहेते हों, ए जो मेहेर करत मेहेरबान।
ए भूल गैयां हम लाड़ सबे, ना तो क्यों रहे खिन बिन प्रान।।५०।।
और काम हक को कोई नहीं, देत रूहों सुख बनाए।
वाहेदत बिना हक दिल में, और न कछुए आए।।५१।।
सुख देना लेना रूहों सों, और रूहों सों वेहेवार।
ए अर्स बातें इन जिमिएं, कोई बिना रूह न लेवनहार।।५२।।
कोई काम न और रूहों को, एक जानें हक इस्क।
आठों जाम चौसठ घड़ी, बिना प्रेम नहीं रंचक।।५३।।
हक जात वाहेदत जो, छोड़ें ना एक दम।
प्यार करें माहों-माहें, वास्ते प्यार खसम।।५४।।

हक अंग चलत मुख बोलते, तब जान्या जात गुझ प्यार।
ए अरवा अर्स की जानहीं, जाको निसदिन एह विचार।।५५।।
हक नरम पांउं उठाए के, और धरत जिमी पर।
ए अर्स बीच मोमिन जानहीं, जिनको खुसबोए आई फजर।।५६।।
हक धरत पांउं उठावत, तब जानी जात चतुराए।
सो समझें हक इसारतें, जो होएं अर्स अरवाए।।५७।।
कैसे लगें पांउं चलते, वह कैसी होसी भोम।
चलते देखे हक चातुरी, हाए हाए घाए न लगे रोम रोम।।५८।।
इजार देखत पांउं में, लेत झांई जामें पर।
हाए हाए खूबी इन चाल की, ए जुबां कहे क्यों कर।।५९।।
स्वर भूखन मधुरे सोहे, ए तरह चलत जो हक।
ए जो देखे रूह नजर भर, तो चाल मार डारत मुतलक।।६०।।
नख अंगूठे अंगुरियां, चलते अति सोभित।
चाल विचारते अर्स की, हाए हाए अरवा क्यों न उड़त।।६१।।
अर्स दिल मोमिन कह्या, ठौर बड़ी कुसाद।
हक हादी रूहें माहें बसें, असल अर्स जो आद।।६२।।
जेता मता हक का, सो सब अर्स में देख।
सो सब मोमिन दिल में, पाइए सब विवेक।।६३।।
हक हादी रूहें खेलैं, उठें बैठें दौड़ें करें चाल।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जो रेहेत हमेसा नाल।।६४।।
जो तोहे कहे हक हुकम, सो तूं देख महामत।
और कहो रूहन को, जो तेरे तन वाहेदत।।६५।।

।। सिनगार ।। प्रकरण ।।१९।।

श्री राज जी का पांचवां श्रृंगार

हक मासूक का मुख सागर

मंगलाचरण

हक इलम के जो आरिफ, मुख नूरजमाल खूबी चाहें।
चाहें चाहें फेर फेर चाहें, देख देख उड़ावें अरवाहें।।१।।

एही काम आसिकन का, हक इलम एही काम।
नूरजमाल का जमाल, छोड़ें न आठों जाम।।२।।

खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जाग्रत।
दम न छोड़ें मासूक को, जाको होए हक निसबत।।३।।

हक बरनन फेर फेर करें, फेर फेर एही बात।
एही अर्स रूहों खाना पीवना, एही वतन बिसात।।४।।

जेती रूहें आसिक, रेहेत हक खूबी के माहें।
रूह को छोड़ के वजूद, कोई जाए न सके क्यांहे।।५।।

एही हक इलम को लछन, आसिकों एही लछन।
एही इलम इस्क के आरिफ, सोई अर्स रूह मोमिन।।६।।

।।मंगलाचरण सम्पूर्ण।।

बरनन करो रे रूहजी, मासूक मुख सुन्दर।
कोमल सोभा अलेखे, खोल रूह के नैन अंदर।।७।।

ललित लाल मुख सागर, कहूं अचरज के अदभूत।
क्यों कर आवे बानीय में, ए बका सूरत लाहूत।।८।।

मुख गौर झरे कसूंबा, सोभा क्यों कहूं बड़ो विस्तार।
रंग कहूं के सलूकी, ए न आवे माहें सुमार।।९।।

कहूं सागर मुख जोत का, के कहूं मेहेर सागर।
के कहूं सागर कलाओं का, जुबां केहे न सके क्योंए कर।।१०।।
मुख चौक कहूं के चकलाई, के सीतल सागर सुख।
के कहूं सागर रस का, जो नूरजमाल का मुख।।११।।
के कहूं सागर तेज का, के कहूं सागर सरम।
के नूर सागर कहूं बिलंद, के चंचल गुन नरम।।१२।।
कहूं सज्जनता के सनकूली, दोस्ती कहूं के प्यार।
जो जो देखूं नजर भर, सों सब सागर अपार।।१३।।
सागर कहूं पाक साफ का, के कहूं आबदार।
हक मुख सागर क्यों कहूं, सब विध पूरन अपार।।१४।।
मोमिन दिल कोमल कह्या, तो अर्स पाया खिताब।
तो दिल मोमिन रूह का, तिन कैसा होसी मुख आब।।१५।।
तिन रूह के नैन को, किन विध कहूं नूर तेज।
जो हक नैनों हिल मिल रहे, जाके अंग इस्क रेजा रेज।।१६।।
और हक कदम अति कोमल, पांउं तली जोत अतंत।
सो रहें रूह नैनों बीच में, सो क्या करे जुबां सिफत।।१७।।
केहेवत हुकम इन जुबां, पर ए खूबी कही न जाए।
ए कहे बिना भी ना बने, बिन कहें रूह बिलखाए।।१८।।
इन नैनों सुख बका न देख्या, सुन्या हादियों के मुख।
सुनी बानी जुबां केहे ना सके, जुबां कहे देख्या सुख।।१९।।
कहूं नूर तेज रोसनी, याकी जोत गई अंबर लों चल।
माहें गुन गरभित कई सागर, क्यों कहे बिना अंतर बल।।२०।।

किन विध कहूं मुख मांडनी, कहूं सनकूली के सुख पुंज।
के कहूं आनंद सागर पूरन, गरुआ गंभीर नूर गंज।।२१।।

ए सागर सरूपी मुख मासूक, कई खूबी खुसाली अनेक।
कई रंग तरंग किरने उठें, ए वेही जानें गिनती विवेक।।२२।।

इन मुख सागर में कई सागर, सुख आनंद अपार।
कई सागर सुख सलूकियां, माहें कई गंज अपार अंबार।।२३।।

कोई मोमिन केहेसी ए क्यों कह्या, हक मुख सोभा सागर।
सुच्छम सरूप अति कोमल, ललित किसोर सुन्दर।।२४।।

जो अरवा होए अर्स की, सो लीजो दिल धर।
सुच्छम सूरत सोभा बड़ी, सो सुनियो पड़उत्तर।।२५।।

कह्या निमूना एक भांत का, अंग खूबी इस्क सागर।
खुसबोए नरम चकलाइयां, सब सागर कहे यों कर।।२६।।

जो रंग कहूं गौर का, तो सागर मेर तरंग।
जो कहूं लाल मुख अधुर, हुए सागर लाल सुरंग।।२७।।

हक के मुख का नूर जो, सो नूरै सागर जान।
तेज जोत या सलूकियां, सोभा सागर भरया आसमान।।२८।।

सोभा हक सूरत की, सागर भी कहे न जाएं।
ए सोभा अति बड़ी है, पर सो आवे नहीं जुबांए।।२९।।

सागर कहे यों जान के, कहे दुनियां में बड़े ए।
पड़्या सागर से ना निकसे, कही अंग सोभा इन वास्ते।।३०।।

यों लग्या आसिक एक अंग को, सो तहां हीं हुआ गलतान।
इनसें कबूं ना निकसे, तो कहे सागर अंग सुभान।।३१।।

ए रस रंग उपले केते कहूं, कई विध जिनस जुगत।
फेर फेर देख देख देखहीं, रूह क्योंए न होए तृपित।।३२।।
सेहेज अन्दर के पाइए, मुख देखे हक सूरत।
रस बस एक हो रहीं, जो रूहें माहें खिलवत।।३३।।
जो गुन हक के दिल में, सो मुख में देखाई देत।
सो देखें अरवाहें अर्स की, जो इत हुई होए सावचेत।।३४।।
मुख बोले पीछे पाइए, जो दिल अन्दर के गुन।
पर मुख देखे पाया चाहे, जो अन्दर गुझ रोसन।।३५।।
जो गुन हिरदे अन्दर, सो मुख देखे जाने जाएं।
ऊपर सागरता पूरन, ताथें दिल की सब देखाए।।३६।।
मुख मीठा सागर पूरन, मुख मीठा सागर बोल।
मेहेर सागर दृष्ट पूरन, लई इस्क सागर माहें खोल।।३७।।
यों गुन सागर केते कहूं, जो देखत सुख के रंग।
कई सुख नेहेरें किरना चलें, कई सागर सुख तरंग।।३८।।
कई रस रंग एक गौर में, एक रंग माहें कई रस।
क्यों बरनों आगे मोमिनों, ए मुख मासूक अजीम अर्स।।३९।।
एक सलूकी में कई चकलाइयां, एक चकलाइएं कई सलूक।
ए सरूप केहेते आगे मोमिन, दिल होत नहीं टूक टूक।।४०।।
दोऊ तरफ सोभा कान भूखन, बीच नासिका सोभे दोऊ नैन।
तिलक निलाट अति उज्जल, दोऊ अधुर मधुर मुख बैन।।४१।।
सिर मुकट एक भांत का, क्यों कहूं जुबां रंग नंग।
ना देख सकों नूर नजरों, कई किरने उठें तरंग।।४२।।

केहे केहे जुबां एता कहे, जो जोत भरया अवकास।
आसमान जिमी भर पूरन, अब किन विध कहूं प्रकास।।४३।।
इन विध सोभा मुकट की, ए जुबां क्यों करे बरनन।
सिर सोभे नूरजमाल के, नीके देखें रूह मोमिन।।४४।।
ए नंग जवेर केहेत हों, सो सब्द सुपन जिमी ले।
ए अर्स जवेर भी क्यों कहिए, जो सिनगार हक बका के।।४५।।
होत जवेर पैदा जिमी से, नंग अर्स में इन विध नाहें।
जोत पूरन अंग ले खड़ी, रूह जैसी चाहे दिल माहें।।४६।।
असल तन जिनों अर्स में, सो कर लीजो दिल विचार।
हक के सिर का मुकट, सो सोभा क्यों आवे माहें सुमार।।४७।।
यों ही है बीच अर्स के, जिनों जो सोभा प्यारी लगत।
हर रूह अर्स अजीम की, दिल माफक देखत।।४८।।
तुम इत भी माफक इस्क के, देखियो कर सहूर।
हिसाब न सोभा मुकट की, ए जुबां क्या करे मजकूर।।४९।।
हक सूरत सलूकी क्यों कहूं, महंमदें कही अमरद।
किसोर कही मसीय ने, सोभा कही न जाए माहें हद।।५०।।
अति सुन्दर सूरत अर्स की, ताके क्यों कहूं वस्तर भूखन।
जामा पटुका इजार, माहें सिफत न आवे सुकन।।५१।।
केहे केहे मुख एता कहे, नूरै के वस्तर।
मैं केहेती हों बुध माफक, ज्यादा जुबां चले क्यों कर।।५२।।
सोभा सलूकी मुख की, और सलूकी भूखन।
और सलूकी वस्तर की, ए जानें अरवा अर्स के तन।।५३।।

रंग वस्तरों तो कहूं, जो दस बीस रंग होए।
इन सुपन जिमी जो वस्तर, तामें कई रंग देखत सोए।।५४।।
तो अर्स वस्तर क्यों रंग गिनों, और करके दिल अटकल।
बेसुमार ल्याऊं सुमार में, यों मने करत अकल।।५५।।
है बड़ी लड़ाई इन बात में, जब सहूर करत अर्स दिल।
रूह तो मेरी इत है नहीं, हुकम केहेवत ऊपर मजल।।५६।।
जामा अंग को लग रह्या, हार दुगदुगी हैड़े पर।
ऊपर अति झीनी झलकत, जुड़ बैठी चादर।।५७।।
जामें ऊपर जो भूखन, जो कण्ठ पेहेरे हैं हार।
सो कई नंग जंग करत हैं, अवकास न माए झलकार।।५८।।
याही जिनस बाजू बंध, और फुंदन लटकत।
ए सबे हैं एक रस, पर रंग कई विध जंग करत।।५९।।
हस्त कमल काड़ों कड़े, माहें कई रंग कई बल।
सो रूह लेवे विचार के, आगूं चले न जुबां अकल।।६०।।
याही विध हैं पोहोंचियां, तिनमें कई रंग नंग कंचन।
रंग गिनती केहेते सकुचों, जानों क्यों कहूं सुमार सुकन।।६१।।
किन विध कहूं हथेलियां, अति उज्जल रंग लाल।
केहेते लीकां दिल लरजत, ए अंग नूरजमाल।।६२।।
अंगुरियां हस्त कमल की, याको दिया न निमूना जाए।
वचन कहूं विचार के, तो भी रूह पीछे जाए पछताए।।६३।।
हर एक अंगुरी मुंदरी, हर मुंदरिएं कई रंग।
सो जोत भरत आकास को, कहूं किन विध कई तरंग।।६४।।

जो जोत नख अंगुरी, जुबां आगे चल न सकत।
फेर फेर वचन एही कहूं, अंबर जोत भरत।।६५।।
याही विध नख चरनों के, नख जोत एही सब्द।
एही खूबी फेर फेर कहूं, क्या करों छूटे न जुबां हद।।६६।।
कोमलता चरन अंगुरी, और चरन तली कोमल।
ए दिल रोसन देख के, हाए हाए खाक न होत जल बल।।६७।।
चारों भूखन चरन के, माहें रंग जोत अपार।
दिल न लगे बिना गिनती, जानों क्यों ल्याऊं माहें सुमार।।६८।।
सुमार कहे भी ना बने, दिल में न आवे बिना सुमार।
ताथें मुस्किल दोऊ पड़ी, पड़या दिल माहें विचार।।६९।।
चरन हक सूरत के, तिन अंगों के भूखन।
रूह लेसी सोभा विचार के, जाके होसी अर्स में तन।।७0।।
याही वास्ते कहे सागर, सोभा न आवे माहें सुमार।
सागर सोभा भी ना लगे, सब्द में न आवे सोभा अपार।।७१।।
जो सोभा कही हक की, ऐसी हादी की जान।
हकें मासूक कह्या अपना, सो जाहेर लिख्या माहें फुरमान।।७२।।
और सोभा जुगल किसोर की, रूह अल्ला ने कही इत।
उसी इलम से मैं केहेत हों, जो कहावत हुकम सिफत।।७३।।
गौर गाल सुन्दर हरवटी, फेर फेर देखों मुख लाल।
अर्स कर दिल मोमिन, माहें बैठे नूरजमाल।।७४।।
क्यों कहूं सागर चातुरी, कई सुख अलेखे उतपन।
कई पैदा होत एक सागरें, नए नए सुख नौतन।।७५।।

हक मुख सब विध सागर, सुख अलेखे अपार।
ए सुख जानें निसबती, जिन निस दिन एही विचार।।७६।।
सब सागर सुख मई, सब सुख पूरन परमान।
अति सोभित मुख सुन्दर, ए जो वाहेदत का सुभान ।।७७।।
अंग देखे जेते सूरत के, सो तो सारे इस्क सागर।
गुन हक बाहेर देखावत, इन बातों मोमिन कादर।।७८।।
इस्क देखावें चढ़ता, सब कलाओं सुखदाए।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, पर इस्कें देत देखाए।।७९।।
केहेना सुनना देखना, अर्स चीज न इस्क बिन।
जो कछू सुख अखंड, सो सब इस्क पूरन।।८०।।
जो कोई अर्स जिमीय में, पसु या जानवर।
सो सरूप सारे इस्क के, एक जरा ना इस्क बिगर।।८१।
दुनी पंखी बिछोहा न सहे, वह आगे ही उड़े अरवा।
गिरत है आकास से, होत है पुरजा पुरजा।।८२।।
ए पंखी प्रीत दुनीय की, होसी अर्स के कैसे जानवर।
ए निमूना इत ना बने, और बताइए क्यों कर।।८३।।
पूर असल जिमी बराबर, और उज्जल जोत प्रकास।
कहूं कम ज्यादा न देखिए, और जोत भरयो अवकास।।८४।।
पसु पंखी सब में पूरन, दिल चाह्या पूरन बन।
इन जिमी पसु पंखियों, जिकर करे रोसन।।८५।।
और आसिक वाहेदत के, इन हूं बड़ी पेहेचान।
एही खूब खेलौनें हक के, मुख मीठी सुनावें बान।।८६।।

खूबी खुसाली पूरन, सुन्दर सोभा चित्रामन।
नैन श्रवन या चोंच मुख, गान करें निस दिन।।८७।।

इस्क इनों के क्यों कहूं, जो हक के पिलायल।
कोई केहे न सके इनों बड़ाई, ए अर्स जिमी असल।।८८।।

सब गुन इनों में पूरन, नरम खूबी खुसबोए।
मुख बानी जोत चित्रामन, ए हकें रिझावें सोए।।८९।।

हाल चाल सब इस्क की, खान पान सब साज।
सोभा सिनगार सब इस्क के, अर्स इस्क को राज।।९०।।

सोभा क्यों कहूं हक सूरत की, जाको नामै नूरजमाल।
ए दिल आए इस्क आवत, याको सहूरें बदलें हाल।।९१।।

हक सूरत अति सोहनी, अति सुन्दर सोभा कमाल।
बैठे हक इस्क छाया मिने, दूजे इस्क लगे दिल झाल।।९२।।

और कछुए दिल है नहीं, बिना हक वाहेदत।
और जरा कित कहूं नहीं, वाहेदत इस्क निसबत।।९३।।

जित रहे आग इस्क की, तित देह सुपन रहे क्यों कर।
बिना मोमिन दुनी न छूटहीं, दुनी ज्यों बिन जलचर।।९४।।

ब्रह्मसृष्ट घर इस्क में, और दुनियां घर कुफर।
मोमिन जलें न आग इस्कें, दुनी जाए जल बर।।९५।।

आग इस्कें जलें ना मोमिन, आसिकों इस्क घर।
इनों लगे जुदागी आग ज्यों, रूहें भागें देख कुफर।।९६।।

रूहें आइयां अर्स अजीम से, दई नुकते इलमें जगाए।
और उमेदां सब छोड़ाए के, हकें आप में लैयां लगाए।।९७।।

वस्तर भूखन सब इस्क के, इस्क सेज्या सिनगार।
इस्क हक खिलवत, रूहें हादी हक भरतार।।९८।।
जुगल सरूप जब बैठत, इस्क जानें दिल की सब।
इस्क बोल काढ़ें जिन हेत को, उत्तर पावे दूजा दिल तब।।९९।।
जुगल सरूप इत बैठत, दोऊ दिल की पावें मोमिन।
एक वचन मुख बोलते, पावें पड़उत्तर आधे सुकन।।१००।।
इस्क बोले सुनें इस्क, सब इस्कै की बिसात।
जो गुझ दिल मासूक की, सो आसिक से जानी जात।।१०१।।
मोमिन आसिक हक के, सो हक की जानें दें खबर।
हकें तो किया अर्स अपना, जो थे मोमिन दिल इन पर।।१०२।।
आसिक मासूक दो अंग, दोऊ इस्कें होत एक।
तो आसिक मासूक के दिल को, क्यों ना कहे गुझ विवेक।।१०३।।
तो मोमिनों दिल अपना, जीवते अर्स केहेलाया।
जो इस्क मासूक के दिल का, ऊपर सरूपै देखें पाया।।१०४।।
जो कछुए चीज अर्स में, सो सूरत सब इस्क।
सो लाड़ लज्जत सुख लेत हैं, सब रूहें हादी हक।।१०५।।
इस्क सुख अर्स बिना, कहूं पैदा दुनी में नाहें।
तो हकें नाम धराया आसिक, जो इस्क आपके माहें।।१०६।।
या तो इस्क हादी मिने, जाको हकें कह्या मासूक।
हक का सुकन सुन आसिक, हाए हाए होत नहीं टूक टूक।।१०७।।
सुकजीएं भी यों कह्या, प्रेम चौदे भवन में नाहें।
ब्रह्मसृष्ट ब्रह्म निसबती, प्रेम जो है तिन माहें।।१०८।।

और इस्क माहें रूहन, हकें अर्स कह्यो जाको दिल।
हकें दिल दे रूहों दिल लिया, यों एक हुए हिल मिल।।१०९।।
ना तो हक आदमी के दिल को, अर्स कहें क्यों कर।
पर ए आसिक मासूक की वाहेदत, बिना आसिक न कोई कादर।।११०।।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, रूहें उतरी लाहूत से।
अहेल अल्ला तो कहे, जो इस्क है इनों में।।१११।।
इस्क है वाहेदत में, कहूं पाइए न दूजे ठौर।
दूजे ठौर तो पाइए, जो होवे कोई और।।११२।।
इस्क निसानी हक की, सो पाइए सांच के माहें।
सांच अर्स आगूं वाहेदत के, ए झूठ जरा भी नाहें।।११३।।
ए झूठा फरेब कछुए नहीं, जामें आए अहमद मोमिन।
एह निसानी इस्क की, जाके असल अर्स में तन।।११४।।
इस्क नाम अर्स से, खेल में ल्याए महंमद।
ए क्या जानें नसल आदम, जो खाकीबुत सब रद।।११५।।
ए जाने अरवाहें अर्स की, जिनकी इस्क बिलात।
ए क्या जाने पैदा कुंन की, हक आसिक मासूक की बात।।११६।।
अर्स इस्क हक हादी रूहें, याकी दुनी न जाने कोए।
इस्क अर्स सो जानहीं, जो कायम वतनी होए।।११७।।
दुनियां चौदे तबकों, किन निरने करी न सूरत हक।
तिन हक के दिल में पैठ के, करूं जाहेर हक इस्क।।११८।।
तो अर्स हुआ दिल मोमिन, जो जाहेर किया गुझ ए।
हक हादी गुझ मोमिन, कोई और न कादर इनके।।११९।।

तो पाया खिताब अर्स का, ना तो दिल आदमी अर्स क्यों होए।
ए हक हादी मोमिन बातून, और बूझे जो होवे कोए।।१२०।।

मुखारबिंद मेहेबूब का, सुख देत हक सूरत।
जुगल किसोर सोभा लिए, दोऊ बैठे एक तखत।।१२१।।

दोऊ सरूप अति उज्जल, कई जोत खूबियों में खूब।
इस्क कला सब पूरन, रस इस्क भरे मेहेबूब।।१२२।।

नैन श्रवन मुख नासिका, चारों अंग गेहेरे गंभीर।
अर्स आकास सिंध तेज का, ताए चारों नेहेरें चलियां चीर।।१२३।।

एक मुख के सुख में कई सुख, और कई सुख माहें नैन।
सुख केते कहूं नैन अंग के, मुख गिनती न आवे बैन।।१२४।।

श्रवन अन्दर सुख क्यों कहूं, जो सुख सागर आराम।
क्यों निकसे रूह इन से, ए अंग सुख स्यामा स्याम।।१२५।।

अंग रूह अर्स की नासिका, ए बल जानत रूह को कोए।
चौदे तबक सुन्य फोड़ के, इत लेत अर्स खुसबोए।।१२६।।

ऐसा बल रूह अर्स के, तो बल हक होसी किन विध।
ए बेवरा जानें पाक मोमिन, जिन हक अर्स दिल सुध।।१२७।।

सुख कहूं मीठी जुबान के, के सुख कहूं लाल अधुर।
के सुख कहूं रस भरे वचन, जो बोलत माहें मधुर।।१२८।।

दोऊ माहों माहें जब बोलहीं, तब मीठे कैसे लगत।
कोई रूह जानें अर्स की, जित हक हुकम जाग्रत।।१२९।।

जानों के जोबन चढ़ता, ऐसे नित देखत नौतन।
गुन पख अंग इंद्रियां, बढ़ता नूर रोसन।।१३०।।

जानों के पल पल चढ़ता, तेज जोत रस रंग।
पूरन सरूप एही देखहीं, इस्क सूरत के संग।।१३१।।
बन्ध बन्ध सब इस्क के, और इस्कै अंगों अंग।
गुन पख सब इस्क के, सोई इस्क बोलें रस रंग।।१३२।।
सब इंद्रियां इस्क की, इस्क तत्व रस धात।
पिंड प्रकृत सब इस्क के, इस्क भीगे अंग गात।।१३३।।
बात विचार सब इस्क के, इस्कै गान इलम।
अंग क्यों कहूं इन जिमिएं, एता भी केहेत हुकम।।१३४।।
सब चीजें इत इस्क की, इस्कै अर्स बिसात।
रूहें हादी अंग इस्क के, इस्क सूरत हक जात।।१३५।।
सेहेज सुभाव सब इस्क के, इस्कै की वाहेदत।
हक सरूप सब इस्क के, इस्कै की खिलवत।।१३६।।
मोहोल मन्दिर सब इस्क के, ऊपर तले इस्क।
दसों दिस सब इस्क, इस्क उठक या बैठक।।१३७।।
यों अर्स सारा इस्क का, और इस्क रूहों निसबत।
इस्क बिना जरा नहीं, सब हक इस्क न्यामत।।१३८।।
नेक कही हक इस्क की, पर इस्क बड़ा विस्तार।
इनको बरनन न होवहीं, न आवे माहें सुमार।।१३९।।
सुनो मोमिनों इस्क की, नेक और भी देऊं खबर।
अर्स आसिक मासूक की, ज्यों औरों भी आवे नजर।।१४०।।
रब्द हुआ इस्क का, हक हादी की खिलवत माहें।
इत कम ज्यादा है नहीं, अर्स इस्क बेवरा नाहें।।१४१।।

ए बेवरा तित होवहीं, जित बिछोहा होए।
सो तो वाहेदत में है नहीं, होए बिछोहा माहें दोए।।१४२।।

हकें चाह्या करों बेवरा, देखाऊं रूहों को।
इस्क न पाइए बिना जुदागी, सो क्यों होवे वाहेदत मों।।१४३।।

ताथें दई नेक फरामोसी, रूहों को माहें अर्स।
हांसी करने इस्क की, देखें कौन कम कौन सरस।।१४४।।

ए झूठा खेल देखाइया, ए जो चौदे तबक।
हम जानें आए खेल बीच में, जित तरफ न पाइए हक।।१४५।।

इत इस्क कहां पाइए, आग पानी पत्थर पूजत।
ए खेल देख्या एक निमख का, जानों हो गई कई मुद्दत।।१४६।।

झूठ हम देख्या नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर।
पट आड़े खेल देखाइया, सो देने इस्क खबर।।१४७।।

ऐसा खेल देखाइया, जानें हम आए माहें इन।
इस्क हम में जरा नहीं, सुध हक न आप वतन।।१४८।।

इन इस्कें हमारे ऐसा किया, ए जो झूठे चौदे तबक।
तिन सबों कायम किए, ऐसे हमारे इस्क।।१४९।।

जलाए दिए सब इस्कें, हो गई सब अगिन।
एक जरा कोई ना बच्या, बीच आसमान धरन।।१५०।।

हम जानें इस्क न हमपे, हम पर हंससी नूरजमाल।
हमारे इस्कें ब्रह्मांड का, किया जो ऐसा हाल।।१५१।।

इस वास्ते खेल देखाइया, वास्ते बेवरे इस्क के।
कोई आया न गया हममें, बैठे अर्स में देखें ए।।१५२।।

कहे महामत हुकमें देखाइया, ऐसी कर हिकमत।
हम देख्या इस्क बेवरा, बैठे बीच खिलवत।।१५३।।

।।सिनगार।।प्रकरण।।२०।।

श्री राज जी का छठा शृंगार

मुखकमल मुकुट छबि

मंगलाचरण

याद करो हक मोमिनों, खेल में अपना खसम।
हकें कौल किया उतरते, अलस्तो-बे-रब कुंम।।१।।

तब रूहों वले कह्या, बीच हक खिलवत।
मजकूर किया हकें तुमसों, वह जिन भूलो न्यामत।।२।।

हुकमें ए कुंजी ल्याया इलम, हुकमें ले आया फुरमान।
दई बड़ाई रूहों हुकमें , हुकमें दई भिस्त जहान।।३।।

हुकमें हादी आइया, और हुकमें आए मोमिन।
और फुरमान भेज्या इनपे, हकें कुंजी भेजी बैठ वतन।।४।।

और भी हुकमें ए किया, लिया रूह अल्ला का भेस।
पेहेचान दई सब असों की, माहें बैठे दे आवेस।।५।।

इलम दिया सब असों का, कहूं जरा न रही सक।
हम हादी मोमिन सब मिल, करें जारी वास्ते इस्क।।६।।

और जेती किताबें दुनी में, तिन सबों पोहोंची सरत।
सो सब खोली किताबें हुकमें, केहे दई सबों कयामत।।७।।

फिराए दिए सब फिरके, सब आए बीच हक दीन।
भिस्त दई हम सबन को, ल्याए सब हक पर आकीन।।८।।

बका तरफ कोई न जानत, ए जो चौदे तबक।
सो रात मेटके दिन किया, पट खोल अर्स हक।।९।।

ऐसा खेल इन भांतका, यामें गई ना कबूं किन सक।
ताको साफ किए हम हुकमें, सब जले बीच इस्क।।१०।।

हम मांगें इस्क वतनी, आई हमपे हक न्यामत।
हमें ऐसा खेल देखाइया, इत बैठे देखें खिलवत।।११।।

ऐसे किए हमें इलमें, कोई छिपी न रही हकीकत।
जाहेर गुझ सब अर्सों की, ऐसी पाई हक मारफत।।१२।।

हम झूठी जिमी बीच बैठ के, करें जाहेर हक सूरत।
एही ख्वाब के बीच में, बताए दई वाहेदत।।१३।।

तो ए झूठी जिमी कायम हुई, ऐसी हक बरकत।
जानें आगूं कह्या रसूलने, देसी हम सबों भिस्त।।१४।।

इलमें ऐसे बेसक किए, इत बैठे पाइए सुध।
हम इत आए बिना, देखी खेल की सब विध।।१५।।

हम तेहेकीक रूहें अर्स की, इन इलमें किए बेसक।
ए देख्या खेल झूठा जान के, क्यों छोड़े बरनन हक।।१६।।

कह्या रसूलें फुरमान में, अर्स दिल मोमिन।
हम और क्यों केहेलाइए, बिना अर्स हक वतन।।१७।।

ताथें फेर फेर बरनन, करें हक बका सूरत।
हुकम इलम यों केहेवहीं, कोई और न या बिन कित।।१८।।

खिनमें सिनगार बदलें, करें नए नए रूप अनेक।
होत उतारे पेहेने बिना, ए क्यों कह्यो जाए विवेक।।१९।।
हक सिनगार कीजे तो बरनन, जो घड़ी पल ठेहेराए।
एक पाव पलमें, कई रूप रंग देखाए।।२०।।
और भी हक सरूप की, इन विध है बरनन।
रूह देखें नए नए सिनगार, जिन जैसी चितवन।।२१।।
ताथें बरनन क्यों करूं, किन विध कहूं सिनगार।
ए सोभा हक सूरत की, काहूं वार न पार सुमार।।२२।।
झूठी जुबां के सब्दसों, और माएने लेना बका।
जो सहूर कीजे हक इलमें, तो कछू पाइए गुझ छिपा।।२३।।
इलम होवे हक का, और हुकम देवे सहूर।
होए जाग्रत रूह वाहेदत, कछू तब पाइए नूर जहूर।।२४।।
ए सुपन देह पांच तत्व की, वस्तर भूखन उपले ऐसे हैं।
अर्स रूह सूरत को, मुहकक पेहेनावा क्या कहे।।२५।।
रूह सूरत नहीं तत्व की, जो वस्तर पेहेन उतारे।
नूर को नूर जो नूर है, कौन तिनको सिनगारे।।२६।।
पेहेले दृढ़ कर हक सूरत, ए अंग किन नूर के।
हक जातके निसबती, बका मोमिन समझें ए।।२७।।
नूर सोभा नूर जहूर, और न सोभा इत।
देखो अर्स तन अकलें, ए सरूप वाहेदत।।२८।।
नाजुकी इन सरूप की, और अति कोमलता।
सो इन अंग जुबां क्या कहे, नूरजमाल सूरत बका।।२९।।

जैसी सरूप की नाजुकी, तैसी सोभा सलूक।
चकलाई चारों तरफों, दिल देख न होए टूक टूक।।३०।।
आसिक अपने सौक को, विध विध सुख चहे।
सोई विध विध रूप सरूप के, नई नई लज्जत लहे।।३१।।
दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दम दम।
दें चाह्या सरूप सबन को, इन विध कादर खसम।।३२।।
रूहें दिल सब एकै, नए नए इस्क तरंग।
पिएं प्याले फेर फेर, माहों माहें करें प्रेम जंग।।३३।।
ए बारीक बातें अर्स की, बिन मोमिन न जाने कोए।
मोमिन भी सो जानहीं, जाको आई फजर खुसबोए।।३४।।
जो कछू बीच अर्स के, पसु पंखी नंग बन।
सोभा बानी कोमल, खुसबोए रंग रोसन।।३५।।
मैं नरमाई एक फूल की, जोड़ देखी रूह देह संग।
क्यों जुड़े जिमी सोहोबती, सोहोबत जात हक अंग।।३६।।
क्यों कर आवे बराबरी, खावंद और खेलौने।
ए मुहकक क्या विचारहीं, जाहेर तफावत इनमें।।३७।।
ए चीजें कही सब अर्स की, लीजे माहें सहूर कर।
ए खेलोने रूहन के, नहीं खावंद बराबर।।३८।।
अर्स चीज भी लीजे सहूर में, जिन अर्स खावंद हक।
इन अर्स की एक कंकरी, उड़ावे चौदे तबक।।३९।।
इत बैठ झूठी जिमी में, झूठी अकल झूठी जुबान।
अर्स चीज मुकरर क्यों होवहीं, जो कायम अर्स सुभान।।४०।।

अर्स चीज न आवे इन अकलें, तो क्यों आवे रूह मूरत।
जो ए भी न आवे सहूर में, तो क्यों आवे हक सूरत।।४१।।
एक रूहें और खेलौने, देख इत भी तफावत।
सूरत हक हादी रूहें, देख जो कहावें वाहेदत।।४२।।
बका चीज जो कायम, तिन जरा न कबूं नुकसान।
जेती चीज इन दुनी की, सो सब फना निदान।।४३।।
जेती चीज अर्स में, न होए पुरानी कब।
नुकसान जरा न होवहीं, ए लीजे सहूर में सब।।४४।।
तो हक अर्स है कह्या, ए चौदे तबक जरा नाहें।
जो नाहीं सो है को क्या कहे, ताथें आवत न सब्द माहें।।४५।।
जेती चीजें अर्स की, जोत इस्क मीठी बान।
खूबी खुसबोए हक चाहेल, तहां नजीक ना नुकसान।।४६।।
नूर और नूरतजल्ला, कहे महंमद दो मकान।
दोए सूरतें जुदी कही, ताकी रूहअल्ला दई पेहेचान।।४७।।
नाजुक नरम तेज जोत में, सलूकी सोभा मीठी जुबान।
सुन्दर सरूप खुसबोए सों, पूरन प्रेम सुभान।।४८।।
सोई सरूप है नूर का, सोई सूरत हादी जान।
रूहें सूरत वाहेदत में, ए पूरन इस्क परवान।।४९।।
हक सूरत अति सोहनी, दोऊ जुगल किसोर।
गौर मुख अति सुन्दर, ललित कोमल अति जोर।।५०।।
और रूहों की सूरतें, जो असल अर्स में तन।
सो सहूर कीजे हक इलमें, देखो अपना तन मोमिन।।५१।।

खूबी खुसाली न आवे सब्द में, ना रंग रस बुध बान।
कोई न आवे सोभा सब्द में, मुख अर्स खावंद मेहेरबान।।५२।।
जैसी है हक सूरत, और तिन वस्तर भूखन।
जो सोभा देत इन सूरतें, सो क्यों कहे जाएं जुबां इन।।५३।।
दिल में जानों दे निमूना, समझाऊं रूहों को।
खूबी दुनी की देख के, लगाए देखों अर्स सों।।५४।।
हक अंग कैसे बरनवूं, इन झूठी जुबां के बल।
बका अंग क्यों कर कहूं, यों फेर फेर कहे अकल।।५५।।
रूप रंग इत क्यों कहिए, ले मसाला इत का।
ए सुकन सारे फना मिने, हक अंग अर्स बका।।५६।।
रूप रंग गौर लालक, कहूं नूर जोत रोसन।
ए सब्द सारे ब्रह्मांड के, अर्स जरा उड़ावे सबन।।५७।।
गौर हक अंग केहेत हों, ए गौर रंग लाहूत।
और कहूं सोभा सलूकी, ए छबि है अदभूत।।५८।।
चकलाई हक अंगों की, रूप जाने अरवा अर्स।
रूह जागी जाने खेल में, जो हुई होए अरस परस।।५९।।
जो रूह जगाए देखिए, तो ठौर नहीं बोलन।
जो चुप कर रहिए, तो क्या लें आहार मोमिन।।६०।।
मैं देख्या दिल विचार के, सुनियो तुम मोमिन।
देऊं निमूना दुनी अर्स का, तुम देखियो दिल रोसन।।६१।।
कही कोमलता कमलन की, और जोत जवेरन।
रंग सुरंग जानवरों, कई स्वर मीठी जुबां इन।।६२।।

कई खुसबोई माहें पंखियों, कई खुसबोए माहें फूलन।
कई सोभा पसु पंखियों, कई नरमाई परन।।६३।।

फूल कमल कई पसम, कैसी कोमल दुनी इन।
फूल अत्तर चोवा मुस्क, और जोत हीरा जवेरन।।६४।।

देखो प्रीत पसुअन की, और देखो प्रीत पंखियन।
एक चलें दूजा ना रहे, जीव जात माहें खिन।।६५।।

छोटे बड़े जीव कई रंग के, जानों के देह कुंदन।
कई नकस कई बूटियां, कई कांगरी चित्रामन।।६६।।

इन भांत केती कहूं, कई खूबी बिना हिसाब।
ले खुलासा इन का, छोड़ दीजे झूठा ख्वाब।।६७।।

देख दुनी देखो अर्स को, कई रंगों सोभें जानवर।
सुख सनेह खूबी खुसाली, कई मुख बोलत मीठे स्वर।।६८।।

जीव जल थल या जानवरों, कई केसों परन।
रंग खूबी देख विचार के, ले अर्स मसाला इन।।६९।।

इन विध मैं केती कहूं, रंग खूबी खुसबोए।
परों फूलों चित्रामन, कही प्रीत इनों की सोए।।७०।।

इन विध देखो निमूना, ए झूठी जिमी का विचार।
तो कौन विध होसी अर्स में, जो सोभा वार न पार सुमार।।७१।।

एक देखी विध संसार की, और विध कही अर्स।
सांच आगे झूठ कछू नहीं, कर देखो दिल दुरुस्त।।७२।।

सांच भोम की कंकरी, उड़ावे जिमी आसमान।
कैसी होसी अर्स खूबियां, जो खेलौंने अर्स सुभान।।७३।।

सो खूब खेलौंने देखिए, इनों निमूना कोई नाहें।
सिफत इनों ना केहे सकों, मेरी इन जुबाएं।।७४।।

कई जुगतें खूबियां, कई जुगतें सनकूल।
कई जुगतें सलूकियां, कई जुगतें रस फूल।।७५।।

कई जुगतें चित्रामन, ऊपर पर केसन।
कई मुख मीठी बानियां, स्वर जिकर करें रोसन।।७६।।

जेती खूबियां अर्स की, सब देखिए जमाकर।
लीजे सब पेहेचान के, अंदर दिल में धर।।७७।।

रंग रस नूर रोसनी, सोभा सुन्दर खूबी खुसबोए।
तेज जोत कोमल, देख नरम नाजुकी सोए।।७८।।

दिल अर्स खुलासा लेय के, और देख अर्स रूह अंग।
रूहों सरभर कोई आवे नहीं, खूबी रूप सलूकी रंग।।७९।।

खेल खावंद कैसी सरभर, जो रूहें अंग हादी नूर।
हादी नूर हक जातका, मोमिन देखें अर्स सहूर।।८०।।

सिफत ऐसी कही मोमिनों, जाके अक्स का दिल अर्स।
हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस-परस।।८१।।

ए जो मोमिन अक्स कहे, जानों आए दुनियां माहें।
हक अर्स कर बैठे दिल को, जुदे इत भी छोड़े नाहें।।८२।।

अक्स के जो असल, ताए खेलावत सूरत।
सो हिंमत अपनी क्यों छोड़हीं, जामे अर्स की बरकत।।८३।।

दुनी नाम सुनत नरक छूटत, इनोंपे तो असल नाम।
दिल भी हकें अर्स कह्या, याकी साहेदी अल्ला कलाम।।८४।।

इलम भी हकें दिया, इनमें जरा न सक।
सो क्यों न करें फैल वतनी, करें कायम चौदे तबक।।८५।।
प्रतिबिंब के जो असल, तिनों हक बैठे खेलावत।
तहां क्यों न होए हक नजर, जो खेल रूहों देखावत।।८६।।
आड़ा पट भी हकें दिया, पेहेले ऐसा खेल सहूर में ले।
जो खेल आया हक सहूर में, तो क्यों न होए कायम ए।।८७।।
हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिंब मोमिनों नाम।
सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत स्यामा स्याम।।८८।।
बड़ी बड़ाई इनकी, जिन इस्कें चौदे तबक।
करम जलाए पाक किए, तिन सबों पोहोंचाए हक।।८९।।
इनों धोखा कैसा अर्स का, जिन सूरतें खेलावें असल।
खेलाए के खैंचे आपमें, तब असलै में नकल।।९०।।
नकलें असलें जुदागी, एक जरा है आड़ा पट।
कह्या सेहेरग से नजीक, तिन निपट है निकट।।९१।।
इन सुपन देह माफक, हकें दिल में किया प्रवेस।
ए हुकम जैसा कहावत, तैसा बोले हमारा भेस।।९२।।
अर्स तन का दिल जो, सो दिल देखत है हम को।
प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों।।९३।।
ऐसा खेल किया हुकमें, हमारी उमेदां पूरन।
हम सुख लिए अर्स के, दुनी में आए बिन।।९४।।
ना तो ऐसा बरनन क्यों करें, ए जो वाहेदत नूरजमाल।
ना कोई इनका निमूना, ना कोई इन मिसाल।।९५।।

अर्स भोम की एक कंकरी, तिन आगे ए कछुए नाहें।
तो क्यों दीजे बका सुभान को, सिफत इन जुबांए।।९६।।
अर्स जिमी सब वाहेदत, दूजा रहे ना इनों नजर।
ज्यों रात होए काली अंधेरी, त्यों मिटाए देवे फजर।।९७।।
है हमेसा एक वाहेदत, एक बिना जरा न और।
अंधेर निमूना न लगत, अंधेर राखत है ठौर।।९८।।
ए चौदे तबक कछुए नहीं, वेदों कह्या आकास फूल।
झूठा देखाई देत है, याको अंकूर ना मूल।।९९।।
इत वाहेदत कबूं न जाहेर, झूठे हक को जानें क्यों कर।
सुध वाहेदत क्यों ले सकें, जो उड़ें देखें नजर।।१००।।
असल बात वाहेदत की, अर्स अरवाहें जानें मोमिन।
इत हक सुध मोमिनों, जाके असल अर्स में तन।।१०१।।
अब तुम सुनियो मोमिनों, अर्स बिने तुमारी बात।
वाहेदत तो कहे मोमिन, जो रूहें असल हक जात।।१०२।।
और एक मता रूहन का, देखो अर्स वाहेदत।
लीजो मोमिन दिल में, ए हक अर्स न्यामत।।१०३।।
नैन एक रूह के, जो सुख लेवें परवरदिगार।
तिन सुख से सुख पोहोंचहीं, दिल रूहों बारे हजार।।१०४।।
एक रूह बात करे हक सों, सुख लेवे रस रसनाएं।
सो सुख रूहों आवत, दिल बारे हजार के माहें।।१०५।।
हक बोलावें रूह एक को, सो सुख पावे अतंत।
सो बात सुन रूह हक की, सब रूहें सुख पावत।।१०६।।

रूह सुख हर एक बात का, हकसों अर्स में लेवत।
सो सुख सुन रूहें सबे, दिल अपने देवत।।१०७।।
तो हकें कह्या अर्स अपना, मोमिनों का जो दिल।
तो सब ल्याए वाहेदत में, जो यों सुख लेत हिलमिल।।१०८।।
इन विध सुख केते कहूं, अर्स अरवा मोमिन।
तो आए वाहेदत में, जो हक कदम तले इनों तन।।१०९।।
हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, और भेज दिया इलम।
क्यों आवें अर्स दिल झूठ में, इत है हक का हुकम।।११०।।
ताथें बरनन इन दिल, अर्स हक का होए।
इस्क हक के से जल जाए, और जरा न रेहेवे कोए।।१११।।
इन दिल को अर्स तो कह्या, जो खोल दिए बका द्वार।
ताथें फेर फेर बरनवूं, हक वाहेदत का सिनगार।।११२।।
किसोर सूरत हादी हक की, सुन्दर सोभा पूरन।
मुख कमल कहूं मुकट की, पीछे सब अंग वस्तर भूखन।।११३।।
नख सिख लों बरनन करूं, याद कर अपना तन।
खोल नैन खिलवत में, बैठ तले चरन।।११४।।
जैसा केहेत हों हक को, यों ही हादी जान।
आसिक मासूक दोऊ एक हैं, ए कर दई मसिएं पेहेचान।।११५।।
जुगल किसोर तो कहे, जो आसिक मासूक एक अंग।
हक खिन में कई रूप बदलें, याही विध हादी रंग।।११६।।

हमारे फुरमान में, हकें केते लिखे कलाम।
मासूक मेरा महंमद, आसिक मेरा नाम।।११७।।

।।मंगलाचरण सम्पूर्ण।।

केस तिलक निलाट पर, दोऊ रेखा चली लग कान।
केस न कोई घट बढ़, सोभा चाहिए जैसी सुभान।।११८।।
एक स्याम नूर केसन की, चली रोसन बांध किनार।
दूजी गौर निलाट संग, करे जंग जोत अपार।।११९।।
सोभा चलि आई लवने लग, पीछे आई कान पर होए।
आए मिली दोऊ तरफ की, सोभा केहेवे न समर्थ कोए।।१२०।।
याही भांत भौंह नेत्र संग, करत जंग दोऊ जोर।
स्याह उज्जल सरभर दोऊ, चली चढ़ि टेढ़ी अनी मरोर।।१२१।।
दोऊ अनियां भौंह केसन की, निलाट तले नैन पर।
रेखा बांध चली दोऊ किनारी, आए अनियां मिली बराबर।।१२२।।
दोऊ नेत्र किनारी सोभित, घट बढ़ कोई न केस।
उज्जल स्याह दोऊ लरत हैं, कोई दे ना किसी को रेस।।१२३।।
तिलक निलाट न किन किया, असल बन्यो रोसन।
कई रंग खूबी खिन में, सोभा गिनती होए न किन।।१२४।।
देह इन्द्री फरेब की, देखत इल्लत फना।
सो क्यों कहे बका सुभान मुख, इन अंग की जो रसना।।१२५।।
नासिका हक सूरत की, ए जो स्वांस देत खुसबोए।
ब्रह्मांड फोड़ इत आवत, इत रूह बास लेत सोए।।१२६।।

बिन मोमिन कोई ना ले सके, हक नासिका गुन।
कह्या अर्स हक वतन, सो किया दिल जिन।।१२७।।
हक सूरत की बारीकियां, ए जानें अर्स अरवाए।
हक सूरत तो जान हीं, जो कोई और होए इप्तदाए।।१२८।।
तीन खूंनें तले नासिका, खूंना चढ़ता चौथा ऊपर।
ए खूबी जानें रूह अर्स की, ए जो अनी आई नमती उतर।।१२९।।
दोऊ छेद्रों के गिरदवाए, यों पांखड़ी फूल कटाव।
बीच अनी आई जो नासिका, ए मोमिन जानें मुख भाव।।१३०।।
इन अनिएं और अनी मिली, तिन उतर अनी हुई दोए।
किनार तले दो छेद्र के, सोभा लेत अति सोए।।१३१।।
दोऊ छेद्र तले अधुर ऊपर, तिन बीच लांक खूंने तीन।
सोई सोभा जाने इन अधुर की, जो होए हुकम आधीन।।१३२।।
और तले जो अधुर, दोऊ जोड़ सोभित जो मुख।
रेखा लाल दोऊ सोभित, रूह देख पावे अति सुख।।१३३।।
तले अधुर के लांक जो, मुख बराबर अनी तिन।
सेत बीच बिन्दा खुसरंग, ए मुख सोभा जानें मोमिन।।१३४।।
इन तले गौर हरवटी, जानों मुख सदा हंसत।
ए सोभा जाने अरवा अर्स की, जिन दिल में हक बसत।।१३५।।
ए रंग कहे मैं इन मुख, पर किन विध कहूं सलूक।
ए करते मुख बरनन, दिल होत नहीं टूक टूक।।१३६।।
फेर कहूं हरवटीय से, ज्यों सुध होए मुख कमल।
हक मुख मोमिन निरखहीं, जिन दिल अर्स अकल।।१३७।।

हरवटी गौर मुख मुतलक, खुसरंग बिन्दा ऊपर।
बीच लांक तले अधुर, चार पांखड़ी हुई बराबर।।१३८।।
गौर पांखड़ी दो लांक की, लाल पांखड़ी दो तिन पर।
अधुर अधुर दोऊ जुड़ मिले, हुई लांक के सरभर।।१३९।।
जोड़ बनी दोऊ अधुर की, निपट लाल सोभित।
तिन ऊपर दो पांखड़ी, हरी नेक टेढ़ी भई इत।।१४०।।
दन्त सलूकी रंग की, इन जुबां कही न जाए।
मुख मुस्कत दन्त देखत, क्या केहे देऊं बताए।।१४१।।
क्यों कहूं रंग रसना, मुख मीठा बोल बोलत।
स्वाद लेत रस अर्स के, जुबां केहे ना सके सिफत।।१४२।।
रस जानत सब अर्स के, रस बोलत रसना बैन।
रूहें एक सब्द सुनें रस का, तो पावें कायम सुख चैन।।१४३।।
नेक अधुर दोऊ खोलहीं, दन्त लाल उज्जल झलकत।
अधुर लाल दो पांखड़ी, जानों के नित्य मुसकत।।१४४।।
दन्त उज्जल ऐनक ज्यों, माहें जुबां देखाई देत।
देख दन्त की नाजुकी, अति सुख मोमिन लेत।।१४५।।
कबूं दन्त रंग उज्जल, कबूं रंग लालक।
दोऊ खूबी दन्तन में, माहें रोसन ज्यों ऐनक।।१४६।।
दोऊ बीच अधुर रेखा मुख, कटाव तीन तीन तरफ दोए।
पांखें रंग सुरंग दोऊ उपली, चढ़ि टेढ़ी सोभा देत सोए।।१४७।।
खुसरंग बीच सिंघोड़ा, तले दो अनी ऊपर एक।
इन दोऊ पांखें खुसरंग, ए कटाव सोभा विसेक।।१४८।।

तिन अनी पर दूजी अनी, सोभित सिंघोड़ा सुपेत।
ऊपर पांखें दोऊ फिरवली, बीच छेद्र सोभा दोऊ देत।।१४९।।

इन फूल ऊपर आई नासिका, सो आए बीच अनी सोभाए।
तिन पर रेखा दोऊ तिलक की, रंग खिन में कई देखाए।।१५०।।

दोऊ नेत्र टेढ़े कमल ज्यों, अनी सोभा दोऊ अतन्त।
जब पांपण दोऊ खोलत, जानों कमल दो विकसत।।१५१।।

नासिका के मूल सें, जानों कमल बने अदभूत।
स्याम सेत झांई लालक, सोभा क्यों कहूं अंग लाहूत।।१५२।।

और कई रंग दोऊ कमल में, टेढ़े चढ़ते निपट कटाव।
मेहेर भरे नूर बरसत, हक सींचत सदा सुभाव।।१५३।।

गौर गलस्थल गिरदवाए, और बीच नासिका गौर।
स्याह पांखड़ी कमल पर, सोभित टेढ़ियां नूर जहूर।।१५४।।

अनी चार दोऊ कमल की, दो बंकी चढ़ती ऊपर।
अति स्याह टेढ़ी पांखड़ी, कछू अधिक दोऊ बराबर।।१५५।।

उज्जल निलाट तिन पर, आए मिली केस किनार।
सोहे रेखा बीच तिलक, जुबां कहा कहे सोभा अपार।।१५६।।

दोऊ तरफों रेखा हरवटी, आए मिली कानन।
गौर कान सोभा क्यों कहूं, नहीं नेत्र जुबां मेरे इन।।१५७।।

गौर गाल दोऊ निपट, माहें झलकत मोती लाल।
ए सोभा कान की क्यों कहूं, इन जुबां बिना मिसाल।।१५८।।

केस रेखा कानों पीछे, बीच में अंग उज्जल।
हक मुख सोभा क्यों कहिए, इन जुबां इन अकल।।१५९।।

मुकट बन्यो सिर पाचको, रंग नंग तामें अनेक।
जुदे जुदे दसों दिस देखत, रंग एक पे और विसेक।।१६०।।
असल नंग पाच एक है, असल रंग तामें दस।
दस दस रंग हर दिसें, सोभा क्यों कहूं जवेर अर्स।।१६१।।
और मुकट सिर हक के, केहेनी सोभा तिन।
सो न आवे सोभा सब्द में, मुकट क्यों कहूं जुबां इन।।१६२।।
दस रंग कहे एक तरफ के, दूजी तरफ दस रंग।
सो रंग रंग कई किरने उठें, किरन किरन कई तरंग।।१६३।।
किन विध कहूं सलूकियां, हर दिस सलूकी अनेक।
देख देख जो देखिए, जानों उनथें एह नेक।।१६४।।
एक दोरी रंग नंग दस की, ऐसी मूल मुकट दोरी चार।
गिरदवाए निलवट पर, सुख क्यों कहूं सोभा अपार।।१६५।।
यामें एक दोरी अव्वल तले, कांगरी दस रंग ता पर।
तिन दोरी पर बनी बेलड़ी, और कहूं सुनो दिल धर।।१६६।।
इन पर भी दोरी बनी, ता पर बेल और जिनस।
तिन पर दोरी और कांगरी, जानों उनथें एह सरस।।१६७।।
चारों दोरी के रंग कहे, और दस रंग कांगरी दोए।
और जिनस दो बेल की, रंग बोहोत ना गिनती होए।।१६८।।
दस रंग कांगरी के कहूं, चार मनके ऊपर तीन।
दो तीन पर एक दो पर, ए जानें दस रंग रूह प्रवीन।।१६९।।
ए दस रंग के मनके दस, ऊपर एक रंग तले दोए।
दोए रंग तले तीन हैं, तीन रंग तले चार सोए।।१७०।।

इन विध चार दोरी भई, और दोए भई कांगरी।
दोए बेली कई रंगों की, ए गिनती जाए न करी।।१७१।।
ऊपर फिरते फूल कटाव कई, कई बूटियां नकस।
तिन पर कही जो कांगरी, फिरती अति सरस।।१७२।।
तिन ऊपर टोपी बनी, ऊपर चढ़ती अनी एक।
तले कटाव कई रंग नंग, ए अनी फूल बन्यो विसेक।।१७३।।
तीन खूंने तिन ऊपर, दो दोऊ तरफों बीच एक।
दस दस नंग तिनों में, सो मोमिन कहें विवेक।।१७४।।
मानिक मोती पांने नीलवी, गोमादिक पाच पुखराज।
और हीरा नंग लसनियां, बीच मनि दसमी रही बिराज।।१७५।।
ए दस रंग नंग तिनों में, फिरते बने तीन फूल।
तले डांड़ियां रंग अनेक हैं, ए सोभा देख हूजे सनकूल।।१७६।।
दसों दिसा जित देखिए, मन चाह्या रूप देखाए।
बिना निमूने इन जुबां, किन बिध देऊं बताए।।१७७।।
जिन रूह का दिल जिन विध का, सोई विध तिन भासत।
एक पलक में कई रंग, रूह जुदे जुदे देखत।।१७८।।
एह मुकट इन भांत का, पल में करे कई रूप।
जो रूह जैसा देख्या चाहे, सो तैसा ही देखे सरूप।।१७९।।
मैं मुकट कहूं बुध माफक, ए तो अर्स जवेर के नंग।
नए नए कई भांत के, कई खिन में बदले रंग।।१८०।।
और विध मुकट में, रूहें आवें सब मिल।
सब रूप रंग देखे इनमें, जो चाहे जैसा दिल।।१८१।।

याही भांत सब भूखन, याही भांत वस्तर।
वस्तर भूखन सब एक रस, ज्यों कुन्दन में जड़तर।।१८२।।
ए जड़े घड़े किन ने नहीं, ना पेहेर उतारत।
दिल चाहे रंग खिन में, मन पर सोभा फिरत।।१८३।।
जिन खिन रूह जैसा चाहत, सो तैसी सोभा देखत।
बारे हजार देखें दिल चाहे, ए किन विध कहूं सिफत।।१८४।।
मोती करन फूल कुंड़ल, कहूं केते नाम भूखन।
पलमें अनेक बदलें, सुन्दर सरूप कानन।।१८५।।
जवेर कहे मैं अर्स के, और जवेर तो जिमी से होत।
सो हक बका के अंग को, कैसी देखावे जोत।।१८६।।
और नई पैदास अर्स में नहीं, ना पुरानी कबूं होए।
या रसांग या जवेर, जिन जानों अर्स में दोए।।१८७।।
अर्स साहेबी बुजरक, तिनको नाहीं पार।
ए नूर के एक पलथें, कई उपजे कोट संसार।।१८८।।
सो नूर नूरजमाल के, नित आवें दीदार।
तिन हक के वस्तर भूखन, ए मोमिन जानें विचार।।१८९।।
जिन मोमिन की सिफायत, करी होए मेंहेंदी महंमद।
सो जानें अर्स बारीकियां, और क्या जाने दुनी जो रद।।१९०।।
पेहेनावा नूरजमाल का, वस्तर या भूखन।
ज्यों नूर का जहूर, ए जानत अर्स मोमिन।।१९१।।
ए कबूं न जाहेर दुनी में, अर्स बका हक जात।
सो इन जुबां इत क्या कहूं, जो इन सरूप को सोभात।।१९२।।

वस्तर भूखन हक के, ए केहेनी में ना आवत।
सिनगार करें दिल चाह्या, जो सबों को भावत।।१९३।।
तो ए क्यों आवे बानी में, कर देखो सहूर हक।
ए अर्स तनों विचारिए, तुम लीजो बुध माफक।।१९४।।
अर्स में भी रूहें लेत हैं, जैसी खाहिस जिन।
रूह जैसा देख्या चाहे, तिन तैसा होत दरसन।।१९५।।
वस्तर भूखन किन ना किए, हैं नूर हक अंग के।
ए क्यों आवें इन केहेनी में, अंग सांई के सोभावें जे।।१९६।।
अपार सूरत साहेब की, अपार साहेब के अंग।
अपार वस्तर भूखन, जो रेहेत सदा अंगों संग।।१९७।।
जो सोभा हक सूरत की, सो क्यों पुरानी होए।
नई पुरानी तित कहावत, जित कहियत हैं दोए।।१९८।।
इत कबूं न होए पुराना, ना पैदा कबूं नया।
दीदार करें रूहें खिन में, खिन खिन दिल चाह्या।।१९९।।
जामा पटुका और इजार, ए सबे हैं एक रस।
कण्ठ हार सोभा जामें पर, जानों एक दूजे पे सरस।।२००।।
कण्ठ तले हार दुगदुगी, कई विध विध के विवेक।
कई रंग जंग जोतें करे, देखत अलेखे रस एक।।२०१।।
जुड़ बैठी जामें पर चादर, सोभा याही के मान।
ए नाम लेत जुदे जुदे, हक सोभा देख सुभान।।२०२।।
बगलों कोतकी कटाव, और बंध बेल गिरवान।
रंग जुदे जुदे झलकत, रस एकै सब परवान।।२०३।।

बांहें बाजू बंध सोभित, रंग केते कहूं गिन।
तेज जोत लरें आकास में, क्यों असल निरने होए तिन।।२०४।।

क्यों कहूं सोभा फुंदन, लटकत हैं एक जुगत।
आहार देत हैं आसिकों, देख देख न होए तृपित।।२०५।।

या विध काड़ों पोहोंचियां, या विध कड़ों बल।
कई ऊपर रंग जंग करें, तामें गिने न जाए असल।।२०६।।

हस्त कमल अति कोमल, उज्जल हथेली लाल।
केहेते लीकें सलूकियां, हाए हाए लगत न हैड़े भाल।।२०७।।

पतली पांचों अंगुरियां, पांचों जुदी जुगत।
जुदे जुदे रंग नंग मुंदरी, सोभा न पोहोंचे सिफत।।२०८।।

निरमल अंगुरियों नख, ताकी जोत भरी आकास।
सब्द न इन आगूं चले, क्यों कहूं अर्स प्रकास।।२०९।।

अब चरन कमल चित्त देय के, बैठ बीच खिलवत।
देख रूह नैन खोल के, ज्यों आवे अर्स लज्जत।।२१०।।

इत बैठ निरख चरन को, देख चकलाई चित्त दे।
नरम तली अति उज्जल, रूह तेरा सुख दायक ए।।२११।।

जोत देख चरन नख की, जाए लगी आसमान।
चीर चली सब जोत को, कोई ना इन के मान।।२१२।।

तेज कोई ना सेहे सके, बिना अर्स रूह मोमिन।
तेजें उड़े परदा अन्धेरी, ए सहे बका अर्स तन।।२१३।।

अर्स तन की एह बैठक, ए जोतै के सींचेल।
ए अरवा तन सब अर्स के, इनों नजरों रहे ना खेल।।२१४।।

पांउं देख देख भूखन, कई विध सोभा करत।
सो नए नए रूप अनेक रंगों, खिन खिन में कई फिरत।।२१५।।
चारों जोड़े चरन तो कहूं, जो घड़ी साइत ठेहेराय।
खिन में करें कोट रोसनी, सो क्यों आवे माहें जुबांए।।२१६।।
हरी इजार माहें कई रंग, ऊपर जामा दावन सुपेत।
कई रंग झांई देख के, अर्स रूहें सुख लेत।।२१७।।
फुन्दन बन्ध अति सोभित, माहें रंग अनेक झलकत।
ए सेत हरे के बीच में, माहें नरम झाबे खलकत।।२१८।।
जामें दावन सेत झलकत, जोत उठत आकास।
और जोत चढ़त करती जंग, पीत पटुके की प्रकास।।२१९।।
हार सोभित हिरदे पर, बाजू बन्ध पोहोंची कड़े।
सुन्दर सरूप सिर मुकट, दिल आसिकों देखत खड़े।।२२०।।
चोली चादर हार झलकत, आकास रह्यो भराए।
तो सोभा मुख मुकट की, किन बिध कही जाए।।२२१।।
मीठी सूरत किसोर की, गौर लाल मुख अधुर।
ए आसिक नीके निरखत, मुख बानी बोलत मधुर।।२२२।।
चारों चरन बराबर, सुभान और बड़ी रूह जी।
गौर सब गुन पूरन, सुन्दर सोभा और सलूकी।।२२३।।
तेज जोत नूर भरे, लाल तली कोमल।
लाल लांके लीकें क्यों कहूं, रूह निरखे नेत्र निरमल।।२२४।।
चारों तरफों चकलाई, फना अदभुत रूह खैंचत।
एड़ियां अति अचरज, इत आसिक तले बसत।।२२५।।

चारों चरन अति नाजुक, जो देखूं सोई सरस।
ए अंग नाहीं तत्व के, याकी जात रूह अर्स।। २२६।।

ए मेहेर करें चरन जिन पर, देत हिरदे पूरन सरूप।
जुगल किसोर चित्त चुभत, सुख सुन्दर रूप अनूप।।२२७।।

जुगल किसोर अति सुन्दर, बैठे दोऊ तखत।
चरन तले रूहों मिलावा, बीच बका खिलवत।।२२८।।

महामत कहे मेहेबूब की, जेती अर्स सूरत।
सो सब बैठीं कदमों तले, अपनी ए निसबत।।२२९।।

।।सिनगार।।प्रकरण।।२१।।

श्री राज जी का सातवाँ शृंगार

सिनगार कलस तिन सिनगार बरनन विरहा रस

क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कही न किन।
ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन।।१।।

बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखतहीं उड़े तन।।२।।

हक देखे वजूद ना रहे, ज्यों दारू आग से उड़त।
यों वाहेदत देखें दूसरा, पाव पल अंग न टिकत।।३।।

हक इस्क आग जोरावर, इनमें मोमिन बसत।
आग असल जिनों वतनी, यामें आठों जाम अलमस्त।।४।।

जो निस दिन रहे आग में, ताए आगै के सब तन।
वाको जलाए कोई ना सके, उछरे आगै के वतन।।५।।

आग जिमी पानी आग का, आग बीज आग अंकूर।
फल फूल बिरिख आग का, आग मजकूर आग सहूर।।६।।
बिरिख मोमिन आग इस्क, और आग इस्क अर्स।
सब पीवें आग इस्क रस, दिल आगै अरस-परस।।७।।
घर मोमिन आग इस्क में, हक अगनी के पालेल।
सोई इस्क आग देखावने, ल्याए जो माहें खेल।।८।।
जो पैदा हुआ आग का, सो आग में जलत नाहें।
वह वजूद आग इस्क के, रहें हमेसा आग माहें।।९।।
सोई बात करें हक अर्स की, सहूर या बेसहूर।
हुए सब विध पूरन पकव, हक अर्स दिन जहूर।।१०।।
जो हक देखे टिक्या रहे, सोई अर्स के तन।
सोई करें मूल मजकूर, सोई करे बरनन।।११।।
पर ए देख्या अचरज, जो विरहा सब्द सुनत।
क्यों तन रह्या जीव बिना, हाए हाए ए सुनत न अरवा उड़त।।१२।।
आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख विरहा ना निकसत।
जब दिल विरहा जानिया, तब आह अंग चीर चलत।।१३।।
ए हांसी कराई हुकमें, इस्क दिया उड़ाए।
मुरदा ज्यों इस्क बिना, गावत विरहा लड़ाए।।१४।।
कबूं अर्स रूहें ऐसी ना करें, जैसी हमसे हुई इन बेर।
अर्स रूहों को विरहा रसें, हुए बेसक न लैयां घेर।।१५।।
चरन तली की जो लींकें, सो एक लीक न होए बरनन।
तो मुख से चरन क्यों बरनवूं, जो नूरजमाल का तन।।१६।।

इन चरनों विध क्यों कहूं, नाजुक निपट नरम।
ए बरनन करते इन जुबां, हाए हाए उड़त न अंग बेसरम।।१७।।
चरन केहेती हों मुखथें, जो निरखती थी निस दिन।
सो समया याद न आवहीं, क्यों न लगे कलेजे अगिन।।१८।।
चरन अंगूठे चित्त दे, नैनों नखन देखती जोत।
नजरों निमख न छोड़ती, हाए हाए सो अब लोहू भी ना रोत।।१९।।
नैनों अंगुरियां देखती, कोमलता हाथ लगाए।
सो मेरे नैन नाम धराए के, हाए हाए जल बल क्यों न जाए।।२०।।
चरन तली रेखा देखती, मेरी आंखों नीके कर।
ए कटाव किनार पर कांगरी, हाए हाए नैना जले न नाम धर।।२१।।
रंग लाल कहूं के उज्जल, के देख खूबियां होत खुसाल।
सो देखन वाले नाम धराए के, हाए हाए ओ जले न माहें क्यों झाल।।२२।।
नाजुक सलूकी मीठी लगे, नैना देखत ना तृपिताए।
हाए हाए ए अनुभव दिल क्यों भूलै, ए हुकमें भी क्यों पकराए।।२३।।
नाम जो लेते विरह को, मेरी रसना गई ना टूट।
सो विरहा नैनों देख के, हाए हाए गैयां न आंखां फूट।।२४।।
हक बानी कानों सुनती, कानों सुन के करती मैं बात।
सो अवसर हिरदे याद कर, हाए हाए नूर कानों का उड़ न जात।।२५।।
क्यों कहूं चरन के भूखन, अर्स जड़ सबे चेतन।
सोभा सुन्दर सब दिल चाही, बोल बोए नरम रोसन।।२६।।
क्या वस्तर क्या भूखन, असल अंग के नूर।
हाए हाए रूह मेरी क्यों रही, करते एह मजकूर।।२७।।

रंग रेसम हेम जवेर, ना तेज जोत सब्द लगत।
एही अचरज अरवाहें अर्स की, ए सुनते क्यों ना उड़त।।२८।।
याही भांत इजार की, भांत भूखन की सब।
रूप करें कई दिल चाहे, जैसा रूह चाहे जब।।२९।।
इजार बंध याही रस का, भांत भांत झलकत।
देख लटकते फुंदन, हाए हाए अरवा क्यों न कढ़त।।३०।।
चरन से कमर लग, भूखन या वस्तर।
हेम जवेर या रेसम, सब एकै रस बराबर।।३१।।
दिल चाही नरम सोभित, दिल चाही जोत खुसबोए।
जिन खिन जैसा दिल चाहे, सब विध दें सुख सोए।।३२।।
कई रंग हैं इजार में, उठत जामें में झांई।
अरवा क्यों सखत हुई, दिल देख उड़त क्यों नाहीं।।३३।।
आसमान जिमी के बीच में, भरी जोत उठें कई रंग।
घट बढ़ काहूं है नहीं, करें दिल चाही कई जंग।।३४।।
ए सब विध दिल देखत, करे जुबां अकल बरनन।
तो भी अरवा ना उड़ी, कोई सखत अंतस्करन।।३५।।
दिल सखत बिना इन सरूप की, इत लज्जत लई न जाए।
ए हुकम करत सब हिकमतें, हक इत ए सुख दिया चाहें।।३६।।
ए रूह के नैनों देखिए, नाजुक कमर निपट।
अति देखी सुन्दर चढ़ती, कही जाए न सोभा कटि।।३७।।
कटि कमर सलूकी देख के, नैना क्यों रहे अंग को लाग।
ए बातें दिल से विचारते, हाए हाए लगी न दिल को आग।।३८।।

ए गौर रंग लाल उज्जल, छाती कई विध देत तरंग।
नाहीं निमूना जोत जवेर, जो दीजे अर्स के नंग।।३९।।
हैड़ा हक का देख कर, मेरा जीव रह्या अंग माहें।
हाए हाए मुरदा दिल मेरा क्यों हुआ, ए देख चलया नाहें।।४०।।
हक हैड़ा देखकर, मेरे हैड़े रेहेत क्यों दम।
मांग्या सुख इत देवे को, सो राखत मासूक हुकम।।४१।।
हाथ पांउं मेरे क्यों रहे, देख हक हाथ पांउं।
हाए हाए ए जुलम क्यों सह्या, क्यों भूले अवसर दाउ।।४२।।
चकलाई दोऊ खभन की, अंग उतरता सलूक।
देख कमर कटि पतली, हाए हाए दिल होत ना टूक टूक।।४३।।
मैं देख्या अंग जामे बिना, नाजुक जोत नरम।
ए केहेनी में न आवहीं, ए अंग होएं न मांस चरम।।४४।।
जामे दावन बांहें चोली, सिंध सागर रल्या मानो खीर।
जोत भरी जिमी आसमान, मानो चलसी ऊपर चीर।।४५।।
चीन मोहोरी बगल या बीच, गिरवान कोतकी नकस।
सब जामा जानों के भूखन, ठौर एक दूजे पे सरस।।४६।।
जब जैसा दिल चाहत, तिन खिन तैसा देखत।
वस्तर भूखन हक अंग के, केहेनी में न आवत।।४७।।
ए वस्तर भूखन भांत और हैं, अर्स अंग का नूर।
जो सोभा देत इन अंग को, सो क्यों आवे माहें सहूर।।४८।।
और क्या चीज ऐसी अर्स में, जो सोभा देवे सरूप को।
हक सरभर कछू न आवहीं, रूह देखे विचार दिल मों।।४९।।

ए निपट बात बारीक है, अर्स रूहें करना विचार।
और कोई होवे तो करे, बात अलेखे अपार।।५०।।

सोभा हक के अंग की, सो अंग ही की सोभा अंग।
ऐसी चीज कोई है नहीं, जो सोभे इन अंग संग।।५१।।

कहूं पटुके की सलूकी, के ए भूखन कहूं कमर।
ए छब फब दिल देख के, न जानों रूह रेहेत क्यों कर।।५२।।

ए कहे जाएं न वस्तर भूखन, ए चीज दुनियां के।
जो सोभा देत हक अंग को, ताए क्यों नाम धरिए ए।।५३।।

हक के अंग का नूर जो, ए रूहों अर्स में सुध होत।
इत सब्द न कोई पोहोंचहीं, जो कोट रोसन कहूं जोत।।५४।।

नख अंगुरीयां अंगूठे, कोई दिया न निमूना जाए।
जोत क्यों कहूं इन मुख, रहे अंबर जिमी भराए।।५५।।

पतली अंगुरियां उज्जल, सोभा क्यों कहूं मुंदरियों मुख।
ए देखे रूह मोमिन, सोई जानें ए सुख।।५६।।

लीकें हथेली उज्जल, सलूकी पोहोंचों ऊपर।
ए बेवरा केहेते अकल, हाए हाए अरवा रेहेत क्यों कर।।५७।।

पोहोंची काड़ों कड़े झलकत, हेम जवेर कई रंग रस।
दिल चाह्या रूप रंग ल्यावहीं, जो देखिए सोई सरस।।५८।।

मोहोरी चूड़ी बांहे बाजू बंध, सोभा बारीक कई बरनन।
नाम लेत इन चीज का, हाए हाए अरवा उड़त ना मोमिन।।५९।।

हक हुकम राखत जोरावरी, बात आई ऊपर हुकम।
ना तो रहे ना सुन वचन, पर ज्यों जानें त्यों करें खसम।।६०।।

सोभा लेत हैड़े खभे, कर हेत सुनत श्रवन।
विचार किए जीवरा उड़े, या उड़े देख भूखन।।६१।।
गौर हरवटी अति सुन्दर, या देख के लांक सलूक।
लाल अधुर देख ना गया, लोहू मेरे अंग का सूक।।६२।।
मुख चौक छबि सलूकियां, सुन्दर अति सरूप।
गाल लाल अति उज्जल, सुखदायक सोभा अनूप।।६३।।
निलवट तिलक नासिका, रंग पल में अनेक देखाए।
दंत बीड़ी मुख मोरत, हाए हाए जीवरा उड़ न जाए।।६४।।
रंग नासिका की मैं क्यों कहूं , गुन सलूक अदभूत।
सुन्य ब्रह्मांड को फोड़ के, अर्स बास लेत बीच नासूत।।६५।।
नैन सैन जो करत हैं, सामी रूह मोमिन।
ए सैना दिल लेय के, हाए हाए चिराए न गया ए तन।।६६।।
ए नैना नूरजमाल के, देख सलोंने सलूक।
ए सुन नैन बिछोड़ा मोमिन, हाए हाए हो न गए भूक भूक।।६७।।
अंबर धरा के बीच में, केस लवने नूर झलकत।
ए सोभा मुख क्यों कहूं, कानों मोती लाल लटकत।।६८।।
कानन मोती केहेत हों, पल में बदलत भूखन।
आसिक देखे कई भांतों, सुख देवें दिल रोसन।।६९।।
कानों कड़ी गठौरी-मुरकी, जुगत जिनस नहीं पार।
नाम नंग रंग रसायन क्यों कहूं, रूप खिन में बदलें बेसुमार।।७०।।
उज्जल निलाट लाल तिलक, क्यों कहूं सोभा असल।
सुन्दर सलूकी सरूप की, माहें आवत ना अकल।।७१।।

पाग कही सिर हक के, और कह्या सिर मुकट।
हाए हाए जीवरा क्यों रह्या, खुलते हिरदे ए पट।।७२।।
कलंगी दुगदुगी तो कहूं, जो पगरी होए और रस।
वस्तर भूखन या अंग तीनों, हर एक पे एक सरस।।७३।।
ताथें रस तो सब एक है, तामें अनेक रंग।
कलंगी दुगदुगी ठौर अपने, करत माहों माहें जंग।।७४।।
मोमिन असल सूरत अर्स में, अबलों न जाहेर कित।
खोज खोज कई बुजरक गए, सो अर्स रूहें ल्याई हकीकत।।७५।।
नूर खूबी कही केसन की, हक सरूप की इत।
हाए हाए मेरा अंग मुरदा ना हुआ, केहेते बका निसबत।।७६।।
नख सिख लों बरनन किया, और गाया लड़ाए लड़ाए।
मोमिन चाहिए विरहा सुनते, तबहीं अरवा उड़ जाए।।७७।।
जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को।
आसिक और मासूक, कैसी तफावत इनमों।।७८।।
नाजुक सोभा हक की, जो रूह के आवे नजर।
तो अबहीं तोको अर्स की, होए जाए फजर।।७९।।
ज्यों सूरत दिल देखत, त्यों रूह जो देखे सूरत।
बेर नहीं रूह लज्जत, तेरे अंग जात निसबत।।८०।।
फरक नहीं दिल रूह के, ए तो दोऊ रहे हिल मिल।
अर्स में जो रूह है, तो हकें कह्या अर्स दिल।।८१।।
तेरा दिल लग्या ज्यों सूरत को, त्यों जो सूरतें रूह लगे।
तो अबहीं ले रूह लज्जत, एक पलक में जगे।।८२।।

रूह तो तेरी दिल बीच में, तो कह्या दिल अर्स।
सेहेरग से नजीक तो कह्या, जो रूह दिल अरस-परस।।८३।।
सूरत केहेते हक की, आगूं रूह मोमिन।
हाए हाए रूह मुरग ना उड़या, बरनन करते अर्स तन।।८४।।
आगूं अरवाहें अर्स की, करी बातें हक जुबान।
हाए हाए तन मेरा क्यों रह्या, करते खिलवत बयान।।८५।।
रूहें रहें अर्स दरगाह में, जो दरगाह नूर-जमाल।
ए किया बयान खिलवत का, हाए हाए रूह रही किन हाल।।८६।।
फेर फेर मेहेबूब देखिए, लगे मीठड़ा मुख मासूक।
अंग गौर जोत अंबर लों, छब देख दिल होत न भूक भूक।।८७।।
रूप रंग अंग छबि सलूकी, कहे वस्तर भूखन।
ए केहेते अरवा ना उड़ी, हाए हाए कैसी हुज्जत मोमिन।।८८।।
पांउं लीक केहेते अरवा उड़े, क्यों बरनवी हक सूरत।
बंध बंध छूट ना गए, हाए हाए कैसी अर्स हुज्जत।।८९।।
कह्या गौर मुख मासूक का, और निलवट असल तिलक।
हाए हाए ए बयान करते क्यों जिए, हम में रही नहीं रंचक।।९०।।
बरनन किया श्रवन का, जाके ताबे दिल हुकम।
मासूक अंग बरनवते, हाए हाए मोमिन रहे क्यों हम।।९१।।
कहे गौर गलस्थल हक के, कई छब नाजुक कोमलता।
हाए हाए रूह इत क्यों रही, मुख देख मासूक बका।।९२।।
बड़ी रूहें देख्या हक को, हकें देख्या सामी भर नैन।
हाए हाए बात करते जीव क्यों रह्या, एह देख नैन की सैन।।९३।।

भौंह स्याह नैन अनियां कही, और कह्या जोड़ गौर अंग।
हाए हाए ए तन हुकमें क्यों रख्या, हुआ कतल न होते जंग।।९४।।
देखी निरमलता दंतन की, न आवे मिसाल लाल मानिक।
ज्यों देखत बीच चसमों, त्यों देखी जाए जुबां मुतलक।।९५।।
कबूं हीरा कबूं मानिक, इन रंग सोभा कई लेत।
दोऊ निरमल ऐनक ज्यों, परे होए सो देखाई देत।।९६।।
लालक इन अधुर की, हक कबूं दिलों देखावत।
बंध बंध जुदे होए ना पड़े, मेरा हैड़ा निपट सखत।।९७।।
हक मुख सलूकी क्यों कहूं, छबि सोभित गौर गाल।
बरनन करते ए सूरत, हाए हाए लगी न हैड़े भाल।।९८।।
मैं कही जो मुख मांड़नी, और कह्या मुख सलूक।
ए केहेते सलूकी मेरा अंग, हाए हाए हो न गया टूक टूक।।९९।।
कही गौर हरवटी हक की, लांक पर लाल अधुर।
कही दंत जुबां बीड़ी मुख, हाए हाए रूह क्यों रही सुन मधुर।।१००।।
लाल अधुर कहे मासूक के, सो दिलें भी देखी लालक।
ए देख लोहू मेरा क्यों रह्या, सूक न गया माहें पलक।।१०१।।
कंठ खभे बंध बंध का, नख सिख किया बरनन।
हाए हाए जीवरा मेरा क्यों रह्या, टूट्या न अन्तस्करन।।१०२।।
बरनन किया बका हक का, मैं हुकम लिया दिल ल्याए।
केहेते हैड़े की सलूकी, हाए हाए मेरी छाती न गई चिराए।।१०३।।
हकें अर्स किया दिल मोमिन, ए मता आया हक दिल से।
हकें दिल दिया किया लिख्या, हाए हाए मोमिन डूब न मुए इनमें।।१०४।।

हार कहे हैड़े पर, जोत भरी जिमी आसमान।
हाए हाए ए मुरदा जल न गया, नूर एता होते सुभान ।।१०५ ।।
कटि पेट पांसे कहे हक के, ले दिल के बीच नजर।
हाए हाए ख्वाबी तन क्यों रह्या, ए दिल को लेकर ।।१०६ ।।
कांध पीठ लीक सलूकी, कही इलमें दिल दे।
हाए हाए हुकमें ए तन क्यों रख्या, जो हुकम बैठा हुज्जत रूह ले ।।१०७ ।।
अर्स जवेर की क्यों कहूं, देखे बाजू बंध के नंग।
जिमी से आसमान लग, हाए हाए जीव कतल न हुआ देख जंग ।।१०८ ।।
हक हाथों की बरनन करी, मच्छे कोनी कलाई काड़े।
ए सुन जीव क्यों रेहेत है, ले ख्वाब झूठे भांडे ।।१०९ ।।
पोहोंचे लीकें हथेलियां, छबि अंगुरियां नख तेज।
देखो अचरज मुख केहेते, हो न गया रेजा रेज ।।११० ।।
रंग सलूकी भूखन, देख काड़े हाथों के।
ए जोत ले जीव ना उड़या, हाए हाए बड़ा अचम्भा ए ।।१११ ।।
कई रंग इजार मासूक की, दावन में झांई लेत।
छेड़े पटुके दावन पर, हाए हाए दिल अजूं न घाव देत ।।११२ ।।
चरन कमल मासूक के, चित्त में चुभें जिन।
ए छबि सलूकी भूखन, क्यों कर छोड़ें मोमिन ।।११३ ।।
ए चरन आवें जिन दिल में, सो दिल अर्स मुतलक।
कई मुतलक बातें अर्स की, दिल सब विध हुआ बेसक ।।११४ ।।
क्यों कहूं खूबी चरन की, और खूबी भूखन।
अद्भुत सोभा हक की, क्यों न होए अर्स तन ।।११५ ।।

चकलाई इन चरन की, भूखन छबि अनूपम।
दिल ताही के आवसी, जाको मुतलक मेहेर खसम।।११६।।
जो होवे अरवा अर्स की, सो इन कदम तले बसत।
सराब चढ़े दिल आवत, सो रूह निस दिन रहे अलमस्त।।११७।।
निमख न छोड़े चरन को, मोमिन रूह जो कोए।
निस दिन रहे खुमार में, आवत है चरन बोए।।११८।।
मासूक के चरनों का, किया बेवरा बरनन।
जीव उड़या चाहिए केहेते लीक, हाए हाए क्यों रहे मोमिन तन।।११९।।
हाथ पांउं मुख हैयड़ा, वस्तर भूखन हक सूरत।
ए ले ले अर्स बारीकियां, हाए हाए रूह क्यों न जागत।।१२०।।
जो जोत कहूं अंग नंग की, देऊं निमूना नरम पसम।
ए तो अर्स पत्थर या जानवर, सो क्यों पोहोंचे परआतम।।१२१।।
जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को।
खेलौने और खावंद, बड़ो तफावत इन मों।।१२२।।
जित आद अन्त न पाइए, तित तेहेकीक होए क्यों कर।
इत सब्द फना का क्या कहे, जित पाइए न अव्वल आखिर।।१२३।।
ए निरने करना अर्स का, तिन में भी हक जात।
इत नूर अकल भी क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात।।१२४।।
जवेर पैदा जिमीय से, सो भी नहीं कह्या अर्स में।
चौदे तबक उड़ावे अर्स कंकरी, इत भी बोलना नहीं ताथें।।१२५।।
जित चीज नई पैदा नहीं, ना कबूं पुरानी होए।
तित सब्द जुबां जो बोलिए, सो ठौर न रही कोए।।१२६।।

जो कहूं हक दिल माफक, तो इत भी सब्द बंधाए।
ताथें अर्स बारीकियां, सो किसी विध कही न जाए।।१२७।।

चुप किए भी ना बने, हुकम इलम आया इत।
और काम इनको नहीं, जो अर्स अरवा लई हुज्जत।।१२८।।

इलम कह्या जो लदुन्नी, सो तो हक का मुतलक।
इत मोमिन मिल पूछसी, क्यों रही रूहों को सक।।१२९।।

जो अर्स बातें सक हमको, तो हकें क्यों कह्या अर्स कलूब।
मोमिन कहे बीच वाहेदत, इन आसिकों हक मेहेबूब।।१३०।।

मेहेबूब आसिक एक कहें, वाहेदत भी एक केहेलाए।
अर्स भी दिल मोमिन कह्या, ए तो मिली तीनों विध आए।।१३१।।

और भी कहूं सो सुनो, मोमिन अर्स से आए उतर।
इलम दिया हकें अपना, अब इनों जुदे कहिए क्यों कर।।१३२।।

फुरमान आया इनों पर, अहमद इनों सिरदार।
हक बिना कछुए ना रखें, इनों दुनियां करी मुरदार।।१३३।।

ए सब बुजरकी इनों की, क्यों जुदे कहिए वाहेदत।
इने कुन्नकी दुनी क्या जानही, रूहें अर्स हक निसबत।।१३४।।

तिन से अर्स मता क्यों छिपा रहे, जो दिल अर्स कह्या मोमिन।
एक जरा न छिपे इन से, ए देखो फुरमान वचन।।१३५।।

बका पट किने न खोलिया, अव्वल से आज दिन।
हाए हाए तन न हुआ टुकड़े, करते जाहेर ए वतन।।१३६।।

अर्स बका द्वार खोल के, करी जाहेर हक सूरत।
अंग मेरा रह्या अचरजें, द्वार खोलते वाहेदत।।१३७।।

मेरी रूहे कह्या आगे रूहन, सुन्या मैं हक के मुख इलम।
ए बात केहेतें तन ना फट्या, हाए हाए ए देख्या बड़ा जुलम।।१३८।।
यों चाहिए मोमिन को, रूह उड़े सुनते हक नाम।
बेसक अर्स से होए के, क्यों खाए पिए करे आराम।।१३९।।
हक अर्स याद आवते, रूह उड़ न पोहोंचे खिलवत।
बेसक होए पीछे रहे, हाए हाए कैसी ए निसबत।।१४०।।
क्यों न खेलावें खिलवत में, रूह अपनी रात दिन।
हक इलमें अजूं जागी नहीं, कहावें अर्स अरवा तन।।१४१।।
बैठ इन ख्वाब जिमीय में, कहे अर्स अजीम का बातन।
हड्डी हड्डी जुदी होए ना पड़ी, तो कैसी रूह मोमिन।।१४२।।
याद न जेता हक अर्स, एही मोमिनों बड़ा कुफर।
हक वाहेदत इलम चीन्ह के, अजूं क्यों देखे दुनी नजर।।१४३।।
सुनते नाम हक अर्स का, तबहीं अरवा उड़ जात।
हाए हाए ए बल देख्या हुकम का, अजूं एही करावे बात।।१४४।।
वस्तर और भूखन कहे, हक अंग वाहेदत के।
ए केहते बारीकियां अर्स की, हाए हाए तन उड़या न ख्वाबी ए।।१४५।।
बेसक इलम ले दिल में, बरनन किया बेसक।
हुए बेसक रूह ना उड़ी, हाए हाए पोहोंची ना खिलवत हक।।१४६।।
कहे इलम रूहें इत हैं नहीं, है हुकम तो हक का।
हुए बेसक हुकम क्यों रहे, ले हुज्जत रूह बका।।१४७।।
बेसक हुए जो अर्स से, और बेसक हुए वाहेदत।
मुतलक इलम पाए के, हाए हाए हुकम क्यों रह्या ले हुज्जत।।१४८।।

नैन रहे नैन देख के, एही बड़ा जुलम।
न जानो क्यों सुरखरु, करसी हक हुकम।।१४९।।
ए विरहा सुन श्रवन रहे, लगी न सीखां कान।
हाए हाए वजूद न गल गया, सुन विरहा हादी सुभान।।१५०।।
संध संध टूटी नहीं, सुनते विरहा सुकन।
रोम रोम इन तन के, क्यों न लगी अगिन।।१५१।।
बातें इन विरह की, मैं गाई अंग अंग कर।
अचरज इन निसबतें, अरवा ना गई जर बर।।१५२।।
मेरे अंग सबे उड़ ना गए, सब देख हक के अंग।
सेज सुरंगी हक छोड़ के, रही पकड़ मुरदे का संग।।१५३।।
क्यों न उड़ी अकल अंग थें, जो बरनन किया अर्स हक।
ए पूरी हांसी बीच अर्स के, माहें गिरो आसिक।।१५४।।
करी हांसी हकें हम पर, ता विधसों चले न किन।
अब सो क्योंए न बनि आवहीं, जो रोऊं पछताऊं रात दिन।।१५५।।
सोई देखी जो कछू देखाई, अब देखसी जो देखाओगे।
हंसो खेलो जानों त्यों करो, बीच अर्स खिलवत के।।१५६।।
मोमिन दिल अर्स कर के, आए बैठे दिल माहें।
खुदी रूहों इत ना रही, इत गुनाह मोमिनों सिर नाहें।।१५७।।
फेर हिसाब कर जो देखिए, तो गुनाह रूहों आवत।
ए बेवरा है कलस में, मोमिन लेसी देख तित।।१५८।।
रूहें मोमिन इत आई नहीं, तिन वास्ते नहीं गुना।
पर एता गुनाह लगत है, इनों में जेता हिस्सा अर्स का।।१५९।।

महामत कहे मोमिनों पर, करी हांसी हुकमें।
ना तो अरवाहें इत क्यों रहें, बेसक होए हक सें।।१६०।।

।।सिनगार।।प्रकरण।।२२।।

।।श्री राज जी के सात शृंगार सम्पूर्ण।।

श्री श्यामा जी का पहला शृंगार

मंगलाचरण

बरनन करूं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर।
अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इनका जहूर।।१।।

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन।।२।।

सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।।३।।

रंग नरमाई सलूकी, अर्स अंग चरन।
बल बल जाऊं देख देख के, मेरे जीव के एही जीवन।।४।।

इन पांउं तले पड़ी रहूं, धनी नजर खोलो बातन।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन।।५।।

चारों जोड़े चरन के, और अनवट बिछिया रोसन।
बानी मीठी नरमाई जोत धरे, मेरे जीव के एही जीवन।।६।।

प्यारे मेरे प्राण के, मोहे पल छोड़ो जिन।
मैं पाई मेहेरे मेहेबूब की, मेरे जीव के एही जीवन।।७।।

ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखूं बीच तारन।
पकड़ राखूं पल ढ़ांप के, मेरे जीव के एही जीवन।।८।।
मेरे मीठे मीठरड़े आतम के, सो चुभ रहे अन्तस्करन।
रूह लागी मीठी नजरों, मेरे जीव के एही जीवन।।९।।
ए चरन कमल अर्स के, इनसे खुसबोए आवे वतन।
ए तन बका अर्स अजीम, मेरे जीव के एही जीवन।।१०।।
ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन।
ए निसबत हक अर्स की, मेरे जीव के एही जीवन।।११।।
मेहेरें नेहेर ल्याए चरन अन्दर, द्वार नूर पार खोले इन।
मोहे पोहोंचाई बका मिने, मेरे जीव के एही जीवन।।१२।।
सोभा सिनगार अंग सुखकारी, मेरी रूह के कण्ठ भूखन।
सब खूबियां मेरे इन सें, मेरे जीव के एही जीवन।।१३।।
ए मेहेर अलेखे असल, मेरे ताले अर्स के तन।
क्यों न होए मोहे बुजरकियां, मेरे जीव के एही जीवन।।१४।।
चित्त खैंच लिया इन चरनों, मोहे सब विध करी धंन धंन।
ए सिफत करूं क्यों इन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।।१५।।
ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन।
कहूं तो जो दूजा कोई होवहीं, मेरे जीव के एही जीवन।।१६।।
क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नाहीं ठौर बोलन।
ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीव के एही जीवन।।१७।।
करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन।
प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन।।१८।।

ए चरन दिल आवें निसबतें, ए मता अर्स रूहन।
ए धनी के दिए क्यों छूटहीं, मेरे जीव के एही जीवन।।१९।।
धनी देवें सहूर सब बिध, तो नैनों निरखूं निसदिन।
आठों जाम चौंसठ घड़ी, मेरे जीव के एही जीवन।।२०।।
महामत चाहें इन चरन को, कर मनसा वाचा करमन।
आए बैठे मेरे सब अंगों, मेरे जीव के एही जीवन।।२१।।

।।मंगलाचरण संपूर्ण।।

ए रूह सरूप नहीं तत्व को, इनको अस्वारी मन।
खान पान सुख सिनगार, ए होए रूह के चितवन।।२२।।
जो पेहेनावा अर्स का, अचरज अदभुत जान।
कहूं दुनियाँ में किन बिध, किन कबहूँ न सुनिया कान।।२३।।
कण्ठ कान मुख नासिका, ए जो पेहेनत हैं भूखन।
ए दुनियां ज्यों पेहेनत है, जिन जानो बिध इन।।२४।।
या वस्तर या भूखन, सकल अंग हाथ पाए।
सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित्त चाहे।।२५।।
अंग संग भूखन सदा, दिलके तअल्लुक असल।
ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अर्स में नाहीं नकल।।२६।।
ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, होत हमेसा बने।
दिल जैसा चाहे खिन में, तैसा आगूंहीं पेहेने।।२७।।
जाको नामै कायम, अखंड बका अपार।
सोई भूल जानो अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार।।२८।।

पेहेले सोभा कही सुभान की, सोई सोभा बड़ी रूह जान।
नहीं जुदागी इनमें, जुगल किसोर परवान।।२९।।
हक सूरत को नूर हैं, जिन जानो अंग और।
इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर।।३०।।
सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुन्दर।
अन्तर पट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नजर।।३१।।
लाल साड़ी कटाव कई, कई छापे बेली नकस।
क्यों कहूं छेड़े किनार की, सोभित अति सरस।।३२।।
माहें जरी जवेर रंग कई, जानों आगूंहीं बने असल।
जित जुगत जो चाहिए, सोभित अपनी मिसल।।३३।।
बेली किनार छेड़े बनी, सुन्दर अति सोभित।
कटाव फूल नकस कई, जुदी जुदी जड़ाव जुगत।।३४।।
ऐसे ही असल के, ना कछू बुने वस्तर।
ऐसे ही भूखन बने, किन घड़े न घाट घड़तर।।३५।।
चोली स्याम जड़ाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक।
जड़तर कंठ उर बांहें, कहां लग कहूं विवेक।।३६।।
जित बेली बनी चाहिए, और कांगरी फूल।
कई नकस खजूरे बूटियां, चोली सोभित है इन सूल।।३७।।
नंग हेम मिले तो कहूं, जो किन जड़े होए जड़तर।
नकस कटाव बेली तो कहूं, जो किन बनाए होंए हाथों कर।।३८।।
चरनी नीली अतलस, माहें अनेक बिध के रंग।
चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग।।३९।।

क्यों कहूं किनार की कांगरी, मानिक मोती सात नंग।
हीरे लसनिए पांने पोखरे, माहें पाच कुन्दन करें जंग।।४०।।
वस्तर धागा न सूझहीं, सरभर जरी नकस।
वस्तर भस्यो न बुन्यो किने, असल सबे एक रस।।४१।।
नवरंग इन नाड़ी मिने, कंचन धात उज्जल।
ए केहेती हों सब अर्स के, ए देखो दिल निरमल।।४२।।
क्या वस्तर क्या भूखन, चीज सबे सुखकार।
खुसबोए रोसन नरमाई, इन बिध अर्स सिनगार।।४३।।
सिर पर सोहे राखड़ी, जोत साड़ी में करे अपार।
फिरते मोती माहें मानिक, पांने पोखरे दोऊ किनार।।४४।।
ऊपर राखड़ी जो मानिक, क्यों देऊं इनकी मिसाल।
आसमान जिमी के बीच में, होए गयो सब लाल।।४५।।
कुन्दन माहें धरे अति जोत, आकास न माए झलकार।
बेन गूंथी तीन गोफने, जड़ित घूंघरी घमकार।।४६।।
तीन रंग जरी फुन्दन, गोफनड़े नंग जड़तर।
बारीक नंग नीले नकस, ए बरनन होए क्यों कर।।४७।।
पांन सोहे सेंथे पर, माहें बेल कांगरी कटाव।
हारें खजूरें बूटियां, मानों के जुगत जड़ाव।।४८।।
सिर पटली मोती सरें, माहें पांच नंग के रंग।
मोती सर सेंथे लग, नीले पीले लाल सेत नंग।।४९।।
तिन नंगों के फूल बने, आगूं सिर पटली कांगरी ।
निलवट से ले राखड़ी, बीच लाल मांग भरी ।।५०।।

अदभुत सोभा ए बनी, कहूं जो होवे और काहें ।
ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें ।।५१।।
बेनी गूंथी एक भांत सों, पीठ गौर ऊपर लेहेकत ।
देत देखाई साड़ी मिने, फिरती घूंघरड़ी घमकत ।।५२।।
चोली के बंध चारों बंधे, सोभित पीठ ऊपर।
झलकत फुन्दन चोली कांगरी, सोभा देखत साड़ी अंदर।।५३।।
ए छबि पीठ की क्यों कहूं, रंग गौर लांक सलूक।
ए सोभा केहेत सखत जीवरा, हुआ नहीं टूक टूक।।५४।।
मुख चौक छबि निलवट बनी, क्यों कर कहूं सिफत।
ए सोभा अर्स सरूप की, क्यों होए इन जुबां इत।।५५।।
पाच हीरे मोती मानिक, बेना चौक टीका सोभित।
सेंथें लाल तले मोती सरे, नूर रोसन तेज अंतत।।५६।।
जड़ित पानड़ी श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत।
ए जरी जोत कही न जावहीं, पांच नंग झलकत।।५७।।
काजल रेखा तो कहूं, जो होए सुपन के नैन।
ए स्याम सेत लाल असल, सदा सुखकारी सुख चैन।।५८।।
ए तन नैन अर्स के, नहीं और कोई देह।
ए निरखो नैनों रूह के, भीगल प्रेम सनेह।।५९।।
नैन तीखे अति अनियारे, सखी ए छबि कही न जाए।
आधे घूंघट मासूक को, निरखत नैन तिरछाए।।६0।।
सब अंग उमंग करत हैं, करने बात रेहेमान।
दिल मासूक का देख के, खैंचत हैं प्रेम बान।।६१।।

कहा कहूं नूर तारन का, सेत लालक लिए।
काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए।।६२।।
तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस।
पिउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस-परस।।६३।।
चकलाई चंचलाई की, छबि होए नहीं बरनन।
जो धनी देवें पट खोल के, तो तबहीं उड़े एह तन।।६४।।
बंके भौं भृकुटी लिए, सोभित गौर अंग।
अंग अंग भूखन भूखन, करत माहों माहें जंग।।६५।।
दोउ जड़ाव अदभुत, सात रंग नंग झाल।
सुच्छम झाल सोभा अति बड़ी, झांई उठत माहें गाल।।६६।।
फूल झालों के मुख पर, सोभा लेत अति नंग।
तिन नंगों जोत उठत है, तिनके अनेक तरंग।।६७।।
ऊपर किनार साड़ी सोभित, लाल नीली पीली जर।
छब फब बनी कोई भांत की, सेंथे लवने झाल ऊपर।।६८।।
ए जो कांगरी इन नंग की, सोभित माहें किनार।
गौर निलवट स्याम केसों पर, जाए अंबर लगी झलकार।।६९।।
सोभा कहूं अंग माफक, इन सुपन जुबां अकल।
सो क्यों पोहोंचे इन सरूप लों, जो बीच कायम बका असल।।७०।।
गौर रंग अति गालों के, ए रंग जानें इनके तन।
अचरज अदभुत वाही देखें, जो है अर्स मोमिन।।७१।।
मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत।
मुरली नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत।।७२।।

एक खसखस के दाने जेता, नंग रोसन अंबर भराए।
क्यों कहूं नंग मुरलीय के, ए जुबां इत क्यों पोहोंचाए।।७३।।
हक के अंग का नूर है, ए जो अर्स बका खावंद।
ए छबि इन सरूप की, क्यों केहेसी मत मंद।।७४।।
दंत लालक लिए मुख अधुर, क्यों कहूं रंग ए लाल।
जो कछू होवे पेहेचान, तो क्यों दीजे इन मिसाल।।७५।।
सुन्दर सरूप स्यामाजीय को, अर्स अखंड सिनगार।
रूह मुख निरख्यो चाहत, उर पर लटकत हार।।७६।।
एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत।
तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत।।७७।।
चौथा हार हीरन का, पांचमा सुन्दर नीलवी।
इन हारों बीच दुगदुगी, देखत सोभा अति भली।।७८।।
क्यों कहूं नंग दुगदुगी, ए पांचों सैन्या चढ़ाए।
जंग करें माहें जुदे जुदे, पांचों अंबर में न समाए।।७९।।
पांचों ऊपर हार हेंम का, मुख मोती सिरे नीलवी।
ए हार अति बिराजत, जड़तर चंपकली।।८०।।
पांच पाने पुखराज, जरी मांहे जड़ित।
चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत।।८१।।
ऊपर चोली के कांठले, बेल लगत कांगरी।
ऊपर चंपकलीय के, मोती मानिक पाने जरी।।८२।।
पांच लरी चीड़ तिन पर, कंठ लग आई सोए।
रंग नंग धात अर्स के, इन जुबां सिफत क्यों होए।।८३।।

सात हार के फुमक, जगमगे सातों रंग।
मूल बंध बेनी तले, बन रहे ऊपर अंग।।८४।।
बाजू बंध दोऊ बने, जरी फुमक लटकत।
हीरे लसनिएं नीलवी, देख देख रूह अटकत।।८५।।
नवरंग रतन नंग चूड़ के, अर्स धात न सोभा सुमार।
चूड़ जोत जो करत है, आकास न माए झलकार।।८६।।
नवरंग रतन चूड़ के, जुदी जुदी चूड़ी झलकत।
जोत सों जोत लरत है, सोभा अर्स कहूं क्यों इत।।८७।।
अतंत जोत इन धात में, इन नंग में जोत अतंत।
अतंत जोत रंग रेसम, तीनों नरमाई एक सिफत।।८८।।
कंचन जड़ित जो कन्कनी, माहें बाजत झनझनकार।
बेल फूल नकस जड़े, झलकत चूड़ किनार।।८९।।
निरमल पोहोंची नवघरी, पांच पांच दोऊ के नंग।
अर्स रसायन में जड़े, करत मिनो मिने जंग।।९०।।
हथेली लीकें क्यों कहूं, नरम हाथ उज्जल।
रंग पोहोंचे का क्यों कहूं, इत जुबां ना सके चल।।९१।।
पांच अंगुरियां पतली, जुदी जुदी पांचों जिनस।
अर्स अंग की क्यों कहूं, उज्जल लाल रंग रस।।९२।।
आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी।
एक कंचन एक आरसी, सोभित दसों अंगुरी।।९३।।
मानिक मोती लसनिएं, पाच पांने पुखराज।
गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज।।९४।।

अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जड़ित अति सार।
ए जो दरपन माहें देखत, अंबर न माए झलकार।।९५।।

नख निमूना देऊं हीरों का, सो मैं दिया न जाए।
एक नख जरे की जोत तले, कई सूरज कोट ढंपाए।।९६।।

अब कहूं चरन कमल की, जो अर्स रूहों के जीवन।
बसत हमेसा चरन तले, जो अरवाह अर्स के तन।।९७।।

चरन तली अति कोमल, रंग लाल लांके दोए।
मिहीं रेखा माहें कई विध, ए बरनन कैसे होए।। ९८।।

ए जो सलूकी चरन की, निपट सोभा सुन्दर।
जो कोई अरवा अर्स की, चुभ रेहेत हैड़े अन्दर।।९९।।

कोई नाहीं इनका निमूना, पोहोंचे अति सोभित।
टांकन घूंटी काड़े एड़ियां, पांउं तली अति झलकत।।१००।।

ए छब फब सब देख के, इन चरन तले बसत।
ए सुख अर्स रूहें जानहीं, जिनकी ए निसबत।।१०१।।

चारों जोड़े चरन के, झांझर घूंघर कड़ी।
कांबिए नंग अर्स के, जानों के चारों जोड़े जड़ी।।१०२।।

नंग नीले पीले झांझरी, और मोती मानिक पांने जरी।
निरमल नाके कंचन, रंग लाल लिए घूंघरी।।१०३।।

गांठे वाले रसायन सों, अर्स के पांचों नंग।
घूंघरी नाकों बीच पीपर, फुमक करत जवेरों जंग।।१०४।।

हीरे लसनिएं हेम में, कड़ी जोत झलकत।
नीलवी कुन्दन कांबिए, जानों जोत एही अतंत।।१०५।।

बोलत बानी माधुरी, चलत होत रनकार।
खुसबोए तेज नरमाई, जोत को नाहीं पार।।१०६।।
अंगुरिएं अनवट बिछिया, पांने मानिक मोती सार।
स्वर मीठे बाजत चलते, करत हैं ठमकार।।१०७।।
नख अंगूठे अंगुरियां, अंबर न माए झलकार।
ढांपत कोटक सूरज, और सीतलता सुखकार।।१०८।।
एक नख के तेज सों, ढांपत कई कोट सूर।
जो कहूं कोटान कोटक, तो न आवे एक नख के नूर।।१०९।।
कोई भांत तरह जो अर्स की, पेट पांसे उर अंग सब।
हाथ पांउं कंठ मुख की, किन बिध कहूं ए छब।।११०।।
कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खभे।
हाथ पांउं पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे।।१११।।
मैं सोभा बरनों इन जुबां, ले मसाला इत का।
सो क्यों पोहोंचे इन सांई को, जो बीच अर्स बका।।११२।।
बीड़ी सोभित मुख में, मोरत लाल तंबोल।
सोभा इन सूरत की, नहीं पटंतर तौल।।११३।।
सुच्छम वय उनमद अंगे, सोभा लेत किसोर।
बका वय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर।।११४।।
नाम लेत इन सरूप को, सुपन देह उड़ जाए।
जोलों रूह ना इस्क, तोलों केहेत बनाए।।११५।।
कोटान कोट बेर इन मुख पर, निरख निरख बलि जाऊँ।
ए सुख कहूं मैं तिन आगे, अपनी रूह अर्स की पाऊँ।।११६।।

मुख छबि अति बिराजत, सोभित सब सिनगार।
देख अंगूठे आरसी, भूखन करत झलकार।।११७।।
भौं भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान।
हाथ पांउं उर कण्ठ हँसें, सब नाचत मिलन सुभान।।११८।।
तेज जोत प्रकास में, सोभा सुंदरता अनेक।
कहा कहूं मुखारबिंद की, नेक नेक से नेक।।११९।।
श्रवन कण्ठ हाथ पांउं के, भूखन सोभित अपार।
एक भूखन नकस कई रंग, रूह कहा करे दिल विचार।।१२०।।
नेक सिनगार कह्या इन जुबां, क्यों बरनवाए सुख ए।
ए सोभा ना आवे सब्द में, नेक कह्या वास्ते रूहों के।।१२१।।
मीठी जुबां स्वर बान मुख, बोलत लिए अति प्रेम।
पिउ सों बातें मुख हंसें, लिए करें मरजादा नेम।।१२२।।
सामी सैन देत सुख चैन की, उतपन अंग अतंत।
कोमल हिरदे अति विचार, क्यों कहूं नरमाई सिफत।।१२३।।
चातुरी गति की क्यों कहूं, सब बोले चाले सुध होत।
अव्वल इस्क सब खूबियां, हक के अंग की जोत।।१२४।।
मुख मीठी अति रसना, चुभ रेहेत रूह के माहें।
सो जानें रूहें अर्स की, न आवे केहेनी में क्याहें।।१२५।।
क्यों कहूं गति चलन की, जो स्यामाजी पांउं भरत।
नाहीं निमूना इनका, जो गति स्यामा जी चलत।।१२६।।
बलि बलि जाऊं चाल गति की, भूखन तेज करे झलकार।
गिरदवाए मिलावा रूहन का, सब सोभा साज सिनगार।।१२७।।

सोभा बड़ी सब रूहों की, सब के वस्तर भूखन।
जोत न माए आकास में, यों घेर चली रोसन।।१२८।।
अर्स मिलावा ले चली, अपने संग सुभान।
किया चाह्या सब दिल का, आगूं आए लिए मेहेरबान।।१२९।।
ए सोभा जुगल किसोर की, चौथा सागर सुख।
जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख।।१३०।।
जुगल के सुख केते कहूं, जो देत खिलवत कर हेत।
सो सुख इन नेहेरन सों, धनी फेर फेर तोको देत।।१३१।।
ए बानी सब सुपन में, और सुपने में करी सिफत।
सो क्यों पोहोंचे सोभा जुगल को, सुपन कौन निसबत।।१३२।।
सब्द न पोहोंचे सुभान को, तो क्यों रहों चुप कर।
दिल कान जुबां ले चलत, हक तरफ बाएँ नजर।।१३३।।
एते दिन ढांपे रहे, किन कही ना हकीकत।
जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत।।१३४।।
ए द्वार दुनी में क्यों खोलिए, ए जो गैब हक खिलवत।
सो द्वार खोले मैं हुकमें, अर्स बका हक मारफत।।१३५।।
दुनियां से ढांपे रहे, अर्स बका एते दिन।
रेहेत अब भी ढांपिया, जो करे ना रूह रोसन।।१३६।।
ए खोले बड़ा सुख होत है, मेरी रूह और रूहन।
इनसे हैयाती पावहीं, चौदे तबक त्रैगुन।।१३७।।
कयामत सरत पोहोंचे बिना, तो ढांपे रहे एते दिन।
हकें आखिर अपने कौल पर, किए जाहेर आगूं रूहन।।१३८।।

ए जो कहे मैं सरूप, जुगल किसोर अनूप।
दई साहेदी महंमद रूहअल्ला, किए जाहेर अर्स सरूप।।१३९।।
एही लैलत-कदर की फजर, ऊग्या बका दिन रोसन।
हक खिलवत जाहेर करी, अर्स पोहोंचे हादी मोमिन।।१४०।।
महामत कहे अपनी रूह को, और अर्स रूहन।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन।।१४१।।
।।सागर।।प्रकरण।।६।।

श्री ठकुरानीजी का सिनगार दूसरा-मंगला चरन

बरनन करूं बड़ी रूह की, जो हक नूर का अंग।
रूहें नूर इन अंग के, जो हमेसा सब संग।।१।।
हक जात अंग अर्स का, क्यों कर बरनन होए।
इन सरूप को सुपन भोम का, सब्द न पोहोंचे कोए।।२।।
किन देख्या सुन्या न तरफ पाई, तो क्यों दुनियां सुन्या जाए।
जो अरवा होसी अर्स की, सो सुन के सुख पाए।।३।।
मेरी रूह चाहे वरनन करूं, होए ना बिना अर्स इलम।
वस्तर भूखन अर्स के, इत पोहोंचे ना सुपन का दम।।४।।
पेहेने उतारे इन जिमी, नाहीं अर्स में चल विचल।
इत नकल कोई है नहीं, अर्स वाहेदत सदा असल।।५।।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, मिटे न कबूं रोसन।
तिन सरूप को इन मुख, क्यों कर होए बरनन।।६।।

एक पेहेर दूजा उतारना, तब तो घट बढ़ होए।
जब जैसा जित चित्त चाहे, तब तित तैसा बनत सोए।।७।।
अर्स अरवा चाहे दिल में, सो होए माहें पल एक।
जिन अंग जैसा वस्तर, होए खिन में कई अनेक।।८।।
सुन्दर सरूप सोभा लिए, सिनगार वस्तर भूखन।
रस रंग छबि सलूकी, चाहे रूह के अन्तस्करन।।९।।
वस्तर भूखन अंग अर्स के, सो सबे हैं चेतन।
सब सुख देवें रूह को, तो क्यों न देवें नैन श्रवन।।१०।।
नया सिनगार साजत, तब तो नया पेहेन्या कह्या जात।
नया पुराना अर्स में नहीं, पर पोहोंचे न इतकी बात।।११।।
जो सिफत बड़ी चित्त लीजिए, बड़ी अकल सो जान।
फना बका को क्या कहें, ताथें पोहोंचत नहीं जुबान।।१२।।
तो भी रूह मेरी ना रहे, हक बरनन किया चाहे।
हक इलम आया मुझ पे, सो या बिन रह्यो न जाए।।१३।।
ना तो बैठ झूठी जिमी में, ए बका बरनन क्यों होए।
इलम हुकम खैंचे रूह को, अकल जुंबा कहे सोए।।१४।।
यासों रूह सुख पावत, अर्स रूहें पावें आराम।
कहूं सिखाई रूहअल्ला की, ले साहेदी अल्ला कलाम।।१५।।
हक इलम सिर लेय के, वरनन करूं हक जात।
रूह मेरी सुख पावहीं, हिरदे बसो दिन रात।।१६।।
मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स बसे जित हक।
निसबत मेहेर जोस हुकम, और इस्क इलम बेसक।।१७।।

ए बरकत हक अर्स में, तो दिल अर्स कह्या मोमिन।
तो बरनन होए अर्स का, जो यों दिल होए रोसन।।१८।।
बारीक बातें अर्स की, सो जानें अर्स के तन।
जीवत लेसी सो सुख, जिनका टूट्या अन्तस्करन।।१९।।
छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन।
बासा करो तिन पर, तुमसों निसबत अर्स तन।।२०।।
मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखो नरम कदम।
इतहीं सेज बिछाए देऊं, जुदे करो जिन दम।।२१।।
रूह छाती इनसे कोमल, तिनसे पाँउं कोमल।
इत सुख देऊँ मासूक को, सुख यों लेऊँ नेहेचल।।२२।।
मेरी रूह नैन की पुतली, बीच राखूं तिन तारन।
खिन एक न्यारी जिन करो, ए चरन बसें निस दिन।।२३।।
चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल।
निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊं बीच पल।।।२४।।
या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन।
इत रहे सेज्या निस दिन, धरो उज्जल दोऊ चरन ।।२५।।
मेरा दिल तुमारा अर्स है, माहें बहुबिध की मोहोलात।
कई सेज हिंडोले तखत, रूह नए नए रंगों बिछात।।२६।।
आसा पूरो सुख देओ, नए नए कराऊं सिनगार।
द्यो पूरी मस्ती ना बेहोसी, सुख लेऊं सब अंग समार।।२७।।
अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात।
खाना पीना सुख सिनगार, माहें सब न्यामत हक जात।।२८।।

सब गुझ तुमारे दिल का, जिन मेरा दिल किया रोसन।
जेता मता बीच अर्स के, सब आया दिल मोमिन।।२९।।
तो कह्या अर्स दिल मोमिन, हक बैठें उठें खेलाए।
सुख बका हक अर्स रूहें, सिफत क्यों कहे दिल जुबांए।।३०।।
पर दिल के जो अंग हैं, धनी अर्स तुमारा सोए।
तुमें देखें कहे बातें सुने, लेवे तुमारी बानी की खुसबोए।।३१।।
पिए तुमारी सुराही का, कई स्वाद फूल सराब।
ऐसी लेऊं मस्ती मेहेबूब की, ज्यों उड़ जावे ख्वाब।।३२।।
एक स्वाद दिल देखे तुमको, सुने तुमारी बानी की मिठास।
लेऊं खुसबोए बोलूं तुमसों, और क्यों कहूं दुलहा विलास।।३३।।
जेता सुख तुमारे अर्स में, सो सब हमारे दिल।
ए सुख रूह मेरी लेवहीं, जो दिए इन अर्स में मिल।।३४।।
रूह बरनन करे क्या होए, जोलों स्वाद न ले निसबत।
इस्क इलम जोस हुकम, ए सब मेहेरें पाइए न्यामत।।३५।।
दिल के अंगों बिना हक के, इत स्वाद लीजे क्यों कर।
देखे सुने बोले बिना, तो क्या अर्स नाम धरया धनी बिगर।।३६।।
जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात।
सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई जो रात।।३७।।
अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात।
सब न्यामतें इनमें, अर्स बका हक जात।।३८।।
पेहेले बरनन करूं सिर राखड़ी, पीछे बरनन करूं सब अंग।
अखंड सिनगार अर्स को, मेरी रूह हमेसा संग।।३९।।

।।मंगलाचरण सम्पूर्ण।।

सिर पर बनी जो राखड़ी, कहूं किन बिध सोभा ए।
आसमान जिमी के बीच में, एकै जोत खड़ी ले।।४०।।
गिरदवाए मानिक बने, बीच हीरे की जोत।
किनार ऊपर जो नीलवी, हुई जिमी अंबर उद्दोत।।४१।।
सेंथे भी सिर कांगरी, और सिर कांगरी पांन।
इन सिर सोभा क्यों कहूं, अलेखे अमान।।४२।।
माहें हारें खजूरे बूटियां, बीच फूल करत हैं जोत।
जुदे जुदे रंगों जवेर, ठौर ठौर रोसनी होत।।४३।।
लाल सेंथे जोत जवेर की, दोए पटली समारी सिर।
बनी नंगन की कांगरी, बल बल जाऊं फेर फेर।।४४।।
निलवट पर सर मोतिन की, ऊपर नीलवी बीच मानिक।
दोऊ तरफों तीनों सरें, तीनों बराबर माफक।।४५।।
इन तीनों पर कांगरी, बनी सेंथे बराबर।
पांन कटाव सेंथे पर, ए जुगत कहूं क्यों कर।।४६।।
मानिक मोती नीलवी, हेम हीरा पुखराज।
इन मुख सोभा क्यों कहूं, सिर खूबी रही बिराज।।४७।।
बीच फूल कटाव कई, राखड़ी के गिरदवाए।
ए जुगत बनी मूल लग, गूंथी नंग मोती बेनी बनाए।।४८।।
तीन नंग रंग गोफने, तिन एक एक में तीन रंग।
हीरा मानिक नीलवी, सोभित कंचन संग।।४९।।
तीनों गोफने घूंघरी, बेनी गूंथी नई जुगत।
बल बल जाऊं देख देख के, रूह होए नहीं तृपित।।५०।।

चारों बंध बेंनी तले, नीले पीले सोभित।
सोभे नरम बंध चोलीय के, खूबी साड़ी तले देखत।।५१।।
बेनी सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के।
सब देत देखाई साड़ी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए।।५२।।
लाल साड़ी कई नकस, माहें अनेक रंग के नंग।
मिहीं नकस न होवे गिनती, करें जवेर माहें जंग।।५३।।
सिर पर साड़ी सोभित, नीली पीली सेत किनार।
तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार।।५४।।
साड़ी कोर किनार पर, नंग कांगरी सोभित।
फूल बेल कई खजूरे, कई छेड़ों मिने झलकत।।५५।।
कई छापे बूटी नकस, नंग साड़ी बीच अपार।
कई नंग रंग झलके बीच में, सोभा न आवे माहें सुमार।।५६।।
मुख उज्जल गौर लालक लिए, छबि जाए न कही जुबांए।
देख देख सुख पावत, रूह हिरदे के माहें।।५७।।
मुख चौक नेत्र नासिका, ए छबि अंग अर्स के।
असलें सिफत न पोहोंचहीं, बुध माफक कही ए।।५८।।
मुखारबिन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए।
निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए।।५९।।
रंग नीले जोत पाच में, रूह इतथें क्यों निकसाए।
जो जोत देखूं मानिक, तो वाही में डूब जाए।।६०।।
करे आकास मोती उज्जल, जोत लटके लेवे तरंग।
आसिक रूह क्यों निकसे, क्योंए न छूटे लग्यो दिल रंग।।६१।।

श्रवनों सोहे पानड़ी, मानिक के रंग सोए।
और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए।।६२।।
मोती पांने पुखराज, लरें लटकत इन।
तरंग उठत आकास में, किरना करत रोसन।।६३।।
मुरली सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल।
निरख देखूं माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल।।६४।।
न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन।
उज्जल माहें लालक लिए, अतंत तेज तारन।।६५।।
भौं भृकुटी अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर।
केहेनी जुबां न आवत, कछू अर्स रूहें जानें जहूर।।६६।।
सोभा लेत हैं टेढ़ाई, नैना रंग रस भरे।
ए सोई रूहें जानहीं, जाकी छाती छेद परे।।६७।।
मीठे नैन रसीले निरखत, माहें सरम देत देखाए।
प्यार पूरा देखत, मेहेर भरे सुखदाए।।६८।।
अनेक गुन इन नैन में, गिनती न होवे ताए।
सुख देत अलेखे सब अंगों, नैना गुन क्यों ए ना गिनाए।।६९।।
सनकूल मुख अति सुंदर, गौर हरवटी सलूक।
लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक।।७०।।
मुख चौक अति सुन्दर, अति सुन्दर दोऊ गाल।
कही न जाए छबि सलूकी, निपट उज्जल माहें लाल।।७१।।
सात रंग माहें झलकत, लेहेरें लेत दोऊ झाल।
दोऊ फूल सोभित मुख झालके, जुबां क्या कहे इन मिसाल।।७२।।

फिरते मोती सोभित, माहें मानिक पाच कुंदन।
हीरे लसनिए नीलवी, सातों अम्बर करे रोसन।।७३।।
हेंम नंग नाम लेत हों, जानों के पेहेने बनाए।
ए बिध अर्स में है नहीं, जुबां सके न सिफत पोहोंचाए।।७४।।
कई रंग करे एक खिन में, नई नई जुगत देखाए।
सोहे हमेसा सब अंगों, पेहेने सोभित चित्त चाहे।।७५।।
चीज सबे अर्स चेतन, वस्तर या भूखन।
सुख लेत हक के अंग का, यों करत अति रोसन।।७६।।
हर नंग में सब रंग हैं, हर नंग में सब गुन।
सो नंग ले कछू न बनावत, सब दिल चाह्या होत रोसन।।७७।।
वस्तर भूखन केते कहूं, हेम रेसम रंग नंग।
ना पेहेन्या ना उतारिया, ए दिल चाह्या सोभित अंग।।७८।।
यों दिल चाह्या वस्तर, और दिल चाहया भूखन।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, आगूं रोसन होए माहें खिन।।७९।।
सुन्दर सरूप छबि देख के, फेर फेर जाऊं बल बल।
जो रूह होवे अर्स की, सो याही में जाए रल गल।।८०।।
नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर।
ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अर्स सहूर।।८१।।
बल बल जाऊं मुख सलूकी, बल बल जाऊं रंग छब।
बल बल जाऊं तेज जोत की, बल बल जाऊं अंग सब।।८२।।
स्याम चोली अंग गौर पर, सोभा लेत अतंत।
सोहे बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत।।८३।।

मोहोरी पेट और खड़पे, चोली नकस कटाव।
बाजू खभे उर ऊपर, मानो के फूल जड़ाव।।८४।।
पांच हार अति सुन्दर, हीरे मानिक मोती लसन।
नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचों करें रोसन।।८५।।
इन नंगों जोत तब पाइए, जब नजर दीजे आसमान।
सब जोत जंग करत हैं, कोई सके न काहू भान।।८६।।
जो नंग पेहेले देखिए, पीछे देखिए आकास।
तब याही की जोत बिना, और पाइए नहीं प्रकास।।८७।।
बीच हारों के दुगदुगी, पाच पांने हीरे नंग।
माहें लसनिए नीलवी, करें पांचों आपुस में जंग।।८८।।
पांचों हारों के ऊपर, दोरा देखत जड़ाव।
कई बेल फूल पात नकस, कह्यो न जाए कटाव।।८९।।
मोती मानिक पांने लसनिएं, पाच हेम पुखराज।
और भूखन कई सोभित, रह्या सब पर डोरा बिराज।।९०।।
कांठले ऊपर चोलीय के, बेल धरत अति जोत।
और भी मानिक मोती नीलवी, डोरा तिन पर करे उद्दोत।।९१।।
चार सरें इत चीड़की, हर सर में रंग दस।
सो रंग इन जुबां न आवहीं, रंग रूह चाहिल अर्स।।९२।।
कण्ठ-सरी इन ऊपर, रही कण्ठ को मिल।
न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल।।९३।।
नाम नंगों का लेत हों, केहेत हों जड़ाव जुबांए।
सब्दातीत तो कहावत, जो सिफत इत पोहोंचत नाहें।।९४।।

दोऊं बाजू बन्ध बिराजत, तामें केहेत जड़ाव।
माहें रंग नंग कई आवत, ए जड़ाव कह्या इन भाव।।९५।।
जो सोभा बाजू-बन्ध में, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए।
मैं कहूं इन दिल माफक, वह पेहेनत हैं चित्त चाहे।।९६।।
स्याम सेत लाल नीलवी, बाजू-बंध और फुमक।
तिन फुन्दन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत।।९७।।
मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे झन बाजत।
नंग कटाव ए कांगरी, चूड़ पर जोत अतन्त।।९८।।
चूड़ कोनी काड़े लग, चूड़ी चूड़ी हर नंग।
नंग नंग कई रंग उठें, तिन रंग रंग में कई तरंग।।९९।।
इन बिध के रंग इन जुबां, क्यों कर आवे सुमार।
न आवे सुमार रंग को, ना कछू जोत को पार।।१००।।
चूड़ आगूं डोरे दो सोभित, और कंकनी सोभे ऊपर।
दोऊ तरफों तेज जोत के, कंकनी बोलत मीठे स्वर।।१०१।।
डोरे कंचन रंग के, तिन आगूं नवघरी।
नव रंग नवघरी मिने, रही आकास जोत भरी।।१०२।।
पोहोंचे हथेली हाथ के, अतन्त रंग उज्जल।
बलि जाऊं छबि लीकों पर, निपट अति कोमल।।१०३।।
दोऊ हाथ की अंगुरी, पतलियां कोमल।
चरन न छूटे आसिक से, इतथें न निकसे दिल।।१०४।।
पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छबि अंगुरी।
दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुन्दरी।।१०५।।

पाच पांने कंचन के, नीलवी और हीरे।
लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखरे।।१०६।।
दरपन रंग दोऊ अंगूठी, और नंगों के दरपन।
कर सिनगार तामें देखत, नख सिख लग होत रोसन।।१०७।।
आगूं इन नख जोत के, होवें सूर कई कोट।
सो सूर न आवे नजरों, एक नख अनी की ओट।।१०८।।
ए झूठ निमूना इत का, हक को दिया न जाए।
चुप किए भी ना बने, केहे केहे रूह पछताए।।१०९।।
नीली अतलस चरनियां, कई बेल कटाव नकस।
चीन किनारे जो देखों, जानों एक पे और सरस।।११०।।
माहें बेल फूल कई खजूरे, नंगै के वस्तर।
नरम सखत जो दिल चाहे, जोत सुगंध सब पर।।१११।।
नव रंग इन नाड़ी मिने, ताना बाना सब रंग।
जानों बने जवेरन के, नकस रेसम या रंग।।११२।।
अचरज अदभुत देखत, वस्तर या भूखन।
नरम खूबी खुसबोए, भरया आसमान में रोसन।।११३।।
अर्स में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन।
जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सौ बेर होए मिने खिन।।११४।।
जैसा सुख दिल चाहे, वस्तर भूखन तैसे देत।
सब गुन अर्स चीज में, सब सुख इस्क समेत।।११५।।
ए चरन अंग अर्स के, सब्द न पोहोंचे इत।
लाल उज्जल रंग सलूकी, मुख कही न जाए सिफत।।११६।।

मैं कहूं सिफत सलूकी, पर केहे न सकों क्योंए कर।
पूरा एक अंग केहे ना सकों, जो निकस जाए उमर।।११७।।
जो कदी कहूं नरमाई की, और लीकों सिफत।
आए जाए आरबल, सब्द न इत पोहोंचत।।११८।।
जो कहूं खूबी रंग की, जोत कहूं लाल उज्जल।
ए क्यों आवे सब्द में, जो कदम बका नेहेचल।।११९।।
रंग उज्जल नरमाई क्यों कहूं, और चरन की खुसबोए।
ए जुबां अर्स चरन की, क्यों कर बरनन होए।।१२०।।
फना टाकन घूटियां, और काड़े अति कोमल।
रंग सोभा सलूकी छोड़के, आगूं आसिक न सके चल।।१२१।।
अब कहूं भूखन चरन के, कांबी कड़ली घूंघरी।
झलके नंग जुदे जुदे, इन पर झन बाजे झांझरी।।१२२।।
एक हीरे की झांझरी, दिल रूचती रंग अनेक।
नकस कटाव बूटी ले, ए किन विध कहूं विवेक।।१२३।।
पांच नंग की घूंघरी, दिल रूचती बोलत।
दिल चाहे रंग देखावत, दिल चाही सोभित।।१२४।।
कई रंग कड़ी में देखत, जानों के हेम नंग जड़ित।
सो सोभित सब दिल चाहे, नित नए रूप धरत।।१२५।।
कई बेल कड़ी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव।
मानो हेम मिलाए के, कियो सो मिहीं जड़ाव।।१२६।।
या विध कांबी सनंध, या नंग या धात।
जैसा दिल में आवत, तैसा तित सोभात।।१२७।।

घड़े जड़े ना किन किए, दिल चाह्या सब होत।
दिल चाह्या मीठा बोलत, दिल चाही धरे जोत।।१२८।।
कहूं अनवट पाच के, माहें करत आंभलिया तेज।
निरखत नखसिख सिनगार, झलकत रेजा रेज।।१२९।।
और अंगुरियों बिछिए, करे स्वर रसाल।
हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल।।१३०।।
माहें और रंग हैं कई, कई नकस करें चित्र।
सोभा पर बलि जाइए, देख देख एह विचित्र।।१३१।।
जो सलूकी फनन की, और अंगुरी फनों तली।
ए बका बरनन कबूं न हुई, गई अव्वल से दुनी चली।।१३२।।
सलूकी नखन की, और छबि अंगुरियों।
खूबी सिफत चरन की, कही न जाए जुबां सों।।१३३।।
जोत धरत आकास रोसनी, क्यों कर कहूं नख जोत।
मानों सूरज अर्स के, कोटक हुए उद्दोत।।१३४।।
दोऊ अंगूठे चरन के, और खूबी अंगुरियों।
सोभा सुन्दर फनन की, आवत ना सिफत मों।।१३५।।
मिहीं लीकां देखूं लांक में, इतहीं करूं विश्राम।
बल बल जाऊं देख देख के, एही रूह मोमिनों ताम।।१३६।।
चरन तली लांक एड़ियां, उज्जल रंग अति लाल।
केहेते छबि रंग चरन की, अजूं लगत न हैड़े भाल।।१३७।।
दिल चाही खूबी सलूकी, दिल चाही नरम छब।
दिल चाह्या रंग खुसबोए, रही दिल चाही अंग फब।।१३८।।

यों दिल चाहे वस्तर, और दिल चाहे भूखन।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, सो आगूंहीं बन्यो रोसन।।१३९।।

जिन अंग जैसा भूखन, दिल चाह्या सब होत।
खिन में दिल और चाहत, आगूं तैसी करे जोत।।१४०।।

खिन में सिनगार बदले, बिना उतारे बदलत।
रंग तित भूखन नए नए, रंग जो दिल चाहत।।१४१।।

दिल चाही सोभा धरे, दिल चाही खुसबोए।
दिल चाही करे नरमाई, जोत करे जैसी दिल होए।।१४२।।

रूहें बसत इन कदमों तले, जासों पाइए पेहेचान।
सब रूहें नूर इन अंग को, ए नूर अंग रेहेमान।।१४३।।

ए जो अरवाहें अर्स की, पड़ी रहें तले कदम।
खान पान इनों इतहीं, रूहें रहें तले कदम।।१४४।।

याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल।
हक अर्स मोमिन दिल, तिन निमख न पड़े भूल।।१४५।।

हक कदम हक अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल।
छूटे ना अर्स कदम, जो याही की होए मिसल।।१४६।।

ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए।।१४७।।

भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन।।१४८।।

महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन।
या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन।।१४९।।

।।सागर।।प्रकरण।।९।।

।। श्री श्यामा जी का शृंगार सम्पूर्ण ।।

सुन्दरसाथ को शृंगार

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल।।१।।

जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार।
सागर भर्या सब एक रस, माहें कई बिध तरंग अपार।।२।।

निलवट बेना चांदलो, हरी गरदन मुख मोर।
नैन चोंच सिर सोभित, बीच बने तरफ दोऊ जोर।।३।।

निरमल मोती नासिका, कई बिध नथ बेसर।
जोत जोर नंग मिहीं नकस, ए बरनन होए क्यों कर।।४।।

सोभित हैं सबन के, कानन झलकत झाल।
माहें मोती नंग निरमल, झांई उठत माहें गाल।।५।।

चार चार हार सबन के, उर पर अति झलकत।
कण्ठ सरी कण्ठन में, सबन के सोभित।।६।।

एक हार हीरन का, दूजा हेम कंचन।
तीजो हार मानिक को, चौथा हार मोतियन।।७।।

कहूं डोरे कहूं बादले, कहूं खजूरे हार।
कहा कहूं जवेर अर्स के, झलकारों झलकार।।८।।

हाथ चूड़ी नंग नवघरी, अंगूठिएं झलकत नंग।
उज्जल लाल हथेलियां, पोहोंचों पोहोंची नंग कई रंग ।।९ ।।
जैसे सरूप अर्स के, भूखन तिन माफक।
याही रवेस वस्तर जवेर के, ए अंग बड़ी रूह हक ।।१० ।।
जैसी सोभा भूखन की, कहूं तैसी सोभा वस्तर।
कछू पाइए सोभा सरूप की, जो खोले रूह नजर ।।११ ।।
वस्तरों के नंग क्यों कहूं, कई जवेरों जोत।
सबे भई एक रोसनी, जानों गंज अंबार उद्दोत ।।१२ ।।
अतन्त नंग अर्स के, और नरम जवेर अतन्त।
अतन्त अर्स रसायन, खूबी खुसबोए अति बेहेकत ।।१३ ।।
कहूं केते नाम जवेरन के, रसायन नाम अनेक।
कई नाम भूखन एक अंग, सो कहां लग कहूं विवेक ।।१४ ।।
सूरत सकल साथ की, मुख कोमल सुन्दर गौर।
ए छबि हिरदे तो फबे, जो होवे अर्स सहूर ।।१५ ।।
रूहें सुन्दर सनकूल मुख, नहीं सोभा को पार।
घट बढ़ कोई न इनमें, एक रस सब नार ।।१६ ।।
कई रंग सोभित साड़ियां, रंग रंग में कई नंग सार।
भिन्न भिन्न झलके एक जोत, कई किरनें उठें बेसुमार ।।१७ ।।
हर एक के सिनगार, तिन सिनगार सिनगार कई नंग।
नंग नंग में कई रंग हैं, तिन रंग रंग कई तरंग ।।१८ ।।
तरंग तरंग कई किरनें, कई रंग नंग किरनें न समाए।
यों जोत सागर सरूपों को, रह्यो तेज पुन्ज जमाए ।।१९ ।।

अब इनके अंग की क्यों कहूं, ठौर नहीं बोलन।
क्यों कहूं सोभा अखण्ड की, बीच बैठ के अंग सुपन।।२०।।
रंग तरंग किरने कही, कही तेज जोत जुबां इन।
प्रकास उद्दोत सब सब्द में, जो कह्या नूर रोसन।।२१।।
ज्यों ज्यों बैठियां लग लग, त्यों त्यों अरस-परस सुख देत।
बीच कछू ना रेहे सके, यों खैंच खैंच ढिग लेत।।२२।।
जानों सागर सब एक जोत में, नूर रोसन भर पूरन।
झांई झलके तेज दरियाव ज्यों, कई उठे तरंग भिन्न भिन्न।।२३।।
ऊपर तले की रोसनी, और वस्तर भूखन की जोत।
और जोत सरूपों की क्यों कहूं, ए जो ठौर ठौर उद्दोत।।२४।।
ऊपर तले थम्भ दिवालों, सब जोत रही भराए।
बीच समूह जोत साथ की, बनी जुगल जोत बीच ताए।।२५।।
ए जोत में सोभा सुन्दर, और सरूपों की सुखदाए।
देख देख के देखिए, ज्यों नख सिख रहे भराए।।२६।।
ज्यों दरिया तेज जोत का, त्यों सब दिल दरिया एक।
एक रस एक रोसनी, जुबा क्यों कर कहे विवेक।।२७।।
जोत उपली कही जुबांन सों, पर रेहेस चरित्र सुख चैन।
सुख परआतम तब पाइए, जब खुलें अन्तर के नैन।।२८।।
एक रस होइए इस्क सों, चलें प्रेम रस पूर।
फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामाजी हजूर।।२९।।
क्यों कहूं सुख सबन के, सब अंगों के एक चित्त।
अरस-परस सुख लेवहीं, अंग नए नए उपजत।।३०।।

साथ समूह की क्यों कहूं, जाको इस्कै में आराम।
अरस-परस सब एक रस, पिउ विलसत प्रेम काम।।३१।।

इन धाम के जो धनी, तिन अंगों का सनेह।
हेत चित्त आनन्द इनका, क्यों कहूं जुबां इन देह।।३२।।

सुख अन्तर अन्तस्करन के, आवें नहीं जुबांन।
प्रेम प्रीत रीत अन्तर की, सों क्यों कर होए बयान।।३३।।

सत सरूप जो धाम के, तिनके अन्तस्करन।
इस्क तिनके अंग का, सो कछुक करूं बरनन।।३४।।

नख सिख अंग इस्क के, इस्कै संधों संध।
रोम रोम सब इस्क, क्यों कर कहूं सनंध।।३५।।

अन्तस्करन इस्क के, इस्कै चित्त चितवन।
बातां करें इस्क की, कछू देखें ना इस्क बिन।।३६।।

तत्व गुन अंग इंद्रियां, सब इस्कै के भीगल।
पख सारे इस्क के, सब इस्क रहे हिल मिल।।३७।।

ए सुख संग सरूप के, जो अन्तर अंदर इस्क।
आतम अन्तस्करन विचारिए, तो कछू बोए आवे रंचक।।३८।।

जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जाग्रत।
अंग आया होए इस्क, तो कछू बोए आवे इत।।३९।।

पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन।
तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन।।४०।।

आतम अन्तस्करन विचारिए, अपने अनुभव का जो सुख।
बढ़त बढ़त प्रेम आवहीं, परआतम सनमुख।।४१।।

इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन।
नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन।।४२।।

तब प्रेम जो उपजे, रस परआतम पोहोंचाए।
तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए।।४३।।

अन्तस्करन आतम के, जब ए रह्यो समाए।
तब आतम परआतम के, रहे न कछू अन्तराए।।४४।।

परआतम के अन्तस्करन, पेहेले उपजत है जे।
पीछे इन आतम के, आवत है सुख ए।।४५।।

ताथें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल।
सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल।।४६।।

सोभा मुखारबिन्द की, क्यों कर कहूं तेज जोत।
रस भर्‍यो रसीलो दुलहा, जामें नित नई कला उद्दोत।।४७।।

कमी जो कछुए होवहीं, तो कहिए कला अधिकाए।
ए तो बढ़े तरंग रंग रस के, यों प्रेमे देत देखाए।।४८।।

बल बल सोभा सरूप की, बल बल वस्तर भूखन।
बल बल मीठी मुसकनी, बल बल जाऊं खिन खिन।।४९।।

बल बल बंकी पाग के, बल बल बंके नैन।
बल बल बंके मरोरत, बल बल चातुरी चैन।।५०।।

बल बल तिरछी चितवनी, बल बल तिरछी चाल।
बल बल तिरछे वचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल।।५१।।

बल बल छबीली छब पर, दंत तंबोल मुख लाल।
बल बल आठों जाम की, बल बल रंग रसाल।।५२।।

बल बल मीठे मुख के, अंग अंग अमी रस लेत।
कई बिध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत।।५३।।
बल बल जाऊं चरन के, बल बल हस्त कमल।
बल बल नख सिख सब अंगों, बल बल जाऊं पल पल।।५४।।
बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत।
महामत बल बल सबों अंगों, फेर फेर वारने लेत।।५५।।

।।सागर।।प्रकरण।।११।।